ଓଡ଼ିଶା ରାଜ୍ୟ ମୁକ୍ତ ବିଶ୍ୱବିଦ୍ୟାଳୟ, ସମ୍ବଲପୁର
Odisha State Open University (OSOU)
Sambalpur

खंड

6

अनुवाद का प्रायोगिक पक्ष

इकाई–01 : अनुवाद व्यवहार एवं भाषा–प्रयुक्ति 03

इकाई–02 : प्रशासनिक सामग्री का अनुवाद 20

इकाई–03 : सृजनात्मक सामग्री का अनुवाद 48

इकाई–04 : विधिक सामग्री का अनुवाद 69

इकाई–05 : बैंकिंग सामग्री का अनुवाद 83

इकाई–06 : वैज्ञानिक एवं तकनीकी सामग्री का अनुवाद 105

पाठ्यक्रम अभिकल्प समिति

डॉ. अजय कुमार पट्टनायक
प्रोफेसर एवं भूतपूर्व विभागाध्यक्ष
रेवेन्शा विश्वविद्यालय, कटक

डॉ. कमल प्रभा कपानी
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
बरगढ़ महाविद्यालय, बरगढ़

डॉ. सदन कुमार पॉल
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
गंगाधर मेहेर विश्वविद्यालय, सम्बलपुर

डॉ. मुरारी लाल शर्मा
अध्यक्ष, स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग
सम्बलपुर विश्वविद्यालय, सम्बलपुर

डॉ. जी. एम. खान
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
बी.जे.बी स्वयंशासित महाविद्यालय
भुबनेश्वर

डॉ. संजय सिंह
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
राजेन्द्र स्वयंशासित महाविद्यालय
बलांगीर

डॉ. जयन्त कर शर्मा
कुलसचिव
ओड़िशा राज्य मुक्त विश्वविद्यालय, सम्बलपुर

प्रस्तुतकर्ता

डॉ. छबिल कुमार मेहेर
क्वा. नं. : सी–100, विश्वविद्यालय परिसर
डॉक्टर हरीसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय,
सागर, मध्यप्रदेश–470003,
मो. 08989154228, दूरभाष : 07582–264128
ई.–मेल : meherchhabilakumar@gmail.com

पाठ्यक्रम संयोजन, सम्पादन एवं सामग्री उत्पादन

डॉ. जयन्त कर शर्मा
कुलसचिव
ओड़िशा राज्य मुक्त विश्वविद्यालय, सम्बलपुर

CC BY SA

जनवरी, 2017
ओड़िशा राज्य मुक्त विश्वविद्यालय

मुद्रण : *श्रीमंदिर पब्लिकेशन्स, शहीद नगर, भुवनेश्वर*

इकाई–1 : अनुवाद व्यवहार एवं भाषा–प्रयुक्ति

रूपरेखा

1. उद्देश्य
2. प्रस्तावना
3. अनुवाद व्यवहार
    - 3.1 अनुवाद और उसका व्यवहार–क्षेत्र
    - 3.2 अनुवाद व्यवहार
4. भाषा–प्रयुक्ति : संकल्पना एवं विशिष्टताएँ
    - 4.1 भाषा–प्रयुक्ति की संकल्पना
    - 4.2 भाषा–प्रयुक्ति की विशिष्टताएँ
5. प्रयोजनमूलक भाषा–प्रयुक्तियाँ एवं अनुवाद
    - 5.1 प्रशासनिक प्रयुक्ति एवं अनुवाद
    - 5.2 साहित्यिक प्रयुक्ति एवं अनुवाद
    - 5.3 विधिक प्रयुक्ति एवं अनुवाद
    - 5.4 वाणिज्यिक प्रयुक्ति एवं अनुवाद
    - 5.5 वैज्ञानिक–तकनीकी प्रयुक्ति एवं अनुवाद
    - 5.6 विज्ञापनी प्रयुक्ति एवं अनुवाद
6. बोध प्रश्न
7. सारांश
8. बोध प्रश्नों के उत्तर

1. उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- अनुवाद व्यवहार का सामान्य परिचय पा सकेंगे;
- भाषा–प्रयुक्ति की संकल्पना एवं उसकी विशिष्टताओं से परिचित होंगे;
- विभिन्न कार्यक्षेत्रों के आधार पर उनकी भाषिक प्रयुक्तियों को समझ सकेंगे;
- अनुवाद की विशिष्टता आधारित प्रशासनिक, साहित्यिक, वैज्ञानिक –तकनीकी, विधिक, वाणिज्यिक एवं विज्ञापनी भाषिक प्रयुक्ति का परिचय पा सकेंगे;

2. प्रस्तावना

'अनुवाद का सैद्धान्तिक स्वरूप', खंड–5 में आप अनुवाद के अर्थ, परिभाषा के अलावा अनुवाद–प्रक्रिया, अनुवाद के प्रकार, अनुवाद की प्रकृति, अनुवाद के क्षेत्र आदि से परिचित हो चुके हैं। प्रस्तुत खंड–6 'अनुवाद का प्रायोगिक पक्ष' पूर्णतया अनुवाद अभ्यास पर केन्द्रित है। प्रस्तुत अध्याय में उन विशिष्ट क्षेत्रों में प्रयुक्त अलग–अलग भाषिक विशिष्टताओं का परिचय पा सकेंगे जहाँ अनुवाद का बहुमुखी–बहुतायत प्रयोग होता है।

3. अनुवाद व्यवहार

3.1 अनुवाद और उसका व्यवहार क्षेत्र

'अनुवाद' शब्द हमारे लिए कोई नया शब्द नहीं है। विभिन्न भाषायी मंच पर, साहित्यिक पत्रिकाओं में, अखबारों में तथा रोजमर्रा के जीवन में हमें अक्सर 'अनुवाद' शब्द का प्रयोग देखने–सुनने को मिलता है। साधारणतः एक भाषा–पाठ में निहित अर्थ या संदेश को दूसरे भाषा–पाठ में यथावत् व्यक्त करना अर्थात् एक भाषा में कही गई बात को दूसरी भाषा में कहना अनुवाद है। परन्तु यह कार्य उतना आसान नहीं, जितना कहने या सुनने में जान पड़ रहा है। दूसरा, अनुवाद सिद्धान्त की चर्चा करना और व्यावहारिक अनुवाद करना–दो भिन्न प्रदेशों से गुजरने जैसा है, फिर भी इसमें कोई दो राय नहीं कि अनुवाद के सिद्धान्त हमें अनुवाद कर्म की जटिलताओं से परिचित कराते हैं। फिर, किसी भी भाषा के साहित्य में और ज्ञान–विज्ञान के क्षेत्र में जितना महत्त्व मूल लेखन का है, उससे कम महत्त्व अनुवाद का नहीं है। लेकिन सहज और सम्प्रेषणीय अनुवाद मूल लेखन से भी कठिन काम है। भारत जैसे बहुभाषी देश के लिए अनुवाद की समस्या और भी महत्त्वपूर्ण है। इसकी जटिलता को समझना अपने आप में बहुत बड़ी समस्या है।

आज की दुनिया में अनुवाद का क्षेत्र बहुत व्यापक हो गया है। शायद ही कोई क्षेत्र बचा हो जिसमें अनुवाद की उपादेयता को सिद्ध न किया जा सके। इसलिए यह कहना अतिशयोक्ति न होगी कि आधुनिक युग के जितने भी क्षेत्र हैं सबके सब अनुवाद के भी क्षेत्र हैं, चाहे न्यायालय हो या कार्यालय, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी हो या शिक्षा, संचार हो या पत्रकारिता, साहित्य हो या सांस्कृतिक सम्बन्ध। इन सभी क्षेत्रों में अनुवाद की महत्ता एवं उपादेयता को सहज ही देखा–परखा जा सकता है।

3.2 अनुवाद व्यवहार

अनुवाद एक ऐसी तकनीक है जिसका आविष्कार मनुष्य ने बहुभाषिक स्थिति की विडम्बनाओं से बचने के लिए किया था। लक्ष्य–भाषा के भाषा–वैभव को ही नहीं अपितु उसकी उसी तरह की व्यंजना को भी दूसरी भाषा में यथावत् रूपान्तरित करना अनुवाद का लक्ष्य होता है। अंग्रेजी के प्रसिद्ध भाषाविद् जे.सी. कैटफोर्ड के अनुसार समानार्थक(equivalent) मूल–पाठ सामग्री का स्थानापन्न ही 'अनुवाद' है। इस प्रकार अनुवाद में तीन बातों का ध्यान रखना आवश्यक है : 1. पाठ–सामग्री 2. समतुल्य या समानार्थक 3. पुनर्स्थापन। इसी के आधार पर अनुवाद के क्रमशः निम्नलिखित तीन रूप उभरते हैं :

1. शब्दानुवाद
2. भावानुवाद और
3. पर्याय एवं प्रकृति के आधार पर सार्थक अनुवाद

उदाहरण के लिए अंग्रेजी का एक छोटा वाक्य 'There is no room in the car' को लेते हैं। इस वाक्य का शब्दानुवाद, भावानुवाद और सार्थक अनुवाद निम्नानुसार होगा :

1. शब्दानुवाद : *'कार में कोई कमरा नहीं है।'*
2. भावानुवाद : *'कार में कोई स्थान नहीं है।'*
3. सार्थक अनुवाद : *'कार में कोई जगह ही नहीं है।'*

कहने का आशय है कि अनुवाद ऐसा होना चाहिए कि वह यांत्रिक या निर्जिव न लगे। उसमें मूल–सा प्रवाह तभी आएगा जब वह लक्ष्य–भाषा की प्रकृति एवं संस्कृति के अनुसार होगा। उदाहरण के लिए अंग्रेजी का निम्नलिखित वाक्य देखें :

The boy, who does not understand that his future depends on hard studies, is a fool.'

यदि हिन्दी में इसका अनुवाद इस प्रकार किया जाता है– *'वह लड़का, जो यह नहीं समझता कि उसका भविष्य* ***सख्त*** *अध्ययन पर निर्भर करता है, मूर्ख है।'* तो यह वाक्य विन्यास हिन्दी भाषा के वाक्य विन्यास के अनुरूप नहीं होगा, hard के लिए यहाँ 'सख्त' शब्द भी उपयुक्त समानार्थी नहीं लगता। यदि उपर्युक्त अंग्रेजी वाक्य का अनुवाद इस प्रकार किया जाए : *'वह लड़का मूर्ख है जो यह नहीं समझता कि उसका भविष्य कठोर अध्ययन पर निर्भर है।'* तो अनुवाद का वाक्य–विन्यास हिन्दी भाषा की प्रकृति के अनुरूप होगा और इसी में अनुवाद की सार्थकता निहित है।

उपर्युक्त चर्चा को ध्यान में रखकर अब हम निम्नलिखित तीन अनुच्छेदों का अनुवाद करते हैं :

1–मूल अंग्रेजी :

The progress of the nation depends on her children alive. They form the spinal cord of the nation. Today's children are tomorrow's parents. So they should be well cared after, and proper arrangement of their education made.

Right from the childhood, desires for doing various works spring in their hearts. Some aspire to be painters; some lawyers or doctors. But their parents smother their intention and mould them into their own form. In future such children fail to do any welfare to the nation and society.

In our country some superstitions have been continuing for ages, the bonds of which are still not broken. This thing is not seen in other countries of the world. In those countries the initial insticts of children are welcome. This is the reason that they are on the path of progress today.

हिन्दी अनुवाद :

देश की उन्नति बालकों पर निर्भर है। वे ही राष्ट्र के मेरुदण्ड हैं। आज के बच्चे कल के माता–पिता कहलायेंगे। अतएव आवश्यक है कि इनकी देखरेख भलीभाँति की जाय और इनकी शिक्षा का समुचित प्रबन्ध हो।

बाल्यकाल से ही बच्चों के मन में तरह–तरह के काम करने की इच्छा उठती है। कोई चित्रकार बनना चाहता है और कोई वकील या डॉक्टर। परन्तु उनके माता–पिता उनकी इच्छाओं की हत्या कर उन्हें अपने साँचे में ढाल देते हैं। ऐसे बालकों से आगे चलकर राष्ट्र और समाज का कल्याण नहीं हो पाता।

हमारे देश में कुछ रीतियाँ युगों से चली आ रही हैं जिनकी कड़ियाँ अभी टूट नहीं पायी हैं । संसार के अन्य देशों में ऐसी बात नहीं पायी जाती। उन देशों में बच्चों की प्रारम्भिक प्रवृत्तियों का स्वागत होता है। उनकी उत्सुकता कुचली नहीं जाती । यही कारण है कि वे आज प्रगति के पथ पर हैं।

2–मूल हिन्दी :

अपनी मातृभाषा को निकृष्ट समझना हमारी भूल है। हमें संसार के साथ रहना और चलना है। अतएव संसार की अन्यान्य भाषाओं को सीखने की जरूरत है। पर अपनी मातृभाषा के महत्त्व का खयाल रखना भी बहुत जरूरी है। हम अंग्रेजी भाषा और साहित्य के विद्वान हो सकते हैं, पर शेक्सपियर या मिल्टन कदापि नहीं हो सकते। एक अँगरेज हिन्दी भाषा और साहित्य का विद्वान हो सकता है पर वह सूर या तुलसी कभी नहीं हो सकता। अच्छी किताबें हम अपनी मातृभाषा में ही लिख सकते हैं। हमारे स्कूलों में भी अब भारतीय भाषाओं पर पूरा ध्यान दिया जा रहा है। अपनी मातृभाषा का अच्छा ज्ञान प्राप्त करना हमारा कर्त्तव्य है।

अंग्रेजी अनुवाद :

It is a mistake on our part to consider our mother-tongue inferior. We have to live in and move with the world. Therefore, we need to learn other languages of the world. But it is very necessary to be aware of the importance of the mother-tongue also. We may become scholars of the English language and literature but we can never become a Shakespeare or a Milton. An Englishman may become a scholar of the Hindi language and literature but he can never become a Soor or a Tulsi. We can write good books only in our mother-tongue. In our schools, too, sufficient attention is now being paid to the Indian languages. it is our duty to acquire a good knowledge of our mother-tongue.

3–मूल अंग्रेजी :

The central core of Gandhiji's teaching was meant not for his country or his people alone but for all mankind and is valid not only for today but for all time. He wanted all men to be free so that they could grow unhampered into full self realisation. He wanted to abolish the exploitation of man by man in any shape or form because both exploitation and submission to it are a sin not only against society but against the moral law, the law of out being.

हिन्दी अनुवाद :

गाँधीजी की शिक्षा का मर्म केवल उनके देश भारत या यहाँ की जनता तक सीमित नहीं था। वह सारी मानव–जाति के लिए था; और वह केवल वर्तमान काल के लिए ही नहीं, परन्तु त्रिकाल के लिए सत्य है। वे चाहते थे कि सारे मानव स्वतंत्र हो ताकि सबको अबाधित पूर्ण आत्मज्ञान प्राप्त हो सके। वे एक मनुष्य के द्वारा दूसरे मनुष्य प्रति होने वाला सभी प्रकार के शोषण को मिटा देना चाहते थे; क्योंकि शोषण करना और शोषण का शिकार होना, दोनों ही पाप है– न केवल समाज के प्रति बल्कि नैतिक नियम के प्रति भी, हमारे जीवन के नियम के प्रति भी।

4. भाषा–प्रयुक्ति : संकल्पना एवं विशिष्टताएँ

4.1 भाषा–प्रयुक्ति की संकल्पना

हमारे जीवन के विभिन्न संदर्भों के अनुसार हमारी भाषा का स्वरूप निर्धारित होता है। भिन्न–भिन्न कार्यक्षेत्रों में प्रयुक्त अलग–अलग भाषा रूपों के आधार पर 'भाषा–प्रयुक्ति' की संकल्पना की गई है। यह अंग्रेजी शब्द 'Language Register' का हिन्दी पर्याय है। 'रजिस्टर' भाषाविज्ञान का एक पारिभाषिक शब्द है, जो भाषिक रूपभेदों का घोतक है। प्रसिद्ध भाषाविज्ञानी हैलिडे 'रजिस्टर' शब्द की व्याख्या इन शब्दों में की है–

''भाषा समुदाय में विभिन्न वर्ग विभिन्न बोलियाँ बोलते हैं। एक अन्य दिशा में भी भाषा के विविध रूपों की चर्चा की जा सकती है– प्रयोग भेद की दिशा में। भाषा में प्रयोजन के अनुसार भेद होते हैं। विभिन्न स्थितियों में उसमें स्वतः भेद आ जाते हैं। प्रयोजन के आधार पर भाषा के स्वरूप भेद को जो नाम दिया जाता है, उसे 'रजिस्टर' कहते हैं।''

इस प्रकार 'रजिस्टर' भाषा की उन प्रयोगाश्रित विविधताओं को कहा जाता है जो किन्हीं विशिष्ट स्थितियों अथवा विषय क्षेत्रों में प्रयुक्त भाषा के रूप भेदों को प्रकट करती हैं। उदाहरण के लिए गणित के शून्य(ZERO) शब्द को लेते हैं। यही ZERO शब्द क्रिकेट में 'डक', टेनिस में 'लव' और चौसर में 'निल' हो जाता है :

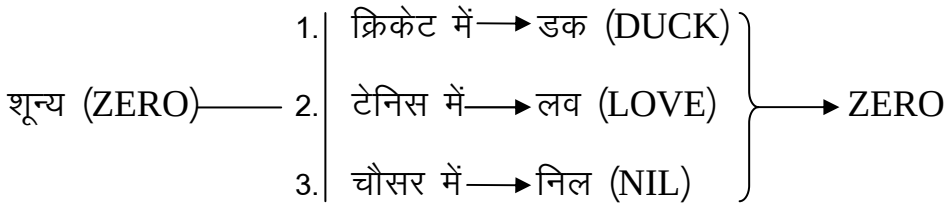

इससे यह स्पष्ट हो गया कि प्रयुक्ति के तीन आधार तत्त्व होते हैं : 'भाषा', 'विषय' एवं 'प्रयोग–पद्धति' । दूसरे शब्दों में भाषा–प्रयुक्ति के तीन निर्धारक तत्त्व होते हैं : 1. शब्दावली 2. वाक्य–विन्यास और 2. शैली । इसी के आधार पर भाषा–प्रयुक्ति की विशिष्टताएँ भी तय की जा सकती हैं जिसकी चर्चा आगे की जा रही है।

4.2 भाषा–प्रयुक्ति की विशिष्टताएँ

1. भाषा–प्रयुक्ति की पहली विशेषता है 'पारिभाषिक शब्दावली'। अर्थात् भाषा–प्रयुक्ति में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दावली के अर्थ, विषय एवं सन्दर्भ निश्चित होते हैं।
2. भाषा–प्रयुक्ति में प्रयोक्ता की विषयगत एवं सन्दर्भगत भूमिका स्पष्ट होती है और तदनुसार भाषिक–स्तर भी निश्चित होते हैं।
3. भाषा–प्रयुक्ति में उसके प्रयोक्ता का सम्बन्ध स्थिति सन्दर्भ से होता है। यही स्थिति–सन्दर्भ उस कथ्य की विषय–वस्तु का निर्धारण करता है।
4. भाषा–प्रयुक्ति की महत्त्वपूर्ण विशेषता है : 'भाषिक उपादान माध्यम– वाचिक एवं लिखित'। बोलकर या लिखकर भाषिक उपादान को व्यवस्थित एवं नियमनिष्ठ स्वरूप दिया जाता है। इसी से एक भाषा–प्रयुक्ति दूसरी भाषा–प्रयुक्ति से भिन्न या अलग प्रतीत होती है।
5. भाषा–प्रयुक्ति की शैली में टोन या लहजा का अपना अलग महत्त्व होता है जो अलग–अलग स्थिति एवं प्रयुक्ति में भिन्न–भिन्न रूप लेकर अवतरित होती है।

5. प्रयोजनमूलक भाषा–प्रयुक्तियाँ एवं अनुवाद

हिन्दी भाषा की विशिष्ट प्रयोजनमूलक प्रयुक्तियाँ निम्नलिखितानुसार है :

प्रयोजनमूलक प्रयुक्ति
1. → प्रशासनिक प्रयुक्ति
2. → साहित्यिक प्रयुक्ति
3. → विधिक प्रयुक्ति
4. → वाणिज्यिक प्रयुक्ति
5. → वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रयुक्ति
6. → विज्ञापनी प्रयुक्ति

5.1 प्रशासनिक प्रयुक्ति एवं अनुवाद

प्रशासन का क्षेत्र हिन्दी भाषा का एक विशिष्ट प्रयोग क्षेत्र होने के साथ ही यह हमारे देश में अनुवाद सम्बन्धी रोजगार का एक बड़ा क्षेत्र भी है। इसलिए प्रशासनिक कार्यविधि और उसकी भाषा से परिचय प्राप्त करने के अलावा प्रशासनिक प्रक्रियागत बारीकी को समझना हम सभी के लिए जरूरी हो गया। आज़ादी से पूर्व हमारे सरकारी कार्यालयों की भाषा अंग्रेजी थी। हिन्दी को राजभाषा के रूप में मान्यता मिलने के साथ ही सरकारी कार्यालयों के अंग्रेजी दस्तावेजों का हिन्दी अनुवाद ज़रूरी हो गया। इसी के मद्देनज़र सरकारी कार्यालयों में राजभाषा प्रकोष्ठ की स्थापना कर अंग्रेजी दस्तावेज़ों का अनुवाद तेजी से हो रहा है।

प्रशासनिक भाषा का प्रयोग सरकारी कार्यालयों में होता है जिसका सम्बन्ध सरकारी कर्मचारियों/अधिकारियों/कार्यालयों के साथ होता है। कार्यालयी कामकाज में टिप्पण, प्रारूपण, प्रतिवेदन, रिपोर्ट आदि शामिल हैं। सरकारी पत्राचार के अन्तर्गत अधिसूचना, सरकारी–पत्र, ज्ञापन, पृष्ठांकन आदि आते हैं। प्रशासनिक प्रयुक्ति में अधिकतर प्रशासनिक पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग होता है। उदाहरण के लिए निम्नलिखित वाक्यों को देखिए :

1- Draft has been amended accordingly.
–मसौदा तदनुसार संशोधित कर दिया गया है।

2- No further action is called for.
–आगे कोई कार्रवाई अपेक्षित नहीं है।

3- This may please be treated as urgent.
–कृपया इसे आवश्यक समझें।

4- Return of the main file be awaited.
–मुख्य मिसिल वापस आने की प्रतीक्षा की जाए।

इस क्रम में निम्नलिखित पैरा एवं उसका हिन्दी अनुवाद भी द्रष्टव्य है :

<u>प्रशासनिक प्रयुक्ति का अनुवाद :</u>

मूल :

An Official Language Resolution was passed by both the Houses of Parliament in December, 1967 which was circulated vide Ministry of Home Affairs O.M. No.5/8/65-O.L. dated 18th January, 1968. It was resolved that more intensive and comprehensive

programme for accelerating the spread and development of Hindi and its progressive use for the various purposes of the Union, shall be prepared by the Central Government and implemented and an annual assessment report giving details of measures taken and the progress made in this regard, will be laid on the Tables of both the Houses of Parliament and will be sent to all the State Governments. In accordance with the provisions of the Resolution, Annual Programme for the year 1996-97 had been sent for compliance to all the offices of the Central Government by the Department of Official Language. Besides this, concerted efforts for implementing the provisions made in the Annual programme, were also made throughout the year.

हिन्दी अनुवाद :

संसद के दोनों सदनों में दिसम्बर, 1967 में एक राजभाषा संकल्प पारित किया गया था जो गृह मंत्रालय के दिनांक 18 जनवरी, 1968 के का. ज्ञा. संख्या 5/8/65–रा.भा. द्वारा परिचालित किया गया था। उस समय यह संकल्प लिया गया था कि 'हिन्दी के प्रसार और विकास की गति बढ़ाने आदि तथा संघ के विभिन्न सरकारी प्रयोजनों के लिए हिन्दी के उत्तरोत्तर प्रयोग हेतु भारत सरकार द्वारा अधिक गहन और व्यापक कार्यक्रम तैयार किया जाएगा और उसे कार्यान्वित किया जाएगा तथा किए जाने वाले उपायों और की गई प्रगति की विस्तृत वार्षिक मूल्यांकन रिपोर्ट संसद को दोनों सदनों के पटल पर रखी जाएगी और सब राज्यों की सरकारों को भेजी जाएगी।' संकल्प में किए गए प्रावधान के अनुसार राजभाषा विभाग द्वारा वर्ष 1996–97 का वार्षिक कार्यक्रम भारत सरकार के सभी कार्यालयों को अनुपालन के लिए भेज दिया गया था। साथ–साथ वार्षिक कार्यक्रम में की गई व्यवस्थाओं के अनुपालन के लिए चौमुखी प्रयत्न भी पूरे वर्ष भर किए गए।

5.2 साहित्यिक प्रयुक्ति एवं अनुवाद

साहित्य के क्षेत्र में अनुवाद वरदान साबित हो चुका है। प्राचीन और आधुनिक साहित्य का परिचय दूरदराज के पाठक अनुवाद के माध्यम से पाते हैं। 'भारतीय साहित्य' की परिकल्पना अनुवाद के माध्यम से ही संभव हुई है। विश्व–साहित्य का परिचय भी हम अनुवाद के माध्यम से ही पाते हैं। साहित्य के क्षेत्र में अनुवाद के कार्य ने साहित्यों के तुलनात्मक अध्ययन को सुगम

बना दिया है। विश्व की समृद्ध भाषाओं के साहित्यों का अनुवाद आज हमारे लिए कितना ज़रूरी है कहने या समझाने की आवश्यकता नहीं।

साहित्यिक प्रयुक्ति में अपने समाज की आन्तरिक स्थिति, संश्लिष्ट मानवीय अनुभूतियों, विचारों, प्रत्ययों, संघर्षों, अन्तर्द्वन्द्व, सामाजिक आन्दोलनों एवं परिवर्तनों को अभिव्यक्त किया जाता है। कल्पनाशीलता का समावेश भी साहित्य प्रयुक्ति का अन्यतम एवं अपरिहार्य गुण होता है। यही कारण है कि साहित्यिक प्रयुक्ति में पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग न के बराबर होता है। निम्नलिखित पैरा और उसके हिन्दी अनुवाद से बातें स्पष्ट हो जाएंगी।

साहित्यिक प्रयुक्ति का अनुवाद :

मूल :

THE DWARF

(A famous novel by Parlagerkvist)

Most dwarfs are buffoons. They have to make jokes and play tricks to make their masters and the guests laugh. I have never demeaned myself to anything like that. Nobody has even suggested that I should. My very appearence forbids such a use of me. My cast of countenance is unsuited to ridiculous pranks. And I never laugh. I am no buffoon. I am a dwarf and nothing but a dwarf.

हिन्दी अनुवाद :

बौना

(पॉर लागरक्विस्त का चर्चित उपन्यास)

हिन्दी अनुवाद :

ज्यादातर बौने मसखरे होते हैं। वे अपने मालिकों और मेहमानों को रिझाने और हँसाने के लिए तरह–तरह के मज़ाक करते हैं या कई किस्म की चालें चलते हैं। मैंने अपने आपको इस तरह कभी नीचे नहीं गिराया। किसी ने ऐसा कभी मेरे बारे में सोचा भी नहीं कि मैं भी वैसा ही कर सकता हूँ या मुझे भी वैसा करना चाहिए। फूहड़ तरीके मेरे स्वभाव को रास नहीं आते। मैं इस कारण कभी हँसता नहीं। मैं कोई मसखरा नहीं हूँ। मैं तो एक बौना हूँ, बौने के सिवा और कुछ नहीं।

5.3 विधिक प्रयुक्ति एवं अनुवाद

अदालतों की कार्यवाही(proceedings) प्रायः अंग्रेजी में होती है। इनमें मुकद्दमों के लिए आवश्यक कागजात अक्सर प्रादेशिक भाषा में होते हैं, किन्तु पैरवी अंग्रेजी में ही होती है। इस वातावरण में अंग्रेजी और प्रादेशिक भाषा का बारी–बारी से परस्पर अनुवाद किया जाता है।

विधि प्रयुक्ति की भाषा अत्यन्त संवेदनशील होती है जिसमें शब्द या क्रम का थोड़ा सा परिवर्तन अर्थ का अनर्थ कर सकता है। दूसरे विधि की शब्दावली सामान्य कोशीय अर्थ अभिव्यक्त नहीं करते। इसका अर्थ अत्यन्त सूक्ष्म और विशिष्ट होता है। निम्नलिखित विधि शब्दों का हिन्दी अनुवाद देखें :

Hereby – इसके द्वारा
Here to before – इससे पूर्व
Here Under – इसके अधीन
Hereinafter provided – इसमें इसके पश्चात्

अब निम्नलिखित विधिक सामग्री का हिन्दी अनुवाद द्रष्टव्य है :

विधिक प्रयुक्ति का अनुवाद :

मूल :

Subject to the provisions of the Act and these articles of association and rights of the President, the shares shall be under the control of the Directors who may allot or otherwise dispose of the same to such persons and such terms or conditions as they think fit.

हिन्दी अनुवाद :

अधिनियम के उपबन्धों, संस्था के अन्तर्नियमों और अध्यक्ष के अधिकारों के अधीन शेयर निवेशकों के नियंत्रणाधीन होंगे जो उन्हें ऐसे व्यक्तियों को ऐसे निबंधनों एवं शर्तों पर, जिन्हें वे ठीक समझें, आबंटित कर सकते हैं या उसका अन्यथा निपटान कर सकते हैं।

5.4 वाणिज्यिक प्रयुक्ति एवं अनुवाद

विशिष्ट भाषिक संरचना एवं पारिभाषिक शब्दावली ही वाणिज्यिक प्रयुक्ति का मुख्य आधार है। शेयर बाजार, आयात–निर्यात, परिवहन, बैंकिंग, बीमा आदि

क्षेत्रों में वाणिज्यिक प्रयुक्ति का बहुतायत प्रयोग देखने को मिलता है। जैसे : 'सोने में उछाल, चाँदी मंदी', 'अरहर सुस्त, काबुली उछला' आदि।

राष्ट्रीयकरण के उपरान्त वाणिज्यिक क्षेत्रों में खास कर बैंकिंग, बीमा एवं शेयर बाजार क्षेत्र में हिन्दी का प्रयोग अनिवार्य हो गया। बैंकों में इस्तेमाल होने वाली ग्राहक सेवा सम्बन्धी सामग्रियों एवं प्रशासनिक दस्तावेजों का अनुवाद बड़े पैमाने पर होने लगा। इस सन्दर्भ में निम्नलिखित बैंकिंग अनुवाद द्रष्टव्य है :

बैंकिंग प्रयुक्ति का अनुवाद :

मूल :

Sub. : Your A/C No. ..... with us.

We have today returned a cheque drawn by you (No....., Date.....) for Rs..... on the above account. The signature on the cheque did not agree with the signature filed with us. It is quite likely that your signature might have undergone some changes with the passage of time. Please call on us and file with us your latest signature to enable us to pass your cheques.

हिन्दी अनुवाद :

विषय : हमारे यहाँ आपका खाता सं. .....

हमने आत उक्त खाते पर आपके द्वारा आहरित रु..... का चेक (सं..... दिनांक.....) लौटा दिया है। चेक पर किये गये हस्ताक्षर हमारे यहाँ उपलब्ध हस्ताक्षर से नहीं मिलते हैं। हो सकता है, समय बीतने के साथ–साथ आपके हस्ताक्षर में कुछ परिवर्तत हो गया हो । अतः कृपया आप हमसे मिलें और हमारे पास अपने नये हस्ताक्षर दर्ज करवा दें, ताकि हम आपके चेक पारित कर सकें।

5.5 वैज्ञानिक–तकनीकी प्रयुक्ति एवं अनुवाद

आज देश–विदेश में हो रहे विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के गहन अनुसंधान के क्षेत्र में तो सारा लेखन–कार्य उन्हीं की अपनी भाषा में किया जा रहा है। इस अनुसंधान को विश्व पटल पर रखने के लिए अनुवाद ही एक मात्र साधन है। इसके माध्यम से नई खोजों को आसानी से सबों तक पहुँचाया जा सकता है।

इस दृष्टि से शोध एवं अनुसंधान के क्षेत्र में अनुवाद बहुत ही महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

वैज्ञानिक एवं तकनीकी हिन्दी का मूलाधार है : पारिभाषिक शब्दावली। विज्ञान की भाषा स्पष्ट, तर्कसंगत तथा सुगठित होती है। दूसरे शब्दों में वैज्ञानिक शब्दावली और उसमें प्रयुक्त शब्द विज्ञान के सन्दर्भ और प्रसंग में पारिभाषित तथा एकार्थी होते हैं:

Didelphic	–द्विअंडाशयी
Effete cell	–शीर्ण कोशिका
Epiderm	–वाह्य त्वचा, अधिचर्म
Alkali	–क्षार
Caliper	–कैलिपर
Alginic acid	–ऐल्जिनिक अम्ल
Finite	–शून्येतर
Monotone	–एकदिष्ट

ऊपर कहा जा चुका है कि 'पारिभाषिक शब्दावली' वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रयुक्ति का मूलाधार है। निम्नलिखित वैज्ञानिक प्रयुक्ति परक पैरा एवं उसका हिन्दी अनुवाद देखने से बातें और स्पष्ट हो जाएगीं ।

वैज्ञानिक प्रयुक्ति का अनुवाद :

मूल :

Mars is different from our planet in many other ways. In most places and for most of the time it is extremely cold, and the earth's strongest wind would be quite calm in comparison with the winds which can blow in the atmosphere of Mars.

हिन्दी अनुवाद :

मंगल ग्रह हमारे ग्रह से कई तरह से भिन्न है। इसका अधिकांश भाग अधिकांश समय तक अत्यधिक ठंडा रहता है। यहाँ पर इतनी तेज हवाएँ चलती हैं कि धरती की सर्वाधिक तेज हवाएँ भी मंगल ग्रह के वायुमंडल में चलने वाली हवाओं की तुलना में काफी धीमी और शांत होती हैं।

5.6 विज्ञापनी प्रयुक्ति एवं अनुवाद

किसी वस्तु, सामग्री आदि की खरीद के लिए या किसी विशेष सेवा के लिए अथवा जनता का विश्वास प्राप्त करने के लिए उन सभी के गुणों, उपयोगों,

प्रकार्यों तथा लाभों आदि का विभिन्न प्रकार से प्रचार करना अर्थात् सर्वसाधारण तक इनकी सूचना पहुँचाना ही 'विज्ञापन' है।

आज का बाजार विज्ञापन आधारित है जिसमें अनुवाद भी उल्लेखनीय भूमिका निभा रहा है। विज्ञापन का समुन्नत रूप आज हमारे सामने है। विज्ञापन की भाषा व्यापार, व्यवसाय तथा वाणिज्य से जुड़ी होने के कारण उसमें आकर्षण–क्षमता, रमणीयता, स्मरणीयता, मोहक भाषा–शैली, विक्रय–शक्ति, श्रव्यता एवं पठनीयता, संक्षिप्तता, लोक–स्वीकार्यता आदि गुणों का होना जरूरी है। इस कारण सामान्य विज्ञापन की भाषा तकनीकी या पारिभाषिक शब्दावली न होकर आर्थिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक होती है जबकि वर्गीकृत एवं रोजगार सम्बन्धी विज्ञापनों में अधिकतर पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग किया जाता है। निम्नलिखित सामान्य विज्ञापनी प्रयुक्ति पर ध्यान दीजिए :

'प्रीमियर टायर लगाइए और फिर बेफिकर रहिए', 'ऐस्प्रो दर्द से दो गुना जल्द आराम दिलाती है.... जी हाँ, दो गुना जल्द! क्योंकि केवल ऐस्प्रो ही माइक्रोफाइण्ड है।' 'धूम मचा दे... रंग जमा दे... पान पराग'– कुछ याद आया ! अगर नहीं तो निम्नलिखित पंक्तियों को पढ़िए :

1. शुद्ध, सौम्य 'नया लक्स'– फिल्मी सितारों का सौन्दर्य साबुन
2. पहले इस्तेमाल करें फिर विश्वास करें – 'घड़ी डिटरजेंट'
3. दूध–सी सफेदी 'निरमा' से आई।
4. डर के आगे जीत है –'माउण्टेन डीउ'
5. सिर्फ अपनी ही चाबी से खुले – 'लिंक ताले'
6. कामकाजी पुरुषों की पहली पसन्द – वी.आई.पी. ब्रीफकेस

इन सभी विज्ञापनों का लगभग सभी भारतीय भाषाओं में अनुवाद हुआ और इसके माध्यम से उत्पादों की जानकारी जन–जन तक पहुँची ।

अब रोजगार सम्बन्धी निम्नलिखित विज्ञापनी प्रयुक्ति द्रष्टव्य है :

भारत सरकार
भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र
कार्मिक प्रभाग
भर्ती अनुभाग-III

यह सूचित किया जाता है कि जिन अभ्यर्थियों ने इस केन्द्र के विज्ञापन सं. 3/2016–आर–III के तहत **कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक** के पद

के लिए आवेदन किया है वे दिनांक 22 एवं 23 अप्रैल, 2016 को मुम्बई में आयोजित स्क्रीनिंग/लिखित परीक्षा का विवरण जानने के लिए कृपया वेबसाइट www.barc.gov.in देखें।

''प्रवेश पत्र एवं बुलावा पत्र'' स्पीड पोस्ट से भेज दिया गया है।

अब उक्त विज्ञापन का **अंग्रेजी अनुवाद** देखें :

Government of India
Bhabha Atomic Research Centre
PERSONNEL DIVISION
RECRUITMENT SECTION-III

It is notified that all the candidates who have applied for the post of JUNIOR HINDI TRANSLATOR against this centre's advertisement no. 3/2016-R-III may please visit website www.barc.gov.in to know the details about the screening/written tests scheduled on April 22 & 23, 2016 in Mumbai.

The 'ADMIT CARD-CUM-CALL LETTER' have been sent by SPEED POST.

उक्त विज्ञापन की भाषा अभिधापरक है । कर्मवाच्य प्रधान इस विज्ञापन में बहुत सारे पारिभाषिक शब्द प्रयुक्त हुए हैं। जैसे : Personal, Division, Recruitment, Section, Advertisement, Junior, Screening, Written test, Schedule, Admit card आदि।

---

6. बोध प्रश्न

---

1. 'प्रयुक्ति' शब्द की संकल्पना को स्पष्ट कीजिए ?

.....

.....

.....

2. 'विज्ञापनी प्रयुक्ति' को सादाहरण स्पष्ट कीजिए ?

.....

.....

.....

3. प्रयुक्ति की विशिष्टताओं को रेखांकित कीजिए ?

.....

.....

.....

4. 'प्रशासनिक प्रयुक्ति' को अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए ?

.....

.....

.....

5. निम्नलिखित अंग्रेजी अनुच्छेद का हिन्दी अनुवाद कीजिए ?

Mahatma Gandhi was the greatest man of his time, he was born at Porbandar in Gujarat on 2 October, 1869. His father was a minister in a state and his mother was an ideal woman. After his education in India he went to England to study law. After qualifying as a barriester from there he start practice in South Africa. But soon he started the Satyagrah movement to improve the miserable conditions of the Indians living there. After Gandhi-Smuts agreement he returned to India. He regarded truth and non-violence as the best weapons for achieving the freedom of India. Therefore he started non-cooperation and satyagraha movements. In the end truth and non-violence were victorious and the British empire had to admit defeat. India became free.

.....

.....

.....

.....

.....

7. सारांश

अनुवाद एक ऐसी तकनीक है जिसका आविष्कार मनुष्य ने बहुभाषिक स्थिति की विडम्बनाओं से बचने के लिए किया था। लक्ष्य–भाषा के भाषा–वैभव को ही नहीं अपितु उसकी उसी तरह की व्यंजना को भी दूसरी भाषा में यथावत् रूपान्तरित करना अनुवाद का लक्ष्य होता है।

अनुवाद सिद्धांत की चर्चा करना और व्यावहारिक अनुवाद करना–दो भिन्न प्रदेशों से गुजरने जैसा है, फिर भी इसमें कोई दो राय नहीं कि अनुवाद के सिद्धांत हमें अनुवाद कर्म की जटिलताओं से परिचित कराते हैं। फिर, किसी भी भाषा के साहित्य में और ज्ञान–विज्ञान के क्षेत्र में जितना महत्त्व मूल लेखन का है, उससे कम महत्त्व अनुवाद का नहीं है।

हमारे जीवन के विभिन्न संदर्भों के अनुसार हमारी भाषा का स्वरूप निर्धारित होता है। भिन्न–भिन्न कार्यक्षेत्रों में प्रयुक्त अलग–अलग भाषा रूपों के आधार पर 'भाषा–प्रयुक्ति' की संकल्पना की गई है। 'रजिस्टर' भाषा की उन प्रयोगाश्रित विविधताओं को कहा जाता है जो किन्हीं विशिष्ट स्थितियों अथवा विषय क्षेत्रों में प्रयुक्त भाषा के रूप भेदों को प्रकट करती हैं। हिन्दी भाषा की प्रमुख प्रयोजनमूलक प्रयुक्तियाँ हैं : प्रशासनिक प्रयुक्ति, साहित्यिक प्रयुक्ति, विधिक प्रयुक्ति, वाणिज्यिक प्रयुक्ति, वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रयुक्ति और विज्ञापनी प्रयुक्ति ।

8. बोध प्रश्नों के उत्तर

1. देखें भाग 4.1
2. देखें भाग 5.6
3. देखें भाग 4.2
4. देखें भाग 5.1
5. महात्मा गाँधी अपने समय के सबसे महान् पुरुष थे। उनका जन्म 2 अक्तूबर, 1869 ई. में गुजरात के पोरबन्दर नाम के शहर में हुआ था। उनके पिता एक रियासत के दीवान थे और उनकी माता एक आदर्श स्त्री थी। भारत में शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् वे वकालत पढ़ने के लिए इंग्लैण्ड गये। वहाँ से बैरिस्टर बनकर वापिस आने के बाद उन्होंने आरम्भ में दक्षिणी अफ्रीका में वकालत आरम्भ की। परन्तु शीघ्र ही वहाँ रहने वाले भारतीयों की दीन–दशा सुधारने के लिए उन्होंने वहाँ सत्याग्रह–आन्दोलन प्रारम्भ किया। गाँधी–स्मटस समझौता हो जाने पर वे वहाँ से भारत लौट आये। भारत की स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए भी उन्होंने सत्य और अहिंसा के सिद्धान्तों को ही सर्वोत्तम हथियार माना। अतः उन्होंने असहयोग तथा सत्याग्रह आन्दोलन आरम्भ किये। अन्त में सत्य और अहिंसा की विजय हुई और ब्रिटिश सामाज्य को अपनी हार स्वीकार करनी पड़ी। भारत स्वतंत्र हो गया।

इकाई–2 : प्रशासनिक सामग्री का अनुवाद

रूपरेखा

1. उद्देश्य
2. प्रस्तावना
3. प्रशासनिक हिन्दी : स्वरूप एवं विशेषताएँ
   - 3.1 प्रशासनिक हिन्दी : सामान्य परिचय
   - 3.2 प्रशासनिक हिन्दी : स्वरूप एवं विशेषताएँ
4. प्रशासनिक शब्दावली (अंग्रेजी–हिन्दी)
5. सामान्य प्रशासनिक टिप्पणियाँ (अंग्रेजी–हिन्दी)
6. प्रशासनिक अनुवाद : समस्याएँ और समाधान
7. प्रशासनिक अनुवाद अभ्यास
8. बोध प्रश्न
9. सारांश
10. बोध प्रश्नों के उत्तर

1. उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- प्रशासनिक शब्दावली से परिचित होंगे;
- प्रशासनिक अनुवाद का सामान्य परिचय पा सकेंगे;
- प्रशासनिक हिन्दी के स्वरूप एवं विशेषताओं को समझ सकेंगे;
- प्रशासनिक अनुवाद की सामान्य समस्याओं से परिचित होंगे;
- प्रशासनिक अनुवाद अभ्यास के दौरान उन समस्याओं को दूर कर सकेंगे;

2. प्रस्तावना

प्रशासनिक अनुवाद से परिचय कराने की दृष्टि से प्रस्तुत अध्याय 'प्रशासनिक सामग्री का अनुवाद' में प्रशासनिक हिन्दी के स्वरूप, प्रशासनिक शब्दावली एवं टिप्पणियों के अलावा प्रशासनिक अनुवाद की सामान्य समस्याओं और उनके

समाधानों की चर्चा की गई है। इसके साथ ही विविध प्रकार के प्रशासनिक सामग्री का अनुवाद अभ्यास भी कराया गया है।

3. प्रशासनिक हिन्दी : स्वरूप एवं विशेषताएँ

3.1 प्रशासनिक हिन्दी : सामान्य परिचय

'प्रशासनिक हिन्दी' से आशाय है– कार्यालयी हिन्दी, राजकाज की हिन्दी, सरकारी हिन्दी। हिन्दी के इस नवीन स्वरूप को मान्यता स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् ही मिली। स्वतंत्रता–संग्राम के दौरान हिन्दी सम्पर्क भाषा एवं राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित हो चुकी थी। वही हिन्दी आज़ादी के बाद राजकाज और प्रशासन के क्षेत्रों में अपनी नई भूमिका एवं नए स्वरूप के साथ अवतरित हुई :

क. A chronological summary of the case is placed below.
–इस मामले का तारीखवार सारांश नीचे दिया गया है।

ख. A revised draft memorandum is put up as desired by Registrar.
–कुलसचिव महोदय की इच्छानुसार ज्ञापन का परिशोधित प्रारूप प्रस्तुत है।

ग. Delay in the submission of the case is regretted.
–मामले को प्रस्तुत करने में हुई देरी के लिए खेद है।

घ. Bill has been verified, this is in orders, may be passed for payment.
–बिल का सत्यापन कर लिया गया है। यह ठीक है। भुगतान के लिए पास किया जाय।

इस प्रकार सरकारी कार्यालयों में हिन्दी का एक नया रूप सामने आया, जो कालान्तर में 'प्रशासनिक हिन्दी' नाम से सर्वत्र परिचित हुआ, अर्थात् हिन्दी की एक नई प्रयुक्ति (register) अस्तित्व में आई जो 'कार्यालयी हिन्दी', 'कामकाजी हिन्दी', 'राजकाज की हिन्दी', 'सरकारी कामकाज की हिन्दी' आदि विविध नामों से प्रचलित हुई।

3.2 प्रशासनिक हिन्दी : स्वरूप एवं विशेषताएँ

प्रशासनिक हिन्दी सहज, सरल और सम्प्रेषणीय होनी चाहिए। इसमें लक्षणा और व्यंजना का प्रयोग न होकर आमतौर पर अभिधा का प्रयोग होता है ताकि वह पठनीय एवं बोधगम्य हो। कार्यालयी हिन्दी तथ्यात्मक होती है और इसमें पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग किया जाता है। इसमें सरल और छोटे–छोटे

वाक्यों का प्रयोग ही श्रेयस्कर होता है, न कि मिश्रित और संयुक्त वाक्यों का। उदाहरण के लिए– *'बैठक, जो कि 26 दिसम्बर, 2014 को होने वाली थी, स्थगित हो गई।'* कहने की बजाय *'26 दिसम्बर, 2014 को होने वाली बैठक स्थगित हो गई।'* कहना अधिक ठीक होगा। इस प्रकार प्रशासनिक हिन्दी की निम्नलिखित विशेषताएँ दर्ज की जा सकती हैं :

1. *सम्प्रेषणीयता* : भाषा का मुख्य काम संप्रेषण ही है, परन्तु कार्यालयी भाषा में उसका महत्त्व और बढ़ जाता है।
2. *स्पष्टता* : स्पष्टता प्रशासनिक हिन्दी की मुख्य विशेषता है। यह स्पष्टता शब्द और विचार, दोनों स्तर पर होती है।
3. *सरलता* : इससे संप्रेषण सुलभ रीति से होता है। प्रशासनिक हिन्दी में सामासिक शब्दावली और लम्बे–लम्बे वाक्यों का प्रयोग उचित नहीं है। इसके विपरीत सीधे सादे सरल शब्दों एवं छोटे–छोटे वाक्यों का प्रयोग किया जाए।
4. *औपचारिकता* : प्रशासनिक हिन्दी की भाषा औपचारिक होती है। इसमें व्यक्तिगत सम्बन्धों एवं आत्मीय रिश्तों की प्रस्तुति नहीं होती।
5. *अलंकारहीनता* : प्रशासनिक हिन्दी में 'अलंकारहीनता' को गुण माना जाता है, क्योंकि यहाँ कथन को घुमा–फिरा कर नहीं, बल्कि स्पष्ट एवं सीधे तरीके से रखा जाता है।
6. *अभिधार्थ स्वीकार्यता* : प्रशासनिक हिन्दी में शब्दों का केवल अभिधार्थ ही स्वीकार किया जाता हैं। वाच्यार्थ या लक्ष्यार्थ पर ध्यान नहीं दिया जाता। उसका प्रयोग भी अपेक्षित नहीं है।
7. *विषयसंगतता* : प्रशासनिक हिन्दी में हमेशा विषय से सीधा सम्बन्ध रखने वाली बात ही लिखी जाती है। अनावश्यक शब्दों का प्रयोग यहाँ वर्जित है।
8. *कर्मवाच्य का प्रयोग* : कार्यालयों में काम करने वालों की अपेक्षा कार्य को अधिक महत्त्व दिया जाता है। कार्यरत व्यक्ति संस्था, कार्यालय, मंत्रालय, सरकार के प्रतिनिधि के रूप में काम करता है। इस कारण कर्मवाच्य का प्रयोग अधिक होता है।
9. *पुनरुक्तिहीनता* : प्रशासनिक हिन्दी हमेशा विषयसंगत एवं संक्षिप्त होती है। अतः किसी कथन या मुद्दे को बार–बार यहाँ नहीं दुहराया जाता है।
10. *शृंखलाबद्धता/क्रमबद्धता* : कार्यालयी भाषा में शृंखलाबद्धता या क्रमबद्धता का निर्वाह किया जाता है ताकि मामले को ठीक से समझा जा सके।

11. *पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग* : प्रशासनिक हिन्दी में प्रशासन में प्रयुक्त होने वाले पारिभाषिक शब्दों का ही प्रयोग किया जाता है ताकि एकरूपता एवं एकार्थकता हर स्तर पर बना रहे।

12. *सभ्य एवं सुसंस्कृत भाषा का प्रयोग* : कार्यालयी भाषा में गलतियाँ दिखाते समय, इन्कार करते समय, अस्वीकार करते समय सभ्य एवं सुसंस्कृत शब्दों का प्रयोग किया जाता है।

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग, नई दिल्ली डाक और तार, रेलवे, लोकनिर्माण, परिवहन, अंतरिक्ष विज्ञान, लेखा, आयकर, राजस्व, संचार, विज्ञान, आयुर्विज्ञान, अभियांत्रिकी, वाणिज्य, गणित, रसायनशास्त्र, भौतिकी, जीवविज्ञान, सूक्ष्मजैविकी, भाषाविज्ञान, मनोविज्ञान आदि ज्ञान के सभी क्षेत्रों की पारिभाषिक शब्दावली प्रकाशित कर चुका है। इन सारे क्षेत्रों के प्रशासनिक कार्यालयों में अलग–अलग पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग हो रहा है और हर क्षेत्र में एक विशिष्ट प्रशासनिक हिन्दी का नया चेहरा उभर रहा है।

4. प्रशासनिक शब्दावली (अंग्रेजी से हिन्दी)

प्रशासनिक भाषा से परिचित होने से पहले प्रशासनिक शब्दवली से परिचित होना जरूरी है। इसी के मद्देनजर प्रशासनिक शब्दावलियों एवं पदनामें की एक लम्बी सूची यहाँ दी जा रही है :

(क) प्रशासनिक शब्दावली :

Abridged report - संक्षिप्त रिपोर्ट
Absentee statement - अनुपस्थिति विवरण
Absorption - आमेलन/अंतर्लयन
Abstract account - सार लेखा
Abuse of power - शक्ति का दुरुपयोग
Acceptance of office - पद स्वीकृति
Accidental error - आकस्मिक त्रुटि
Adaptation - अनुकूलन
Additional pay - अतिरिक्त वेतन
Additional secretary - अपर सचिव
Adjournment motion - स्थगन प्रस्ताव
Admission list - प्रवेश सूची
Adult franchise - वयस्क मताधिकार

Advertising and visual publicity - विज्ञापन और दृश्य प्रचार
Aesthetics - सौंदर्यशास्त्र
Agenda - कार्यसूची
Amphibian - जलथलचर/उभयचर
Animated discussion - जोशपूर्ण चर्चा (जोशपूर्ण वाद–विवाद)
Anomaly - असंगति, विषमता
Anti-pollution drive - प्रदूषण विरोधी अभियान
Aptitude - अभिरुचि
Arbitration tribunal - माध्यस्थम् अधिकरण
Arrears report - बकाया रिपोर्ट
Authoritative text - प्राधिकृत पाठ
Authentic translation - प्रामाणिक अनुवाद
Avenues of promotion - पदोन्नति के अवसर
Balance sheet - तुलन पत्र
Balanced budget - संतुलित बजट
Bare denial - साफ इंकार/कोरा जवाब
Benevolent fund - हितकारी निधि
Biennial programme - द्विवार्षिक कार्यक्रम
Bilateral agreement - द्विपक्षीय करार
Book review - पुस्तक समीक्षा
Brain drain - प्रतिभा पलायन
Breach of discipline - अनुशासन भंग
Break in service - सेवा में व्यवधान
Budget estimate - बजट अनुमान
Budget provisions - बजट प्रावधान
Building language - आकर भाषा
Bureaucracy - दफ्तरशाही, नौकरशाही, अधिकारी तंत्र
Capital investment - पूँजी निवेश
Capitalisation - पूँजीकरण
Capital punishment - प्राणदंड, मृत्युदंड
Cash chest - खजाना पेटी
Cash discount - नकदी बट्टा, रोकड़ बट्टा
Casual labour - अनियत मजदूर/नैमित्तिक मजदूर

Ceiling price - उच्चतम कीमत, उच्चतम निर्धारित कीमत
Certificate of posting - डाक प्रमाण–पत्र
Chronological order - कालक्रम
Civil procedure - सिविल प्रक्रिया
Civil rights - नागरिक अधिकार
Classified advertisement - वर्गीकृत विज्ञापन
Compensatory leave - एवजी छुट्टी / प्रतिपूरक छुट्टी
Competent authority - सक्षम प्राधिकारी
Complainant - परिवादी / फरियादी / शिकायतकर्त्ता
Comprehension test - अर्थग्रहण परीक्षण
Cold reception - भावशून्य स्वागत
Columnist - स्तंभ लेखक
Compassionate ground - अनुकंपा आधार
Consciousness - चेतना
Conservative society - रूढ़िवादी समाज
Consolidated fund - समेकित निधि
Contingent expenditure - आकस्मिक व्यय
Contract - संविदा
Commuted leave - परिणत छुट्टी
Cost accounting - लागत लेखाकरण
Credential - प्रत्यय–पत्र
Current price - वर्तमान कीमत
Covering letter - सह–पत्र
Debit entry - नामे प्रविष्टि
Demotion - पदावनति
Depreciation charge - मूल्यह्रास प्रभार
Dies-non - अकार्य दिवस
Due date - नियत तारीख / तिथि
Edict - राजादेश / धर्मादेश
Employment exchange - रोजगार केन्द्र (रोजगार कार्यालय)
En clair telegram - शब्दबद्ध तार
Errata - शुद्धि–पत्र
Evaluation - मूल्यांकन

Ex-cadre post - संवर्ग बाह्य पद
Executive Engineer - कार्यपालक इंजीनियर
Ex-Officio chairman - पदेन अध्यक्ष
Extradition treaty - प्रत्यर्पण संधि
Fabrication of charges - आरोप गढ़ना
Fascimile signature - प्रतिकृति हस्ताक्षर/हस्ताक्षर की हूबहू नकल
First hand knowledge - प्रत्यक्ष या आँखों देखी जानकारी
Fiscal policy - वित्त नीति/राजस्व नीति
Forged documents - जाली/नकली दस्तावेज
Functional knowledge - कार्यसाधक ज्ञान
Genius of language - भाषा की प्रकृत्ति
Gratuity - उपदान
Grievance - शिकायत
Gross misconduct - घोर कदाचार
Gross pay- सकल वेतन
Habitual defaulter - आभ्यासिक व्यक्तिक्रमी, आभ्यासिक दोषी
Have-nots - निर्धन वर्ग
Hypothecation - आडमान (बैंक में दृष्टिबंधक)
Imposition - अधिरोपण
In camera meeting - गुप्त बैठक
Inflation - मुद्रा स्फीति
Initial pay - प्रारंभिक वेतन
Inter-se-seniority - परस्पर वरिष्ठता
Jurisprudence - विधि शास्त्र/न्याय शास्त्र
Lexicography - कोश कला, कोश रचना
Link language - संपर्क भाषा
Mandate - अधिदेश
Marginal worker - उपन्तिक कामगार
Master piece - श्रेष्ठ कृति
Nation building - राष्ट्र निर्माण
National reconstruction - राष्ट्र पुनर्निर्माण
News letter - सूचना पत्र, संवाद पत्र
Non-proliferation treaty - परमाणुशस्त्र प्रसार निरोध संधि

Oath of allegiance - निष्ठा की शपथ
Offensive language - अपमानजनक भाषा
Officer-in-overall charge - सर्वकार्य प्रभारी अधिकारी
Parent office - मूल कार्यालय
Parliamentary practice - संसदीय परम्परा
Part and parcel - अभिन्न अंग (हिस्सा)
Per capita income - प्रति व्यक्ति आय
Perennial - बारहमासी, चिरस्थायी
Permanent pensionable post - स्थायी पेंशन पद
Personal law - स्वीय विधि
Posthumous award - मरणोत्तर पुरस्कार
Power of attorney - मुख्तारनामा
Preamble - उद्देशिका
Prerogative - विशेषाधिकार
Probation period - परिवीक्षा काल, परिवीक्षा अवधि
Proficiency - प्रवीणता
Proforma promotion - प्रोफार्मा पदोन्नति
Prohibitory orders - प्रति/निषेधाज्ञा आदेश
Promulgation - प्रख्यापन/प्रवर्तन/प्रचार
Promissory note - वचन–पत्र, रूक्का
Pros and cons - आगा–पीछा/पक्ष–विपक्ष
Provision of an act - अधिनियम का उपबंध
Proviso - परंतुक
Public undertaking - सरकारी उपक्रम
Quasi permanent - स्थायीवत्
Refresher course - पुनश्चर्या पाठ्यक्रम
Remedial measures- उपचारी उपाय
Repayment - चुकौती
Restricted leave - प्रतिबंधित अवकाश
Rolling plan - अनवरत योजना
Social boycott - सामाजिक बहिष्कार
Sojourn- विराम
Solemn affirmation - सत्यनिष्ठा प्रतिज्ञान

Statute - संविधि
Statutory obligation - सांविधिक या कानूनी दायित्व या बाध्यता
Statutory requirement - सांविधिक अपेक्षा
Steering committee - विषय निर्वाचन समिति
Sublimation - उदात्तीकरण
Suffrage - मताधिकार
Summit talk - शिखरवार्ता
Supernumerary post - असंख्य पद/अतिरिक्त पद
Tax-evasion - कर–वंचन (ठगी, धूर्तता)
Tenure post - नियत कालिक पद/सावधिक पद
Term deposits - आवधिक निक्षेप
Testament - वसीयत
Transcreation - पुनः सृष्टि/पुनः सर्जन
Transcription - प्रतिलेखन, लिप्यंतरण, लिप्यंकन, नकल
Transliteration - लिप्यंतरण
Truncated pay scale - खंडित वेतनमान
Unconstitutional - असंवैधानिक
Uninterrupted service - अविच्छिन्न सेवा, अविरत सेवा
Verification of antecedents - पूर्ववृत का सत्यापन
Vicious propaganda - दुष्प्रचार
Voluntary retirement - स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति
Vote on account - लेखानुदान
Ways and means committee - अर्थोपाय समिति
Wildcat strike - अनधिकृत हड़ताल
With retrospective effect - पूर्व व्यापी रूप में/भूतलक्षी प्रभाव से

(ख) पदनाम :

Accountant - लेखाकार
Accountant General - महालेखाकार
Advocate - अधिवक्ता
Advocate General - महाधिवक्ता
Allotment Officer - आबंटन अधिकारी

Anti-Corruption Officer - भ्रष्टाचार–निरोध अधिकारी
Appellate Officer - अपील अधिकारी
Associate Professor - सह–आचार्य
Attachment Officer - कुर्की अधिकारी
Audit Officer - लेखापरीक्षा अधिकारी
Auditor - लेखापरीक्षक
Bibliographer - ग्रंथ सूचीकार
Cashier - कोषपाल
Cataloguer - सूचीकार
Chancellor - कुलाधिपति
Chemist - रसायनज्ञ
Chief Controller - मुख्य नियंत्रक
Chief Justice - मुख्य न्यायमूर्ति
Chief of Air Staff - वायु सेनाध्यक्ष
Chief of Army Staff - थल सेनाध्यक्ष
Chief of Naval Staff - नौ सेनाध्यक्ष
Civil Surgeon - सिविल सर्जन
Commercial Tax Officer - वाणिज्य कर अधिकारी
Compensation Officer - मुआवजा अधिकारी
Controller - नियंत्रक
Corresopndent - संवाददाता
Dean (of a Faculty) - अधिष्ठाता, संकाय अध्यक्ष
Demonstator - निदर्शक
Deposit Clerk - निक्षेप लिपिक
Deputy Collector - डिप्टी कलेक्टर
Deputy Commissioner - उपायुक्त
Director of Programme - कार्यक्रम निदेशक
District Officer - जिला अधिकारी
District Supply Officer - जिला पूर्ति अधिकारी
Election Commissioner - अनिर्वाचन आयुक्त
Employment Officer - रोजगार अधिकारी
Enquiry Officer - जाँच अधिकारी
Estate Officer - सम्पदा अधिकारी

Executive Director - अकार्यपालक निदेशक
Extradition Officer - प्रत्यर्पण अधिकारी
Finance Commissioner - वित्त आयुक्त
General Editor - प्रधान संपादक
Geologist - भू–विज्ञानी
Gynaecologist - स्त्रीरोग विज्ञानी
Head of Department - विभागाध्यक्ष
Head of State - राष्ट्राध्यक्ष
Hostel Warden - छात्रावास वार्डन
Hostess - परिचारिका
Income Tax Officer - आयकर अधिकारी
Inspection Officer - निरीक्षण अधिकारी
Insurance Officer - बीमा अधिकारी
Intelligence Officer - आसूचना अधिकारी
Investigator - अन्वेषक
Invigilator - अन्वीक्षक
Judicial Magistrate- न्यायिक मजिस्ट्रेट
Jurist - विधिशास्त्री
Justice - न्यायमूर्ति
Language Expert - भाषा विशेषज्ञ
Launching Officer - प्रमोचन अधिकारी
Lecturer - प्राध्यापक
Liaison Officer - सम्पर्क अधिकारी
Librarian - पुस्तकाध्यक्ष
Maintainance Officer - अनुरक्षण अधिकारी
Manager - प्रबन्धक
News Editor- समाचार सम्पादक
Noter and Drafter - टिप्पणीकार और प्रारूपक
Paediatrician - बाल–चिकित्सक
Pathologist - विकृतिविज्ञानी
Pharmacist - भेषजज्ञ
Presiding Officer - पीठासीन अधिकारी
Private Secretary - निजी सचिव

Professor - आचार्य, प्रोफेसर
Recruitment Officer - भर्ती अधिकारी
Research Officer - अनुसंधान अधिकारी
Scrutiny Officer - संवीक्षा अधिकारी
Superintendent of Police - पुलिस अधीक्षक
Taxation Officer - कराधन अधिकारी
Vice Chancellor - कुलपति
Vigilance Officer - सतर्कता अधिकारी

5. सामान्य प्रशासनिक टिप्पणियाँ (अंग्रेजी–हिन्दी)

ऊपर प्रशासनिक शब्दावलियों की एक लम्बी सूची दी जा चुकी है। अब सरकारी कार्यालयों में प्रयुक्त अंग्रेजी की सामान्य प्रशासनिक टिप्पणियों का हिन्दी अनुवाद देखते हैं:

1. I agree. - मैं सहमत हूँ ।
2. I disagree. - मैं असहमत हूँ ।
3. Sanctioned. - स्वीकृत।
4. Approved. - अनुमोदित।
5. As proposed. - यथा प्रस्तावित।
6. Please speak. - कृपया बात करें।
7. Seen, thanks. - देख लिया, धन्यवाद।
8. Seen and returned. - देखकर वापस किया जाता है।
9. Minister has seen. - मंत्री जी ने देख लिया है।
10. Issue reminder urgently. - तुरन्त अनुस्मारक भेजिए।
11. For information only. - केवल सूचना के लिए।
12. Submitted for orders. - आदेशों के लिए प्रस्तुत।
13. Submitted for consideration. - विचारार्थ प्रस्तुत।
14. Needful has been done. - आवश्यक कार्रवाई कर दी गई है।
15. Draft reply is put up for for approval.
    उत्तर का मसौदा अनुमोदन के लिए प्रस्तुत है।
16. We have no comments to offer.
    हमें कोई टिप्पणी नहीं करनी है।

17. The proposal is quite in order.
यह प्रस्ताव बिल्कुल नियमानुकूल है।

18. Administrative approval may be obtained.
प्रशासनिक अनुमोदन प्राप्त किया जाए।

19. Await further report.
आगे और विवरण की प्रतीक्षा कीजिए।

20. Draft as directed by D.R. is submitted for approval.
उप कुलसचिव के निदेशानुसार मसौदा अनुमोदन के लिए प्रस्तुत है।

21. Director General may please see for approval.
महानिदेशक कृपया अनुमोदन के लिए देखें।

22. The F.R. may please be seen for information.
नई आवती सूचना के लिए देख लें।

23. The proposal is self-explanatory.
प्रस्ताव अपने आप में स्पष्ट है।

24. Draft has been amended accordingly.
मसौदा तदनुसार संशोधित कर दिया गया है।

25. No further action is called for.
आगे कोई कार्रवाई अपेक्षित नहीं है।

26. This may please be treated as urgent.
कृपया इसे आवश्यक समझें।

27. Return of the main file be awaited.
मुख्य मिसिल वापस आने की प्रतीक्षा की जाए।

28. Action may be taken as proposed.
यथा प्रस्तावित कार्रवाई की जाए।

29. Please prepare a precis of the case.
कृपया मामले का सार तैयार कीजिए।

30. No assurance in the matter can be given at this stage.
इस मामले में इस समय कोई आश्वासन नहीं दिया जा सकता।

31. A chronological summary of the case is placed below.
इस मामले का तारीखवार सारांश निम्नलिखित है।

32. We are not concerned with this.
इसका सम्बन्ध हमसे नहीं है।

33. Inspite of a thorough search the relevant file is not traceable.
भलीभाँति खोज करने पर भी सम्बन्धित मिसिल नहीं मिल रही है।

34. The case is resubmitted as directed on prepage.
पिछले पृष्ठ पर दिए गए निदेश के अनुसार मामला पुनः प्रस्तुत किया जाता है ।

35. Extracts from these notes will be kept in our file on return.
वापसी पर टिप्पणियों के उद्धरण अपनी मिसिल में रख लिए जाएँगे।

36. The file may kindly be returned early after keeping extracts.
उद्धरण रखने के पश्चात् कृपया इस मिसिल को शीघ्र लौटा दिया जाए।

37. Draft reply on the lines suggested above may be put up.
ऊपर दिए गए सुझावों के आधार पर उत्तर का मसौदा प्रस्तुत कीजिए।

38. Enquiry may be completed and report submitted at an early date.
जाँच पूरी करके रिपोर्ट जल्दी प्रस्तुत की जाए।

39. The matter is still under consideration in the M.H.R.D.
मामला अभी भी मानव संसाधन विकास मंत्रालय के विचाराधीन है ।

40. Secretary need not be troubled.
सचिव को कष्ट देने की आवश्यकता नहीं ।

41. The draft need not be issued.
प्रारूप को जारी करने की आवश्यकता नहीं है ।

42. Ministry of I&B may be consulted.
सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय से परामर्श किया जाए ।

43. Further report from UGC may be awaited.
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से रिपोर्ट की और प्रतीक्षा कर लें ।

44. It is difficult to proceed with the case.
इस मामले में आगे कार्रवाई करना कठिन है।

45. Information has already been sent under this office letter ... ...
इस कार्यालय के पत्र क्रमांक ..... के अन्तर्गत सूचना पहले ही भेजी जा चुकी है ।

46. Inspite of repeated reminders, the information has not been received so far.
बार–बार अनुस्मारक भेजने के बावजूद अभी तक सूचना नहीं मिली है ।

47. For the reasons now explained I express my concurrence in the proposal.
अब जो कारण बताए गए हैं उनको दृष्टि में रखते हुए मैं इस प्रस्ताव पर अपनी सहमति देता हूँ।

48. A short history of the case under consideration is given on page 7-9 ante.

विचाराधीन मामले का संक्षिप्त वृत्त पीछे पृष्ठ 7–9 पर दिया गया है ।

49. Provision exists in the budget for incurring the expenditure during the current financial year.

इस व्यय के लिए चालू वित्तीय वर्ष के बजट में व्यवस्था है।

50. In view of the circumstance explained in the p.u.c. we may permit air travel.

विचाराधीन कागज़ में स्पष्ट की गई परिस्थिति को ध्यान में रखते हुए हम हवाई यात्रा की अनुमति दे सकते हैं।

6. प्रशासनिक अनुवाद : समस्याएँ और समाधान

साहित्य किसी भी प्रकार का हो उसका सृजन सोद्देश्य ही होता है। तकनीकी एवं प्रशासनिक सामग्री के अनुवादक जब अंग्रेजी में लिखित विषय–वस्तु को हिन्दी में प्रस्तुत करते हैं तो उसका मूल उद्देश्य होता है अपने पाठक तक सामग्री का सहज, सुबोध सम्प्रेषण। और पाठकों के समझने तथा समझाने का मूलाधार है– अनुवाद में सहज शब्दों की प्रयुक्ति और भाषागत शुद्धता। सामान्यतः हिन्दी के पाठक की यह अपेक्षा होती है कि अनुवाद उसकी बुद्धि के स्तर का हो परन्तु कभी–कभी अनुवादक ऐसी भाषा या शब्दावली का प्रयोग करने के लिए बाध्य हो जाता है जिसे समझने के लिए अंग्रेजी की जानकारी अनिवार्य हो जाती है और हिन्दी भाषिओं को पर्याप्त मानसिक श्रम भी करना पड़ता है। उदाहरण के लिए 'Encumbrance' शब्द का हिन्दी पर्याय है 'विल्लंगम'। अनुवाद में जब 'विल्लंगम' का प्रयोग होता है तो पाठक इसका अर्थ जानने के लिए इसका अंग्रेजी पर्याय ढूँढने लगता है। यहाँ पर प्रशासनिक अनुवाद असफल माना जाता है। ऐसी स्थिति में हमें ऐसे शब्दों का प्रयोग करना चाहिए जो सरल और सुबोध होने के साथ ही प्रचलन में भी हो। इसके बावजूद अगर ठीक–ठाक पर्यायवाची न मिले तो अनूदित शब्द के साथ कोष्ठक में मूल अंग्रेजी शब्द को भी रख दिया जाए। इससे दो फायदे होंगे। एक तो अनूदित शब्द प्रचलन में आएगा और दूसरा पाठक को अनावश्यक कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ेगा।

हमें अनुवाद करते समय अंग्रेजी भाषा के वाक्य विन्यास की बजाय हिन्दी भाषा के वाक्य विन्यास को प्रयोग में लाना होगा। अंग्रेजी वाक्य विन्यास के अनुकरण पर जब हम हिन्दी अनुवाद लिखते हैं, तब यह कितने

बनावटी, अनगढ़ और दुर्बोध होते है यह हम सब जानते हैं। फिर भी एकाध उदाहरण पर नज़र डालें : *'आप कार्यकारिणी के वार्षिक सम्मेलन के, जो जून महीने में होने वाला है, उसके अध्यक्ष चुने गये हैं।'* कहने की बजाय हिन्दी भाषा की प्रकृति के अनुसार सीधे कह सकते हैं : *'कार्यकारिणी के जून में होने वाले वार्षिक सम्मेलन के आप अध्यक्ष चुने गये हैं।'* इस सम्बन्ध में निम्नलिखित अंग्रेजी वाक्य का हिन्दी अनुवाद द्रष्टव्य है:

'Applications are invited from the indian citizens for the under mentioned posts which are temporary but likely to be continued so as to reach the G.M. latest by 12.12.2014.'

इसका अनुवाद किया गया : *'निम्नलिखित पदों के लिए जो अस्थायी हैं, लेकिन उनके चलते रहने की सम्भावना है, भारतीय नागारिकों से आवेदन पत्र आमंत्रित किए जाते हैं ताकि वे जनरल मैनेजर के पास 12.12.2014 तक पहुँच जाए।'* कहने की ज़रूरत नहीं कि यह अनुवाद सरल होते हुए भी ग्राह्य इसलिए नहीं है क्योंकि वाक्य विन्यास हिन्दी की प्रकृति के नहीं बल्कि अंग्रेजी भाषा के है। इसे हिन्दी भाषा की प्रकृति के अनुसार यूँ कहा जा सकता है :

'निम्नलिखित पदों के लिए भारतीय नागरिकों से आवेदन पत्र आमंत्रित किए जाते हैं। उक्त पद अस्थायी हैं किन्तु जारी रहने की सम्भावना है। आवेदन पत्र महाप्रबन्धक के यहाँ दिनांक 12.12.2014 तक या उससे पहले पहुँच जाने चाहिए।'

अक्सर अंग्रेजी के वाक्य हिन्दी की अपेक्षा जटिल और लम्बे होते हैं। उनमें विशेषणात्मक और क्रिया–विशेषणात्मक वाक्यांशों की अधिकता होती है और एक–एक वाक्य में चार–पाँच या उससे भी अधिक क्रियाएँ होने के कारण पूरा वाक्य एक ऐसा मकड़जाल सा बन जाता है जिसमें क्रिया से कर्त्ता और संज्ञा से कारण इतनी दूर हो जाते हैं कि ऐसे वाक्य एक–दो बार पढ़ने से तो सामान्य पाठक की समझ में ही नहीं आते । एक उदाहरण यहाँ द्रष्टव्य है :

'It is unfortunate that inspite of our clarification that the matter regarding applicability of group incentive scheme to the non-essential indirect classified staff is actively under consideration of government, the newly registered office staff association has served fourteen days strike on 02.08. 2014 without following the provision of code of discipline.'

हिन्दी अनुवाद :

यह स्पष्ट किया जा चुका है कि अप्रत्यक्ष वर्गीकृत कर्मचारियों पर भी प्रोत्साहन योजना लागू करने के प्रकरण पर सरकार द्वारा सक्रियता से विचार किया जा रहा है। यह बहुत दुर्भाग्यपूर्ण है कि हमारे इस स्पष्टीकरण के बावजूद हाल ही में पंजीकृत ऑफिस स्टॉफ एसोसिएशन के 'अनुशासन संहिता' के प्रावधानों को अनदेखा करते हुए दिनांक 02.08.2014 को 14 दिन का हड़ताल नोटिस दिया है।

उपर्युक्त अनुवाद को और अधिक स्पष्ट करने की दृष्टि से 'प्रकरण' के बदले 'मुद्दे', 'सक्रियता' के बदले 'गम्भीरता' एवं 'दुर्भाग्यपूर्ण है' की जगह 'दुखद स्थिति यह है' का प्रयोग किया जा सकता है। इस प्रकार 'स्व–पुनरीक्षण'(self vetting) के सहारे हम अपने अनुवाद को बेहतर बना सकते हैं । कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं :

1. 'Unless the context otherwise requires.'
   किया गया अनुवाद : *'यदि सन्दर्भ से अन्यथा अपेक्षित न हो'*।
   प्रस्तावित अनुवाद : *'जब तक कि प्रसंग में अन्यथा अपेक्षित न हो'*।

2. 'Men who sold our house.'
   किया गया अनुवाद : *'ऐसे आदमी जिन्होंने हमारा घर ही बेच डाला'*।
   प्रस्तावित अनुवाद : *'ऐसे सांसद जिन्होंने हमारी संसद की गरिमा को ही नष्ट कर डाला'*।

3. 'Period does not exceed 4 months.'
   किया गया अनुवाद : *'अवधि 4 माह से अनधिक रहती है'* ।
   प्रस्तावित अनुवाद : *'अवधि 4 माह से अधिक की नहीं होगी'* ।

4. 'Further orders will follow.'
   किया गया अनुवाद : *'अगले आदेश पालन करेंगे'*।
   प्रस्तावित अनुवाद : *'अन्य आदेश बाद में जारी किए जाएँगे*।

5. 'Six dead bodies were recovered.'
   किया गया अनुवाद : *'छः मृत शरीर बरामद किए गए'*।
   प्रस्तावित अनुवाद : *'छः शव मिले'*।

6. 'He showed systematic inefficiency.'
किया गया अनुवाद : *'उसने व्यवस्थित अक्षमता दर्शाई'*।
प्रस्तावित अनुवाद : *'उसने जानबूझ कर काम नहीं किया'* ।

7. 'Non retiring documents were presented.'
किया गया अनुवाद : *'सेवानिवृत्ति सम्बन्धी दस्तावेज़ प्रस्तुत किए गए'* ।
प्रस्तावित अनुवाद : *'स्थायी प्रकृति के दस्तावेज़ प्रस्तुत किए गए'*।

8. 'Continuance of special family pension beyond the second life shall not be permissible.'
किया गया अनुवाद : *'दूसरे जीवन के बाद विशेष पारिवारिक पेंशन जारी रखने की अनुमति नहीं होगी'*।
प्रस्तावित अनुवाद : *'विधवा/विधुर की मृत्यु के पश्चात् विशेष पारिवारिक पेंशन जारी रखने की अनुमति नहीं होगी'*।

अनुवाद सम्बन्धी इन भाषिक कठिनाइयों को दूर करने का तरीका यही है कि अनुवादक अंग्रेजी और हिन्दी दोनों भाषाओं के व्याकरण एवं वाक्य संरचनाओं से भलीभाँति परिचित हो और हिन्दी में अनुवाद करते समय अंग्रेजी वाक्य संरचना से अलग होकर अर्थ और सन्दर्भ को दृष्टि में रखकर हिन्दी प्रकृति के अनुरूप अपनी वाक्य–रचना करे। यह भी ध्यान में रखा जाए कि लिखते समय हिन्दी ही लिखी जाए, देवनागरी लिपि में अंग्रेजी न लिखी जाए। इसके कुछ अपने नियम हैं। यदि किसी प्रसंग विशेष में आवश्यकतानुसार उपयुक्त शब्द हमें तत्काल न मिलें तो शब्दों के लिए हमें अटकना नहीं चाहिए, और अंग्रेजी शब्दों को देवनागरी लिपि में लिख देना चाहिए और बाद में सन्दर्भानुसार सही पर्याय का प्रयोग करना चाहिए। कुछ बातें पारिभाषिक शब्दों को लेकर भी हैं। प्रशासनिक अनुवाद में पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग किया जाता है। हर शब्द का एक निश्चित अर्थ होता है। जैसे :

नियम : Rule	Territorial : प्रादेशिक
उपनियम : Sub-rule	Regional : क्षेत्रीय
विनियम : Regulation	Zonal : आँचलिक
अधिनियम : Act	Local : स्थानीय

परन्तु पारिभाषिक शब्दावली सम्बन्धी एक समस्या यह है कि शब्द–निर्माताओं ने अधिकांश शब्द या तो संस्कृत के आधार पर नए बनाए या फिर प्राचीन प्रचलित शब्दों को ही स्वीकार कर लिया है। भारतीय भाषाओं और हिन्दी की प्रचलित उपभाषाओं से बहुत कम शब्द लिए गए हैं। यही कारण है कि बहुत से शब्द आसानी से समझ में ही नहीं आते। जैसे :

Encumbrance	:	विल्लंगम
Hypothecation	:	अड़मान
Accredited	:	प्रत्यायित
Accession	:	परिग्रहण

अनुवाद करते समय कभी–कभी ऐसे अंग्रेजी शब्दों से भी सामना होता है जिनके एक से अधिक अर्थ होते हैं। हिन्दी में अनुवाद करते समय इस बात की सावधानी रखनी पड़ती है कि किस सन्दर्भ में किस शब्द का प्रयोग किया जाए।

स्पष्ट है कि प्रशासनिक हिन्दी में अनुवाद की भूमिका बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। परन्तु एक ख़ास समस्या है और वो है मानसिक समस्या, अर्थात् हमारी मानसिकता। हमें यह निश्चय कर लेना है कि मक्खी के स्थान पर मक्खी मारनेवाला हिन्दी अनुवाद हमें मान्य नहीं... कतई नहीं। इस प्रकार का अनुवाद किसी काम का नहीं है। यह तो समय, शक्ति और पूँजी का अपव्यय ही होगा। इससे तो अच्छा है कि अंग्रेजी बनी रहे। वैसे देखा जाए तो आज अनुवादकों के मार्ग में आने वाली स्थूल समस्याएँ मिट चुकी हैं। लगभग सभी विषयों की शब्दावलियाँ उपलब्ध हैं। अनुवाद प्रशिक्षण भी दिया जा रहा है। गृह मंत्रालय के अधीन केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो अनुवाद प्रशिक्षण का काम कर रहा है। वस्तुतः हमारी समस्या साधनों की नहीं है, मानसिक प्रतिबद्धता की है। जिस दिन राजकाज चलानेवाले यह महसूस करेंगे कि हिन्दी के द्वारा काम करना सच्चे लोकतंत्र की अनिवार्यता है, उसी दिन हिन्दी में काम होने लगेगा, अनुवाद की गति भी तीव्र होकर मौलिक सृजन में बदल जाएगी।

7. प्रशासनिक अनुवाद अभ्यास

क. सामान्य प्रशासनिक अनुवाद अभ्यास– (अंग्रेजी से हिन्दी)

1. सामान्य प्रशासनिक सामग्री :

PRIME MINISTER'S AWARD for excellence in Public Administration for the year 2008-09 presented to **Department of**

Post, Government of India for its outstanding initiative 'Project Arrow - Trasforming India Post.'

हिन्दी अनुवाद :

लोक प्रशासन में उत्कृष्टता के लिए प्रधानमंत्री पुरस्कार, वर्ष 2008–09 के लिए **डाक विभाग, भारत सरकार** को उनकी उत्कृष्ट पहल 'प्रोजेक्ट ऐरो – भारतीय डाक की कायापलट' के लिए प्रदान किया गया ।

2–सामान्य प्रशासनिक सामग्री

In order to provide for a common framework for urban local bodies and help to strengthen the functioning of the bodies as effective democratic units of self-government, Parliament enacted the Constitution(74th Amendment) Act, 1992 relating to municipalities in 1992. The Act received assent of the President on 20 April, 1993. The Government of India notified the 1 June, 1993 as the date from which the said Act came into force. A new part IX-A relating to Municipalities has been incorporated in the constitution to provide for among other things, constitution of three types of Municipalities, *i.e. Nagar Panchayats* for areas in transition from a rural area to urban area, *Municipal Councils* for smaller urban areas and *Municipal Corporation* for larger urban areas, fixed duration of municipalities, appointment of state election commission, appointment of state finance commission and constitution of metropolitan and district planning committees. All States have set up their finance commissions. For conducting elections to urban local bodies, all states/UTs have set up their election commissions. Election to municipal bodies have been completed in all states/UTs except Bihar and Pondicherry where this matter is sub-judice.

अनुवाद :

स्थानीय शहरी निकायों के लिए समान ढाँचा तैयार करने और इन निकायों को स्वायत्तशासी सरकार की एक प्रभावशाली लोकतांत्रिक इकाई के रूप में मजबूत बनाने के कार्य में मदद करने के उद्देश्य से संसद ने अपने 1992 के शीतकालीन अधिवेशन में नगरपालिकाओं से सम्बन्धित संविधान(74वाँ

संशोधन) अधिनियम, 1992 लागू किया था। इस अधिनियम को राष्ट्रपति ने 20 अप्रैल, 1993 को अपनी स्वीकृति प्रदान कर दी। भारत सरकार ने इस सम्बन्ध में अधिसूचना जारी करके जून 1993 से इस अधिनियम को लागू कर दिया है। संविधान में नगरपालिकाओं के सम्बन्ध मे एक नया खंड 9–ए जोड़ दिया गया है, ताकि अन्य चीज़ों के अलावा तीन प्रकार की नगरपालिकाओं का संविधान उपलब्ध कराया जा सके। वे हैं : ग्रामीण से शहरी क्षेत्रों में परिवर्तित हो रहे क्षेत्रों के लिए *नगर पंचायतें,* छोटे शहरी क्षेत्रों के लिए *नगरपालिका परिषदें* और बड़े शहरी क्षेत्रों के लिए *नगर निगम*। निर्धारित अवधि की नगरपालिकाएँ, राज्य निर्वाचन आयोगों की नियुक्ति, राज्य वित्त आयोगों की नियुक्ति और महानगर तथा जिला योजना समितियों का गठन। सभी राज्यों ने अपने वित्तीय आयोगों का गठन कर लिया है। स्थानीय शहरी निकायों का चुनाव कराने के लिए भी राज्यों और केन्द्रशासित प्रदेशों ने अपने निर्वाचन आयोगों का गठन कर लिया है। बिहार और पांडिचेरी को छोड़कर अन्य सभी राज्यों/केन्द्रशासित प्रदेशों की नगरपालिकाओं के चुनाव पूरे हो चुके हैं। उपर्युक्त दोनों राज्यों में मामला न्यायालय में विचाराधीन है।

3–सामान्य प्रशासनिक सामग्री

OFFICIAL LANGUAGE RESOLUTION, 1968

In December, 1967 both the Houses of Parliament adopted a Resolution also on the Official Language Policy of the Government which was notified on 18th January, 1968. According to para 1 of the Resolution, the Central Government is required to prepare and implement a more intensive and comprehensive programme for accelerating the spread and development of Hindi as also to ensure its progressive use for the official purpose of the Union. The Central Government is also required to lay an Annual Assessment Report on the Tables of both the Houses of Parliament giving details of measures taken and the progress achieved in this regard. Necessary action in this regard had been taken continually.

हिन्दी अनुवाद :

राजभाषा संकल्प, 1968

दिसम्बर, 1967 में संसद के दोनों सदनों ने सरकार की भाषा नीति के सम्बन्ध में एक संकल्प भी पारित किया जिसे 18 जनवरी, 1968 को

अधिसूचित किया गया। संकल्प के पैरा 1 के अनुसार केन्द्रीय सरकार हिन्दी के प्रसार तथा विकास और संघ के विभिन्न सरकारी प्रयोजनों के लिए उसके प्रयोग में तेजी लाने के लिए एक अधिक गहन और विस्तृत कार्यक्रम तैयार करके उसे कार्यान्वित करेगी। केन्द्रीय सरकार इस सम्बन्ध में किए गए उपायों तथा उनमें हुई प्रगति का ब्यौरा देते हुए एक वार्षिक मूल्यांकन रिपोर्ट भी संसद के दोनों सदनों के सभा पटल पर प्रस्तुत करेगी। इस सम्बन्ध में निरन्तर आवश्यक कार्रवाई की जाती रही है।

4– *एक प्रशासनिक पत्र– (कार्यालय ज्ञापन)*

No. 34/3/86-P & PW

GOVERNMENT OF INDIA

MINISTRY OF PERSONNEL, PUBLIC GRIEVANCES AND PENSIONS

(Deptt. of Pension & P.W.)

Nirvachan Sadan, New Delhi

Dated 30-05-1986

OFFICE MEMORANDUM

Subject : C.C.S. (Commutation of Pension) Rules, 1981-Submission of application for commutation of pension before the date of retirement regarding–

The undersigned is directed to say that as per rule 13(3)(b) & (c) of C.C.S. (Commutation of Pension) Rules, 1981, official retiring on superannuation is required to submit an application in Form 1-A so as to reach the Head of the Office not later than three months before the date of superannuation so that the authority for payment of commuted portion of pension is issued alongwith the PPO etc. It further provides that no such application shall be entertained if the period is less than three months from the date of superannuation of the Government servant. This matter has been considered by the Government and it has been decided that in case an application for commutation of pension is received late, it should not be rejected on the ground of delay. In such cases, if possible, the Accounts Officer, should issue authority for payment of commuted value alongwith the Pension Payment Order, otherwise authority for

payment of commuted value should be issued as soon as possible after the issue of the Pension Payment Order. In any case, If application for commutation of pension is received by the Head of Office on or before the date of retirement of the Govt. servant, commutation of pension shall become absolute on the date following the date of retirement.

sd/-
S. V. Sngh
Dy. Secretary to the Govt. of India

To,
All Ministries/Departments of Govt. Of India.

हिन्दी अनुवाद :

संख्या 34/3/86–पी. एण्ड पी. डब्ल्यू

भारत सरकार

कार्मिक लोक शिकायत तथा पेंशन मंत्रालय

(पेंशन तथा पेंशनभोगी कल्याण विभाग)

निर्वाचन सदन

नई दिल्ली, दिनांक 30 मई, 1986

कार्यलय ज्ञापन

विषयः केन्द्रीय सिविल सेवा (पेंशन का संराशीकरण) नियमावली, 1981– सेवानिवृत्ति की तारीख से पहले पेंशन के संराशीकरण के लिए आवेदन प्रस्तुत करने के सम्बन्ध में।

मुझे यह कहने का निदेश हुआ है कि केन्द्रीय सिविल सेवा (पेंशन का संराशीकरण) नियमावली, 1981 के नियम 13(3) (ख) तथा (ग) के अनुसार, अधिवर्षिता पर सेवानिवृत्ति होने वाले कर्मचारी को फार्म 1–क में एक आवेदक को पत्र इस प्रकार प्रस्तुत करना होता है कि वह अधिवर्षिता की तारीख से अधिक से अधिक तीन मास के भीतर कार्यालयाध्यक्ष के पास पहुँच जाए ताकि पेंशन भुगतान आदेश आदि के साथ ही पेंशन के संराशीकरण के भुगतान के लिए प्राधिकार जारी किया जा सके। इसके अतिरिक्त इसमें यह व्यवस्था भी है कि ऐसे किसी आवेदन–पत्र पर विचार नहीं किया जाएगा, यदि यह अवधि सरकारी कर्मचारी की अधिवर्षिता की तारीख से तीन मास पहले दिया जाता है। उक्त मामले पर सरकार ने विचार किया है तथा यह

निर्णय किया है कि यदि पेंशन के सरांशीकरण के लिए आवेदन पत्र देरी से प्राप्त होता है तो, इसे देरी से प्राप्त होने के कारण रद्द नहीं किया जाना चाहिए। ऐसे मामलों में, यदि सम्भव हो, तो लेखा अधिकारी को पेंशन भुगतान आदेश के साथ ही संराशीकृत मूल्य के भुगतान के लिए प्राधिकार जारी करना चाहिए अन्यथा संराशीकृत मूल्य के भुगतान के लिए प्राधिकारी पेंशन भुगतान आदेश जारी होने के बाद यथा सम्भव शीघ्र जारी किया जाना चाहिए। यदि किसी मामले में, कार्यालयाध्यक्ष को सरकारी कर्मचारी की सेवानिवृत्ति की तारीख को अथवा उससे पहले पेंशन के संराशीकरण के लिए आवेदन प्राप्त होता है तो पेंशन का संराशीकरण सेवानिवृत्ति की तारीख से आगामी तारीख को पूर्ण होगा।

हस्ता.
(एस. वी. सिंह)
उप सचिव, भारत सरकार

सेवा में,

भारत सरकार के सभी मंत्रालय/विभाग

इस प्रकार हमने देखा कि प्रशासनिक भाषा कर्मवाच्य प्रधान एवं अभिधापरक होने के कारण इसमें प्रशासनिक पारिभाषिक शब्दावली की महत्ता बढ़ जाती है। अभ्यास के आधार पर सुन्दर एवं बोधगम्य प्रशासनिक अनुवाद किया जा सकता है।

8. बोध प्रश्न

1. प्रशसनिक हिन्दी की विशेषताओं को रेखांकित कीजिए ?

.....

.....

.....

2. निम्नलिखित शब्दों का अंग्रेजी पर्याय लिखिए ?

सह–पत्र - .....
नामे प्रविष्टि - .....
निर्धन वर्ग - .....
आडमान (बैंक में दृष्टिबंधक)- .....
अधिरोपण- .....
गुप्त बैठक - .....

सम्पर्क अधिकारी - .....

परंतुक - .....

सरकारी उपक्रम - .....

स्थायीवत - .....

पुस्तकाध्यक्ष - .....

अनुरक्षण अधिकारी - .....

3. निम्नलिखित शब्दों का हिन्दी पर्याय लिखिए ?

Bureaucracy - .....

Absorption - .....

Extradition treaty - .....

Abuse of power - .....

Acceptance of office - .....

Election Commissioner - .....

Employment Officer - .....

Ex-cadre post - .....

Ex-Officio chairman - .....

Building language - .....

Capital investment - .....

4. निम्नलिखित वाक्यों का हिन्दी अनुवाद कीजिए ?

क- A chronological summary of the case is placed below.

.....

ख- Unless the context otherwise requires.

.....

ग- Inspite of repeated reminders, the information has not been received so far.

.....

.....

5. निम्नलिखित पैरा का हिन्दी अनुवाद कीजिए ?

Continuous efforts have been made by the Ministries/Departments of the Central Government to accelerate the use of Official language Hindi in their attached/subordinate

offices, undertakings, corporations, banks etc., also. As a result, there has been improvements in the progressive use of Hindi in many spheres in the year 1996-97 as compared to the year 1995-96. However, targets laid down for many items in the Annual Programme for the year 1996-97 could not be achieved. In such cases attention of the concerned offices was drawn towards the deficiencies receipt of the quarterly reports and at the time of inspection of Ministries/Departments, undertakings, attached and subordinate offices etc.

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

9. सारांश

स्वतंत्रता–संग्राम के दौरान हिन्दी सम्पर्क भाषा एवं राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित हो चुकी थी। वही हिन्दी आज़ादी के बाद राजकाज और प्रशासन के क्षेत्रों में अपनी नई भूमिका एवं नए स्वरूप के साथ अवतरित हुई जिसे 'प्रशासनिक हिन्दी' कहा गया। इसमें लक्षणा और व्यंजना का प्रयोग न होकर आमतौर पर अभिधा का प्रयोग होता है ताकि वह पठनीय एवं बोधगम्य हो। कार्यालयी हिन्दी तथ्यात्मक होती है और इसमें पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग किया जाता है। इसमें सरल और छोटे–छोटे वाक्यों का प्रयोग ही श्रेयस्कर होता है, न कि मिश्रित और संयुक्त वाक्यों का। प्रशासनिक अनुवाद में प्रशासनिक पारिभाषाक शब्दावली का प्रयोग अनिवार्य है। यदि किसी प्रसंग विशेष में आवश्यकतानुसार उपयुक्त शब्द हमें तत्काल न मिलें तो शब्दों के लिए हमें अटकना नहीं चाहिए, और अंग्रेजी शब्दों को देवनागरी लिपि में लिख देना चाहिए और बाद में सन्दर्भानुसार सही पर्याय का प्रयोग करना चाहिए। यह भी कि अनुवाद को बोधगम्य बनाने के लिए हमें अंग्रेजी भाषा के वाक्य विन्यास की बजाय हिन्दी भाषा के वाक्य विन्यास को प्रयोग में लाना होगा।

10. बोध प्रश्नों के उत्तर

1. देखें भाग 3.2

2. Covering letter
   Debit entry
   Have-nots
   Hypothecation
   Imposition
   In camera meeting
   Liaison Officer
   Proviso
   Public undertaking
   Quasi permanent
   Librarian
   Maintainance Officer

3. दफ्तरशाही / नौकरशाही / अधिकारी तंत्र
   आमेलन / अंतर्लयन
   प्रत्यर्पण संधि
   शक्ति का दुरुपयोग
   पद स्वीकृति
   निर्वाचन आयुक्त
   रोजगार अधिकारी
   संवर्ग बाह्य पद
   पदेन अध्यक्ष
   आकर भाषा
   पूँजी निवेश

4. क– इस मामले का तारीख–वार सारांश निम्नलिखित है।
   ख– जब तक कि प्रसंग में अन्यथा अपेक्षित न हो।
   ग– बार–बार अनुस्मारक भेजने के बावजूद अभी तक सूचना नहीं मिली है।

5. भारत सरकार के मंत्रालयों / विभागों द्वारा अपने सम्बद्ध, अधीनस्थ कार्यालयों, उपक्रमों, निगमों, बैंकों आदि में भी राजभाषा हिन्दी का प्रयोग बढ़ाने के लिए निरन्तर प्रयास किए गए हैं। इन प्रयासों के फलस्वरूप 1995–96 की तुलना में वर्ष 1996–97 में विभिन्न क्षेत्रों में हिन्दी के

प्रगामी प्रयोग में सुधार हुआ है तथापि 1996–97 के वार्षिक कार्यक्रम में जो प्रावधान किए गए उनकी तुलना में कई मदों में वांछित लक्ष्य प्राप्त नहीं हो सके। ऐसे मामलों में तिमाही प्रगति रिपोर्टों के प्राप्त होने पर तथा मंत्रालय/विभागों, उपक्रमों, सम्बद्ध, अधीनस्थ कार्यालयों आदि में निरीक्षणों के समय सम्बन्धित कार्यालयों का ध्यान आकर्षित किया जाता रहा है।

इकाई–3 : सृजनात्मक सामग्री का अनुवाद

रूपरेखा

1. उद्देश्य
2. प्रस्तावना
3. सृजनात्मक साहित्य और अनुवाद
    - 3.1 सृजनशील लेखक और अनुवादक
    - 3.2 सृजनात्मक सामग्री का अनुवाद
4. सृजनात्मक विधाओं का अनुवाद
    - 4.1 काव्यानुवाद
    - 4.2 कथा साहित्य का अनुवाद
    - 4.3 निबन्ध साहित्य का अनुवाद
    - 4.4 नाटक का अनुवाद
5. बोध प्रश्न
6. सारांश
7. बोध प्रश्नों के उत्तर

1. उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- सृजनात्मक सामग्री के अनुवाद का सामान्य परिचय पा सकेंगे;
- सृजनशील लेखक और अनुवादक के सम्बन्ध को रेखांकित कर सकेंगे;
- सृजनात्मक विधाओं की अनुवाद–प्रक्रिया को समझ सकेंगे;
- काव्य, नाटक, कहानी, निबन्ध आदि विभिन्न सृजनात्मक विधाओं के अनुवाद से परिचित होंगे;

2. प्रस्तावना

सृजनात्मक साहित्य के अनुवाद से परिचय कराने की दृष्टि से प्रस्तुत अध्याय 'सृजनात्मक सामग्री का अनुवाद' में साहित्यानुवाद का सामान्य परिचय देते हुए सृजनशील लेखक और अनुवादक के सम्बन्ध को भी स्पष्ट किया गया है। इसके अलावा विभिन्न सृजनात्मक विधाओं (काव्य, नाटक, कहानी, निबन्ध आदि) के अनुवाद की चर्चा भी सविस्तार–सोदाहरण की गई है।

3. सृजनात्मक साहित्य और अनुवाद

'अनुवाद' एक जटिल और संश्लिष्ट क्रिया है। समस्या इसकी संगिनी है। अनुवाद समस्या रहित हो ऐसा हो ही नहीं सकता। कहने का मतलब जहाँ भी अनुवाद होगा कुछ न कुछ समस्या उसके साथ अवश्य होगी, चाहे वो कार्यालयीन सामग्री का अनुवाद हो या साहित्यिक सामग्री का, तकनीकी विषय का हो या विधिक सामग्री का। हाँ, कुछ समस्याएँ सुलझ जाती हैं जबकि कुछ के साथ समझौता करना पड़ता है। क्या समस्या और कैसी समस्या; क्या समाधान और कैसी सुलह; आगे चर्चा की जा रही है।

3.1 सृजनशील लेखक और अनुवादक

साहित्यिक लेखन एक सृजनात्मक क्रिया है। सृजनात्मक साहित्य के अन्तर्गत कविता, कहानी, उपन्यास आदि साहित्यिक विधाओं को शामिल किया जाता है। सृजनात्मकता के मुख्य आधार तत्त्व हैं– अनुभूति, भाव, कल्पना आदि। साहित्य में (विशेषकर कविता में) प्रयुक्त भाषा बिम्बों, प्रतीकों के कारण लक्षणा और व्यंजना प्रधान होती है साथ ही उसमें मूल लेखक के देश–काल, संस्कृति, भाषिक सन्दर्भ आदि के तत्त्व भी जुड़े रहते हैं।

सृजनशील लेखक और अनुवादक, दोनों में अन्तर है भी और नहीं भी क्योंकि सृजन के प्रति दोनों के दृष्टिकोण या अप्रोच में कुछ समानताएँ होने के साथ–साथ कुछ असमानताएँ भी हैं। पहले हम सृजनशील लेखक और अनुवादक के बीच क्या समानताएँ हो सकती हैं, उसकी चर्चा करते हैं। इसके लिए हम महान् पाश्चात्य चिन्तक, दार्शनिक, विचारक अरस्तू के चर्चित अनुकरण सिद्धान्त (Theory of Imitation) का सहारा लेंगे। अनुकरण सिद्धान्त के अनुसार कवि या सृजनशील लेखक अपने भाषा चातुर्य से यथार्थ का अनुकरण करता है। उसे संसार से जो अनुभव प्राप्त होता है उसको अपनी भाषा या चातुर्य के माध्यम से काव्य या कि कला में मूर्त रूप प्रदान करता है, जबकि अनुवादक कवि/लेखक का अनुकरण करता है या यों कहें कि व्यक्त (यथार्थ) संसार की अनुकृत कवि/लेखक का अनुकरण करता है या यों कहें कि व्यक्त (यथार्थ) संसार की अनुकृत अभिव्यक्ति (imitated expression of the world) का अनुकरण करता है। अतः सृजनशील लेखक और अनुवादक, दोनों अनुकरण करते हैं। इस प्रक्रिया में दोनों अनुभव, भाषा और अभिव्यक्ति–कौशल के स्तर पर एक सी रचना–प्रक्रिया से गुज़रते हैं। अब दोनों के बीच स्थित अन्तर पर विचार करते हैं। विषय के प्रतिपादन की

दृष्टि से विचार करें तो, सृजनशील लेखक किसी भी वस्तु या विषय के प्रति आकृष्ट होकर उस विषय को भाषा चातुर्य के माध्यम से एक नया रूप देता है, जिसे हम काव्य/साहित्य कहते हैं। इसे दूसरे शब्दों में कहें तो, सृजनशील लेखक मूलतः विषय के चयन–प्रवर्तन–विस्तारण में स्वतन्त्र रहता है। इसके विपरीत अनुवादक को मूल लेखक के द्वारा चुने गये विषय को ही स्वीकारना पड़ता है। अतः अनुवादक स्वतन्त्र न होकर मूल रचनाकार पर आश्रित रहता है।

साहित्यानुवाद को मौलिक सृजन तथा सृजनशील–अनुवादक को सृजनकर्त्ता की कोटि में रखा जाए या नहीं– यह हमेशा विद्वानों के बीच विवाद का विषय रहा है। इस सम्बन्ध में हरिवंशराय बच्चन के विचार द्रष्टव्य हैं : 'मैं अनुवाद को, यदि मौलिक प्रेरणाओं से एकात्म होकर किया गया हो, मौलिक सृजन से कम महत्त्व नहीं देता।' ज़ाहिर है कि अनुवादक कोई नूतन विषय नहीं रचता अपितु सृजन का पुनःसृजन (recreation) करता है। कुछ विद्वान इसे अनुसृजन (transcreation) की संज्ञा देते हैं। इस दृष्टि से अनुवाद कर्म को मौलिक सृजन की कोटि में रखने के मुद्दे पर प्रश्न चिह्न लग जाता है। खैर, अनुवाद कर्म को मौलिक–सृजन न माना जाए तो न सही, कम–से–कम मौलिक–सृजन के बराबर इसे एक सृजन व्यापार तो माना जाना चाहिए।

3.2 सृजनात्मक सामग्री का अनुवाद

अनुवाद के क्षेत्र में सृजनात्मक साहित्य का अनुवाद निरन्तर विवाद से ग्रसित रहा है। प्रायः यह माना जाता रहा है कि यह एक 'असम्भव' कार्य है। दरअसल, "There is no such thing as translation.", "All translation is a compromise." व "Traduttore traditore" जैसी उक्तियाँ विशेषकर साहित्यिक अनुवाद के सन्दर्भ में ही कही गयी हैं। इसमें कोई दो राय नहीं कि 'साहित्यिक अनुवाद' दूसरे विषय क्षेत्र के अनुवाद की तुलना में अपेक्षाकृत कठिन होता है। परन्तु कठिनता 'साहित्यिक अनुवाद' की प्रगति में आड़े नहीं आती। हम सब जानते हैं कि साहित्यिक कृतियों का उत्कृष्ट अनुवाद हर युग में होता रहा है, भले ही वह पूर्णतः भिन्न प्रकृति की भाषा में क्यों न हो। कविता या अन्य किसी साहित्यिक सामग्री का परिपूर्ण अनुवाद सम्भव न हो तो भी अधिक से अधिक प्रामाणिक भावानुवाद या सारानुवाद तो किया ही जा सकता है। अनुवाद–विज्ञान क्षेत्र के विशेषज्ञ यूजीन अ नाइडा का भी यह मानना है : "Rather than being impressed by the impossibilities of translation, anyone who is involved in the realities of translation in

broad range of languages, is impressed that effective interlingual communication is always possible, despite seemingly enormous differences in linguistic structures and cultural feature."। अतः साहित्यिक अनुवाद में परिपूर्ण अनुवाद करने के फेरे में न पड़कर, यथासम्भव प्रामाणिक भावानुवाद या सारानुवाद करना ही हमारा लक्ष्य होना चाहिए। इसके लिए हमें मूल रचनाकार के साथ तादात्म्य स्थापित कर मूल रचना की आत्मा को पहचानना होगा। उमर ख़ैयाम की रुबाइयों के सफल और सटीक अनुवादक के रूप में चर्चित हरिवंशराय बच्चन जी 'साहित्यानुवाद, संवाद और संवेदना' में लिखते हैं, ''मूल कृति से रागात्मक सम्बन्ध जितना अधिक होगा, अनुवाद का प्रभाव उतना ही बढ़ जाएगा। वस्तुतः सफल अनुवाद वही है जो अपनी दृष्टि भावों/कथ्य/आशय पर रखे। साहित्यानुवाद में शाब्दिक अनुवाद सुन्दर नहीं होता। एक भाषा का भाव या विचार जब अपने मूल भाषा–माध्यम को छोड़कर दूसरे भाषा–माध्यम से एकात्म होना चाहेगा तो उसे अपने अनुरूप शब्दराशि संजोने की छूट देनी ही होगी। यहाँ पर अनुवादक की प्रतिभा काम करती है और अनुवाद मौलिक सृजन की कोटि में आ जाता है।'' (पृष्ठ–85) परन्तु कुछ विद्वानों का कहना है कि, असफल लेखक अनुवादक बन जाता है :

> Such is our pride, our folly or our fate,
> the few, but such as can't write, translate. (डेनहम)

साहित्यिक अनुवाद के सन्दर्भ में यह बात पूर्णतः लागू नहीं होती। सच तो यह है कि एक सफल साहित्यकार ही एक सफल साहित्यिक अनुवादक बन सकता है। फिष्ट्ज़जेरल्ड, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, रामचन्द्र शुक्ल, प्रेमचन्द, हरिवंशराय बच्चन, अज्ञेय, धर्मवीर भारती, निर्मल वर्मा, उदय प्रकाश जैसे अनगिनत साहित्यकार इसके पुख्ता प्रमाण हैं। मगर यह भी ज़रूरी नहीं कि हर साहित्यिक अनुवादक एक साहित्यकार ही हो। कई अनुवादक ऐसे भी हैं जिन्होंने अपनी नैसर्गिक सृजनात्मक प्रतिभा के सहारे सफल 'साहित्यिक अनुवाद' कर दिखाये हैं।

4. सृजनात्मक विधाओं का अनुवाद

4.1 काव्यानुवाद

साहित्यिक अनुवाद के क्षेत्र में काव्यानुवाद निरन्तर विवाद से ग्रसित रहा है और इसकी असम्भाव्यता जगजाहिर है। विक्टर ह्यूगो 'काव्यानुवाद' को एक

असम्भव व्यापार मानते हुए कहते हैं : 'A translation in verse seems to me something absurd, impossible.' सेमुअल जॉनसन कहते हैं : 'Poetry, sir can't be translated.' ऐसे ही हायने का मानना है : 'Translation in verse is as engaged in straw plating sunbeams.' परन्तु काव्यानुवाद के सन्दर्भ में जॉक देरिदा के एक कथन का यहाँ उल्लेख करना बहुत ही प्रासंगिक होगा 'अनुवाद में उतना ही आवश्यक है जितना कि असम्भव'। यही कारण है कि 'काव्यानुवाद', अनुवाद की आवश्यकता और असम्भाव्यता दोनों को समान्तर धरातल पर साथ–साथ लेकर निरन्तर आगे बढ़ता आया है। काव्यानुवाद के बारे में क्रिस्तोफर कॉडवेल की यही मान्यता रही है कि कविता लयात्मक होती है, साथ ही अप्रतीकता द्वारा आविष्कृत 'अ–विवेकत्व' गुण विशेषता के कारण कविता का अनुवाद सम्भव नहीं होता। कॉडवेल 'काव्यानुवाद' की असंभाव्यता के लिए जिन कारणों की ओर इशारा करते हैं उसे विस्तार से कहें तो कविता अलंकार, बिम्ब विधान, कल्पना, रस–छन्द योजना, लय आदि कई विशेषताओं से युक्त होती है। अनुवाद में इन सभी विशेषताओं को पूर्णतः सुरक्षित रख पाना सम्भव नहीं होता। इतना ही नहीं, कई कविताएँ लयात्मकता या नादमयता के साथ–साथ द्विअर्थात्मकता लिए होती है जिसे अनुवाद में हूबहू उतारना शायद ही सम्भव हो। काव्यानुवाद के सन्दर्भ में इतना तो स्पष्ट है कि इसमें परिपूर्ण अनुवाद कभी सम्भव नहीं है। ऐसे में हुम्बोल्त का यह कथन सही प्रतीत होता है–''सारा अनुवाद कार्य बस एक असमाधेय समस्या का समाधान खोजने के लिए किया गया प्रयास मात्र है।' इसलिए काव्यानुवाद में 'पूर्ण अनुवाद' के बदले 'प्रामाणिक भावानुवाद या सारानुवाद' की बात की जाती रही है। समय–समय पर विद्वानों द्वारा उठाए गए निम्नलिखित सवालों ने ही काव्यानुवाद को विवादास्पद बना दिया है :

1. ऐतिहासिक, प्राचीन कविता के अनुवाद में अनुवादक को उस समय प्रचलित भाषा का प्रयोग करना चाहिए या समकालीन भाषा का?

2. काव्यानुवाद में अनुवादक को कितनी छूट दी जानी चाहिए यानि अनुवादक अपनी ओर से कितनी छूट ले सकता है ?

3. जब कोई कवि+अनुवादक काव्यानुवाद में तल्लीन होता है तब वह केवल अनुवादक न रह कर अनुवादक+सर्जक बन जाता है। ऐसे में अनुवाद अनुवाद न रह कर एक नयी कविता बन जाती है। प्रश्न उठता है कि कवि अनुवादक को अनुवादक कहा जाए या कि अनुसृजक ? अनूदित कविता को अनुवाद कहा जाए या अनुसृजन ?

4. किसी काव्य–कृति का अनुवाद कभी–कभी मूल के दोषों को बढ़ा देता है और उसके सौन्दर्य को नष्ट कर देता है। इसलिए कुछ विद्वानों ने यह राय भी व्यक्त की है कि कविता के अनुवाद का अधिकार केवल मूल लेखक को ही होना चाहिए, जैसा कि विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने अपनी बांग्ला 'गीतांजलि' का काव्यानुवाद अंग्रेजी में स्वयं किया था।

इनकी संक्षिप्त चर्चा यहाँ आवश्यक है। ऐतिहासिक–प्राचीन कविता के अनुवाद में अनुवादक को चाहिए कि वह अपनी समकालीन भाषा को प्रयोग में लाए। किसी कृति के अनुवाद के पीछे जो मूलभूत उद्देश्य होता है वह भी समकालीन भाषा प्रयोग को ही समर्थन देता है। अंग्रेजी के प्राचीन कवि चौसर के 'A Prologue to Canterbury Tales' का आधुनिक अँग्रेजी अनुवाद इस कथन का समर्थन करता है।

आज भी श्रीमद्भागवद, गीतगोविन्द, रामचरितमानस, अभिज्ञान शाकुन्तलम्, मेघदूतम् आदि प्राचीन साहित्य के अनुवाद आधुनिक भाषाओं में हो रहे हैं। जहाँ तक अनुवादक को मिलने वाली छूट की बात का प्रश्न है, यह प्रश्न अभी भी विवादों के घेरे में है। यहाँ बस इतना कहा जा सकता है कि, पद्यानुवाद में अनुवादक को न तो एक सीमा में बाँधा जा सकता है न ही उसे पूरी आज़ादी दी जा सकती है। परन्तु इसे एक नियम के रूप में भी नहीं स्वीकारा जा सकता क्योंकि यह मूलतः अनुवादक की सृजनशील प्रतिभा पर ही निर्भर करता है कि वह मूल–पाठ का शब्दानुवाद कर बैठा है या कि मूल के आधार पर एक नई कृति। अँग्रेजी कवि ड्राइडन ने Epistle के अनुवाद की भूमिका में साहित्यिक अनुवाद के तीन भेद स्वीकारे हैं :

1. Metaphase- जहाँ शब्दशः अनुवाद किया जाता है।
2. Paraphase- जहाँ अनुवादक अपनी ओर से कभी छूट लेता है।
3. Imitation- जहाँ अनुवादक मूल के कुछ संकेतों को ग्रहण करता हुआ पूर्ण स्वतन्त्रता का प्रदर्शन करता है।

अब कवि+अनुवादक के काव्यानुवाद को लेते हैं। जैसा कि पहले भी कहा जा चुका है कि कवि+अनुवादक का काव्यानुवाद मूल का एक नया रूप लेकर जन्म लेता है जिसमें अनुवाद का कम और नई कविता की ज्यादा गंध होती है। कदाचित् इसलिए नौवालिस ने कहा था 'काव्यानुवाद एक नयी कविता के निर्माण के अनुरूप है'। मगर अंग्रेजी कवि पी.बी. शैली सृजनात्मक अनुवाद को न तो सृजनात्मक मानते हैं और न ही अनुकरणात्मक, बल्कि इसे एक कलात्मक प्रक्रिया मानते हैं। उनका कहना है–''अनुवाद का काम न तो सृजनात्मक है और न ही अनुकरणात्मक कला है। अनुवाद में अनुवादक की

प्रेरणा काम नहीं करती, इसलिए अनुवाद–कार्य सृजनात्मक नहीं होता। अनुवादक तो कृति के अनुरूप सृजन करता है, मगर कृति में निहित विचार को मात्र प्रस्तुत नहीं करता, उसको रूपायित भी करता है। इसलिए अनुवाद–कार्य अनुकरणात्मक भी नहीं होता, अनुवादक एक प्रकार का स्रष्टा है जो लेखक के यथार्थ के सम्मुख अपने को समर्पित करता है... अनुवाद एक कलात्मक प्रक्रिया होती है।'' अतः काव्यानुवाद को मौलिक सृजन के समकक्ष एक 'सृजनात्मक कला' मानना चाहिए। जहाँ तक मूल रचना के गुण–दोष के परिवर्तन या परिवर्द्धन का प्रश्न है, काव्यानुवाद में ऐसा हो जाना अनुवादक की मजबूरी है, जहाँ वह दो संस्कृतियों के बीच स्थित समानताओं के बीच साँस लेता है और असमानताओं के बीच जूझता है। चूँकि काव्य–कला पर शब्द–चातुर्य का बोलबाला होता है, अतः इसके पूर्ण अनुवाद की अपेक्षा करना ज़रूरी नहीं है। किसी अनुवादक द्वारा किये गये अनुवाद को न तो अन्तिम एवं सर्वमान्य माना जाए, न ही मूल–पाठ की अनुप्रमाणित प्रतिलिपि। मेरे विचार से हर काव्यानुवाद का पुनः और पहले से बेहतर अनुवाद किया जा सकता है।

विद्वानों का मूल लेखक द्वारा ही कविता का अनुवाद करने/कराने वाली बात उतनी ही अव्यावहारिक प्रतीत होती है जितनी कि गाय के दूध से बने घी को गाय को ही खिलाना। यह ज़रूरी नहीं कि हर लेखक अपनी रचनाओं का अनुवाद खुद ही करे, फिर इस बात पर भी गौर किया जाए कि एक लेखक अपनी रचनाओं का किन–किन भाषाओं में अनुवाद करता फिरे ?

खैर इतना तो निर्विवाद है कि काव्यानुवाद में शब्दशः अनुवाद को नकारा गया है। इसके पीछे जो तर्क है, वह यह है कि काव्यानुवाद भी एक कविता का आस्वाद दे। वह भी एक कविता लगे, न कि 'शब्दों का बरबस समाहार'। मुझे यहाँ एक अँग्रेजी कविता का हिन्दी अनुवाद स्वतः याद आ रहा है, जो काव्यानुवाद का उत्तम उदाहरण हो सकता है–

मूल–पाठ :

No, all the things once left unuttered
Our duty bids must now be said,
Once falsehood is a loss to us
And only truth can be accepted;
Who zealously conceals the past
Will hardly get on with the future.

(-Alaxander Tvardovsky. from 'By Right of Memory'
poem written in 1968 and published in 1986)

हिन्दी अनुवाद :

नहीं, वो सबकुछ जो रह गया अनकहा
फर्ज़ का तक़ाज़ा है हम आज सब कहें
हर झूठ से हम कितना कुछ खोते हैं
इसलिए सच, केवल सच हमें मान्य है
जो जबर्दस्ती अतीत पर पर्दा डालते हैं
उनके हाथ भविष्य एकदम सुरक्षित नहीं

(–अलेकजैण्डर वारडेस्की, 'याददाश्त का अधिकार' 1968 में लिखी और 1986 में प्रकाशित कविता से उद्धृत)

कहने की ज़रूरत नहीं कि यह हिन्दी अनुवाद हिन्दी भाषा की प्रकृति के अनुसार खुद को ढाल लेने के कारण ही बहुत ही सफल, सुन्दर, सटीक बन पड़ा है। बोल्ड की गयी पंक्तियों की तुलना में बातें स्पष्ट हो जाती हैं। इसका समर्थन करते हुए फिट्जजेरल्ड ने उमर खैयाम की रूबाइयों का अँग्रेजी अनुवाद करते समय कहा था कि 'भूसा भरे गिद्ध की अपेक्षा में जीवित गौरैया चाहूँगा।' दरअसल काव्यानुवाद में अनुवादक का काम कविता की बीज रूपी आत्मा का पता लगाना है । शैली का यह कथन 'पौधे को बीज से फूटना पड़ता है, नहीं तो उसमें फूल नहीं खिलेंगे', काव्यानुवाद पर पूर्णतः लागू होता है। उदाहरण के लिए, 'कमल के फूल कुम्हलाने लगे हैं/अब तो पानी बदल दो' का अँग्रेजी अनुवाद करना हो तो हम 'Lotus flowers have started deceasing/so, the water must be changed' नहीं कह सकते। हमें कविता की तह में जाकर, कविता की आत्मा को पहचान कर उसमें निहित सन्देश/ अर्थ को समझना पड़ता है। 'कमल के फूल कुम्हलाने लगे हैं/ अब तो पानी बदल दो' के मूल सन्दर्भ को जब समझ जाएँगे तो पाएँगे कि इसमें कवि न तो 'कमल फूल' की बात करना चाहता है और न ही ''पानी बदलने'' की चाहत। बल्कि इसके माध्यम से कवि सामाजिक बदलाव पर जोर दे रहा है। अतः इसका सटीक अनुवाद होगा, 'Social system has been paralised/it needs renovation'. अतः सफल काव्यानुवाद सम्पूर्ण रूप से आत्मसातीकरण पर निर्भर होता है जिसमें भाषा के साथ–साथ लेखक के युग व समय के साथ जुड़ना पड़ता है। अगर कहें कि अनुवादक को मूल लेखक की दुनिया को फिर से जीना होता है तो शायद गलत न होगा। इसके बावजूद अनुवादक के व्यक्तित्व और युगबोध के कारण उसकी भाषा के प्रयोग में वैचारिक, व्यक्तिगत तथा भाषिक शक्तियों का प्रभाव उभर आता है, जिसके

परिणामस्वरूप भिन्न–भिन्न आस्वाद प्राप्त होते हैं। उदाहरण के लिए शेक्सपियर के सानेट की दो पंक्तियों का बांग्ला अनुवाद देखें :

मूल :

Shall I compare thee to a summer's day?
Thou art more lovely and more temperate.

–Shakespeare

अनुवाद–1

बसन्त दिनेर सने करिब कि तोमार तुलना?
तुमि आर ओ कमनीय, आर ओ स्निग्ध, नम्र सुकुमार।

–सुधीन्द्रनाथ दत्त

अनुवाद–2

तोमार उपमा आमि देब नाकि बसन्तेर दिने
तुमि आरो रमणीय, शीते–उष्णे आरो ये सुषम।

–विष्णु दे

यहाँ 'lovely' शब्द के लिए दत्त जी ने कमनीय, स्निग्ध, नम्र, सुकुमार जैसे शब्दों का प्रयोग किया है जिसमें 'temperate' की व्यंजना नहीं मिलती जबकि विष्णु दे जी ने मूल कविता के समानान्तर 'शीते–उष्णे आरो ये सुषम' का प्रयोग किया है।

अब नीग्रो अमरीकी कवि लैंग्स्टन ह्यूजेज़ की एक कविता के अनुवाद को देखें :

मूल :

***As I Grew Older**

It was a long time ago
I have almost forgotten my dream.
But it was there then,
In front of me
Bright like a sun
My dream.
And then the wall rose
Rose slowly
Slowly
Between me and my dream

Rose slowly slowly
Dimming
Hiding
The light of my dream
Rose, until it touched the sky
The wall.

–Langston Huges

अनुवाद–1

सपना और दीवाल

बहुत दिन हो गए
मैं अपने सपने को लगभग भूल चुका था
लेकिन सपना अनश्वर था
मेरे सामने
झिलमिलाते हुए सूरज की तरह
मेरा सपना।
और फिर दीवाल उठी
धीरे–धीरे
मेरे और मेरे सपने के बीच
उठती गई धीरे–धीरे
मेरे सपने की रोशनी को
धुँधला करते हुए
रोशनी का गला घोटते हुए
यहाँ तक कि आकाश चूमने लगी
वह दीवाल।

–धर्मवीर भारती

अनुवाद–2

बुढ़ापे का गीत

बहुत दिन बीत गए
मैं अपना सपना लगभग भूल चुका हूँ।
लेकिन तब...तब वह था
एक ज्योतिर्वान सूर्य की भाँति, मेरे सामने ही

था मेरा सपना।
और उसके बाद उगी दीवार
धीरे–धीरे उगती गई
मेरे और मेरे सपने के बीच
धीरे–धीरे उगती गई
मेरे सपने की ज्योति को धुँधलाती, छिपाती
उगती गई : जब तक कि बढ़कर आकाश नहीं छू लिया
(ऐसी) दीवार।

–दूधनाथ सिंह

अब दोनों की तुलना करते हैं :

मूल–16 पंक्ति	धर्मवीर भारती–15 पंक्ति	दूधनाथ सिंह–12 पंक्ति
As I Grew older I have forgotten But it was there then Bright like a sun Hiding	सपना और दीवाल मैं भूल चुका था लेकिन सपना अनश्वर था झिलमिलाते हुए सूरज की तरह रोशनी का गला घोटते हुए	बुढ़ापे का गीत भूल चुका हूँ लेकिन तब...तब वह था एक ज्योतिर्वान सूर्य की भाँति छिपाती

उपर्युक्त तुलना से स्पष्ट हो जाता है कि भारती जी ने कवि़अनुवादक (सर्जक) की भूमिका निभाई है तो सिंह जी ने मूल को समर्पित अनुवादक की। एक ओर भारती जी ने अपनी ओर से कुछ छूट ली है तो दूसरी ओर सिंह जी ने तटस्थ रहकर अपनी ओर से कुछ नहीं जोड़ा। बावजूद इसके दोनों अनुवाद एक ही बीज से निकले दो अलग–अलग पौधे प्रतीत होते हैं। यहाँ यह कहना अत्युक्ति न होगा कि हर कविता का अनुवाद मूल पर आधारित एक नई कविता का आनन्द देता है। इसलिए दूधनाथ सिंह ने कहा भी है : 'काव्यानुवाद (अनुवाद) अपने समान धर्म, अनुभूति को सहज भाव से कहीं दूसरी जगह पा लेने के फलस्वरूप उसी उत्साह के साथ, अपनी भाषा में उसके पुनर्सृजन का नाम है।'

4.2 कथा साहित्य का अनुवाद

कहानी या उपन्यास अनुभूति का साहित्य होता है और कहने की ज़रूरत नहीं कि एक सामाजिक प्राणी होने के नाते कथाकार यह अनुभूति निश्चय ही समाज से प्राप्त करता है। इसलिए साहित्य और समाज के अन्तः सम्बन्ध को रेखांकित करने वाली उक्ति, 'Language is the mirror of society' कथा साहित्य पर पूर्णरूपेण लागू होती है। कथा साहित्य अपने स्थूल सामाजिक

यथार्थ को साहित्य का रंग देकर उसे उपन्यास में विस्तार से या कहानी में संक्षेप में उसका वास्तविक चित्रण करता है। यही कारण है कि जब हम किसी कहानी या उपन्यास को पढ़ते हैं तो उसमें कहीं–न–कहीं हमारा परिवेश नज़र आता है। उसमें चित्रित पात्र हमारे चिर परिचित या आसपास के लगते हैं। मगर यह बात सामाजिक या आँचलिक कहानी या उपन्यास पर जितनी लागू होती है, ऐतिहासिक, मनोविश्लेषणात्मक या तिलस्मी/एयारी वाले कहानी या उपन्यास पर उतनी लागू नहीं होती। जैसा कि हम सभी को ज्ञात है कहानी और उपन्यास के बीच केवल मात्रात्मक अन्तर होता है, गुणात्मक नहीं। दूसरे शब्दों में कहें तो उपन्यास का फलक, कहानी के फलक की अपेक्षा व्यापक होता है। इसीलिए यहाँ दोनों की चर्चा न कर केवल उपन्यास के अनुवाद की चर्चा की जा रही है। प्रसंगवश कहीं–कहीं कहानी का उदाहरण भी दिया गया है।

उपन्यास के अनुवाद की चर्चा करने से पहले हम काव्यानुवाद और कथा साहित्य के अनुवाद के बीच स्थित सूक्ष्म अन्तर को समझ लेते हैं। कविता में साधारणतः कवि की हृदयानुभूति की अभिव्यक्ति होती है जबकि कथासाहित्य में कथाकार की अपनी सामाजिक–अनुभूति का उद्‌गार। तुलनात्मक दृष्टि से विचार करें तो कविता में भावना या कल्पना का शासन होता है तो कथा साहित्य में वास्तविक यथार्थ का प्राधान्य। तिलस्मी/एयारी कथा साहित्य इसका अपवाद हो सकता है। अतः दोनों अलग–अलग दुनिया में विचरण करते प्रतीत होते हैं। काव्यानुवाद की चर्चा के दौरान हमने देखा कि पद्यानुवाद में सृजनात्मक प्रतिभा की अनिवार्यता को बराबर स्वीकारा गया है। यही बात कथा साहित्य के अनुवाद पर भी लागू होती है। उपन्यास या कहानी का सफल अनुवाद केवल एक सृजनात्मक प्रतिभा का धनी अनुवादक ही कर सकता है। कई विद्वानों का यह मानना है कि काव्यानुवाद की तुलना में कहानी या उपन्यास का अनुवाद सरल होता है। मगर यह एक दृष्टिकोण हो सकता है, व्यावहारिक सच्चाई नहीं। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि दोनों सृजनात्मक साहित्य हैं और दोनों की अलग–अलग विशेषताएँ होने के साथ–साथ दोनों का अलग–अलग महत्त्व भी है।

साहित्य के क्षेत्र में उपन्यास अपेक्षाकृत एक आधुनिक विधा है। आज उपन्यास का लक्ष्य केवल पाठक का मनोरंजन करना नहीं रह गया है। आज उपन्यास का मूल उद्देश्य है, समाज में फैले अन्ध–विश्वास, हिंसा, शोषण, कुरूपताओं, विद्रूपताओं को दूर कर एक स्वस्थ समाज का निर्माण करना। कहने का तात्पर्य है कि आज उपन्यास चमत्कारिता के पीछे न भागकर सामाजिक सत्य को अंगीकार कर रहा है, चाहे वह सरल ग्रामीण जीवन की

गाथा हो या आज के चमकते–दमकते आधुनिक शहरी जीवन शैली की दास्ताँ। इस विधा में ग्रामीण व शहरी जीवन के बदलते हालात को बराबर अभिव्यक्ति मिलती रही है। उपन्यास के अनुवाद में अनुवादक को भाषा प्रयोग के प्रति सजग होना चाहिए। यथार्थ की अभिव्यक्ति में न तो आडम्बरपूर्ण भाषा की ज़रूरत होती है और न ही अप्रचलित शब्दों के बरबस प्रयोग का औचित्य। कथा साहित्य का अनुवाद करते समय हमें सदा सरल, सुबोध और सरस बोलचाल के शब्दों का चयन करना चाहिए ताकि पाठक उसे पढ़ते समय उसमें अपने प्रादेशिक रंग (local colour) पा सके। उपन्यास या कहानी में एक क्षेत्र विशेष का, किसी एक आँचलिक परिवेश का चित्रण होने के कारण उसमें अनुवादक को अननुवाद्यता (untranslatability) की स्थिति का सामना करना पड़ता है। साथ ही उस क्षेत्र विशेष में प्रयुक्त लोकोक्तियों/मुहावरों की भरमार भी उसमें रहती है। उदाहरण के लिए फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यास 'मैला आँचल' को लीजिए। कहने की ज़रूरत नहीं कि इसमें प्रयुक्त आँचलिक भाषा, बोलचाल की तर्ज, टूटे–बिखरे वाक्य, विशिष्ट अभिव्यक्तियाँ ही इसे आँचलिक उपन्यास की श्रेणी में ले जाते हैं जो उपन्यास के प्राणतत्त्व तो हैं ही, साथ ही लेखक के अभीष्ट कथ्य का हिस्सा भी हैं। अनुवादक अगर इसका सीधा–सरल वर्णनात्मक अनुवाद करने में सफल भी हो जाए तो इसके पाठकगण केवल कथ्य के आशय से ही परिचित हो पाएँगे, मूल के विशिष्ट प्रभाव से नहीं। ऐसी ही 'अननुवाद्यता की स्थिति' का एक उदाहरण यहाँ द्रष्टव्य है : 'Lamb of God' का अनुवाद एस्किमो भाषा में कैसे हो सकता है, क्योंकि वहाँ Lamb तो होता ही नहीं। ऐसे में हमें नाइडा द्वारा प्रस्तावित सक्रिय समतुल्यता (dynamic equivalance) का सहारा लेकर एस्किमो भाषा में प्रचलित 'Lamb' का पर्यायवाची 'Seal' जो कि अबोधता का प्रतीक है, को चुनना पड़ेगा। इस प्रकार भारतीय संस्कृति से जुड़े 'कन्यादान', 'माया', 'सुहाग', 'मोक्ष', 'सिन्दूर' आदि अननुवाद्य शब्दों के अनुवाद में हमें पाद टिप्पणी का सहारा लेकर संकल्पनाओं को स्पष्ट करना चाहिए। कुछ आँचलिक शब्दों/वाक्य–खण्डों का अंग्रेजी अनुवाद यहाँ द्रष्टव्य है :

1. अहीर – a community associated with cow herding.
2. साधु – a wandering holy man.
3. अंगोवा (देवताओं के लिए) – offering to the gods.
4. घर में चूल्हा नहीं जला – nothing was cooked.
5. क्या उसमें बरकत होगी ? – what kind of plentifulness do it expect from
6. हाँडी – earthen vessel.

कई अनुवादक इस प्रकार के सांस्कृतिक शब्दों को अनुवाद में ज्यों का त्यों रख देते हैं, ऐसे में पाठक न तो शब्द के अर्थ समझ पाते हैं और न ही उससे जुड़ी संकल्पना को। परिणामस्वरूप पाठकगण मूल रचना का आनन्द न उठा पाकर अनुवाद की गन्ध से जूझते रहते हैं। मैंने हाल ही में 'गोदान' का अँग्रेजी अनुवाद पढ़ा जिसमें 'चिलम' को 'chelum', 'दीवान' को 'divan', 'लोटाभर पानी' को 'lotaful water', 'चूनरी' को 'chunri', 'गुल्लियाँ' को 'gulli-dunda', 'चपाती' को 'chapati' रख दिया गया है। अगर यह अनुवाद हिन्दी न समझने वाले अँग्रेजी पाठक के लिए है तो ऐसे सांस्कृतिक शब्दों का लिप्यंतरण न कर अँग्रेजी संस्कृति के अनुसार उसमें प्रभावी समतुल्यता की खोज करनी थी या उपयुक्त पाद टिप्पणी के सहारे उनकी संकल्पनाओं को स्पष्ट करना था। और तो और अनुवादक ने एक स्थल पर 'उल्टे पाँव आया और वही जला हुआ तम्बाकू पीने लगा, लेकिन जैसे वह विष प्रतिक्षण उसकी धमनियों में फैलता जाता था। उसने सो जाने का प्रयास किया पर नींद न आयी' का सरल अनुवाद कर दिया गया 'Back in his cot he sat smoking the burnt-out chelum and tried to sleep, but no sleep came' यहाँ दो बातें देखने लायक हैं पहली 'पर नींद न आयी' का अनुवाद 'But no sleep came' कर देना तथा दूसरा 'लेकिन–जैसे वह विष प्रतिक्षण उसकी धमनियों में फैलता जाता था' का अनुवाद करना ज़रूरी न समझना। अनुवादकों को कम–से–कम इस तरह की लापरवाही से बचना चाहिए। ऐसे ही उपन्यास में प्रयुक्त मुहावरों और कहावतों की संकल्पना को पहले समझना चाहिए, तदुपरान्त उसका अनुवाद करना चाहिए। अक्सर उपन्यास में प्रयुक्त कहावतों/मुहावरों में स्थानीय बोली या भाषा का रंग चढ़ा रहता है। अनुवादक को इनसे बारीकी से रूबरू होना पड़ता है।

कुछ अनुवादकों ने उपन्यास का बहुत अच्छा अनुवाद भी किया है। जै रतन ने मन्नू भण्डारी का चर्चित उपन्यास 'आप का बंटी' का अँग्रेजी अनुवाद 'Bunty' के नाम से किया है, जिसके पहले पैरा का अँग्रेजी अनुवाद यहाँ दिया जा रहा है :

मूल :

ममी ड्रेसिंग टेबुल के सामने बैठी तैयार हो रही हैं। बंटी पीछे खड़ा चुपचाप देख रहा है। ममी जब भी कॉलेज जाने के लिए तैयार होती हैं, बंटी बड़े कौतूहल से देखता है। जान तो वह आज तक नहीं पाया, पर उसे हमेशा लगता है कि ड्रेसिंग टेबुल की इन रंग–बिरंगी शीशियों में, छोटी–बड़ी डिबियों में ज़रूर कोई जादू है कि ममी इन सबको लगाने के बाद एकदम

बदल जाती हैं। कम से कम बंटी को ऐसा लगता है कि उसकी ममी अब उसकी नहीं रहीं, कोई और ही हो गई।

अँग्रेजी अनुवाद :

Mummy is sitting before the dressing table while Bunty stands behind, watching her. He always watches her with an air of curiosity as she sits there, getting spruced up to go to college. Though he has not been able to delve into their secret, yet he suspects there some magic bottled up in those colourful phials and jars, big and small, ranged on the dressing table which transform Mummy's appearence. As he watches her sitting before the mirror, he feels she is not any more the person he has known so well–his very own Mummy. She must be someone else–a stranger.

उपर्युक्त अनुवाद में मूल के सन्देश और लक्ष्य–भाषा की प्रकृति का सुन्दर समन्वय हुआ है। कभी–कभी काव्यानुवाद की भाँति उपन्यास के अनुवाद में भी अनुवादक की सृजनात्मक प्रतिभा हावी होने के कारण अनुवाद मूल के आधार पर एक नयी कृति बन जाता है। उदाहरण के लिए अज्ञेय जी द्वारा अनूदित 'त्यागपत्र' उपन्यास का एक अंश यहाँ द्रष्टव्य है :

मूल : त्यागपत्र(जैनेन्द्र)

'यहाँ खरा कंचन ही टिक सकता है, क्योंकि उसे जरूरत ही नहीं कि वह कहे कि मैं पीतल नहीं हूँ। यहाँ कंचन की माँग नहीं है, पीतल से घबराहट नहीं है। इसमें भीतर पीतल रह कर ऊपर कंचन दीखने वाला लोभ यहाँ क्षण भर नहीं टिकता है। बल्कि यहाँ पीतल का मूल्य है। इसीलिए सोने के धैर्य की यहाँ परीक्षा है। सच्चे कंचन की पक्की परख यहीं होगी। यह यहाँ की कसौटी है। मैं मानती हूँ कि जो इस कसौटी पर खरा हो सकता है, वही खरा है। और वही प्रभु का प्यार पा सकता है।''

अनुवाद : 'The Resignation' (अज्ञेय)

'Only the real and the living can survive here–conventional morality withers beneath the burning contempt of the people. Civilisation-culture-decency : these polite myths lose all meaning. The beast rules untamed and unashamed and calls to the beast that is

an every man. It does not matter how deeply hidden the latter may be. You have buried him beneath mounds of inhibition and convention to hibernate. Rampant and alert he will come forth. Only if you are human through and through can you hope to survive the ordeal and such as come through are the chosen of the Lord.'

यहाँ मूल–पाठ के साथ अनुवाद की तुलना करने से तो पता चलता है कि अज्ञेय ने अनुवाद की आड़ में कितनी छूट ले ली है। इसमें मूल का प्रभाव मात्र है। ऐसे अनुवाद को प्रभावधर्मी अनुवाद कहा जाता है। इसे अनुवाद न कह कर एक नयी कृति कहें तो गलत न होगा। मगर ऐसे में अनुवाद की सफलता नहीं मानी जाती, क्योंकि मूल–पाठ का अस्तित्व हमेशा अनुवाद में रहना अनुवाद की पहली और महत्त्वपूर्ण शर्त है।

4.3. निबन्ध साहित्य का अनुवाद

निबन्ध कई प्रकार के होते हैं, परन्तु इनमें मुख्य हैं वैचारिक और ललित निबन्ध। एक में निबन्धकार के निजी विचार, अभिमत आदि का प्राधान्य होता है तो दूसरे में मौलिक सांस्कृतिक–कलात्मक चिन्तन की अभिव्यक्ति। हजारी प्रसाद द्विवेदी के 'अशोक के फूल', विद्यानिवास मिश्र के 'छितवन की छाँह' ललित निबन्ध के सुन्दर उदाहरण हैं। पदुमलाल पन्नालाल बख्शी ने अपने एक वैचारिक निबन्ध 'क्या लिखूँ' में लिखा है, 'निबन्धों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे मन की स्वच्छन्द रचनाएँ हैं। उनमें न कवि की उदात्त कल्पना रहती है, न आख्यायिका–लेखक की सूक्ष्म दृष्टि; न विज्ञों की गम्भीर तर्क–पूर्ण विवेचना। उनमें लेखक की सच्ची अनुभूति रहती है, उसके सच्चे भावों की सच्ची अभिव्यक्ति होती है, उसका उल्लास रहता है।' निबन्ध में काव्यात्मक उलझनें नहीं होतीं, परन्तु कथात्मक आख्यानों की सूक्ष्म सामाजिक दृष्टि से भी आगे सांस्कृतिक, मिथकीय, पौराणिक तत्त्व उसमें मौजूद रहते हैं, जिन्हें निबन्ध के प्राण तत्त्व कहा जा सकता है। अतः कह सकते हैं कि निबन्धानुवाद, काव्यानुवाद और कथानुवाद के मध्य में आता है। निबन्धानुवाद को काव्यानुवाद से इस दृष्टि से थोड़ा सहज कहा जा सकता है कि कविता के विपरीत निबन्ध में लेखक का मूलभाव स्पष्ट झलकता है। अतः निबन्ध का अनुवाद करते समय अनुवादक को मूल लेखक की उस मानसिक स्थिति, ज्ञान की गरिमा व व्यापक अनुभव को पहचानना होता है, जिसके माध्यम से वह संसार को देख उससे अपने लिए भाव ग्रहण करता है ताकि अनुवाद में

भी यह मौलिक तथा निजी मान्यताएँ बरकरार रह सकें। निम्नलिखित उदाहरण से ये बातें स्पष्ट हो जाएगीं –

मूल :

Writers need a source of strength other than which they find in their talent. Literary talent does not exist by itself; it feeds on a society and depends for its development on the nature of the society. The writer begins with his talent, finds confidence in his talent, but then discovers that it is not enough; that in a society as deformed as ours, by the exercise of his talent, he has sat himself adrift.

हिन्दी अनुवाद :

लेखकों को अपनी जन्मजात प्रतिभा के अलावा भी एक और शक्ति–स्रोत का सहारा अनिवार्य रूप से चाहिये। इसलिए कि कोई भी, कैसी भी साहित्यिक प्रतिभा सिर्फ अपने बल–बूते कारगर नहीं हो सकती। उसे फलने–फूलने के लिए वह उस समाज के स्वभाव पर निर्भर होती हैं। लेखक अपनी यात्रा प्रारम्भ तो अपनी प्रतिभा के बूते पर ही करता है और रचनात्मक आत्मविश्वास भी उसे वहीं से मिलता है। किन्तु शीघ्र ही वह इस सच्चाई का सामना करने को अन्तर्विवश होता है कि इतना काफी नहीं है; कि एक ऐसे समाज में, जो हमारे समाज की तरह विकलांग हो चुका है, अपने लेखक होने को पहचानना और उसे सचमुच जीना बड़े जोखिम का काम है। लहरों की मर्जी पर अपनी नाव को छोड़ देने जैसा।

4.4. नाटक का अनुवाद

नाटक में केवल संवादात्मक कथन नहीं होता, उसके साथ अभिनय क्रिया भी जुड़ी रहती है। नाटक में संवाद का बड़ा महत्त्व होता है। उपन्यास की भाँति इसमें समानान्तर कथन नहीं होता। इसमें हर पात्र की अलग–अलग भाषा शैली होती है। नायक की अलग, खलनायक की अलग, बिदूषक की अलग। अनुवादक को अनुवाद करते समय, मूल की भाँति नायक का औदात्य, खलनायक की खल प्रकृति, नायिका का सौन्दर्य व महत्त्व, विदूषक की विनोदप्रियता या मस्तमौलापन आदि को सदैव ध्यान में रखकर अभिनय संगत भाषा का निर्माण करना होता है। यह बात हमेशा ध्यान में रखनी चाहिए कि नाटक की रचना की सफलता उसके सफल मंचन में होती है। अतः नाटक के अनुवादक को रंगमंच की सम्यक् जानकारी होनी चाहिए। साथ ही

पारम्परिक रंग–परम्परा और मूल–पाठ के रंग–विधान के बीच निहित अन्तर को समझना पड़ता है। इसके अलावा सृजनात्मक विधा की भाँति नाटक में कहीं–कहीं लक्षार्थ और व्यंग्यार्थ का प्रयोग भी किया जाता है जो कभी–कभी पूरे नाटक के कथ्य को या निहित सन्देश को व्यक्त करता है। ऐसे में अनुवादक को ख़ास सावधानी बरतनी पड़ती है। ये सब नाटक के अनुवाद की कठिनाइयाँ हैं। इसके अलावा नाटक साहित्य के कुछ ऐसे रूप भी हैं, ख़ासकर संस्कृत और काव्य–नाटक, जिनका अनुवाद करना लोहे के चने चबाने के बराबर है। उदाहरण के लिए शेक्सपियर, टी.एस. इलियट, कालिदास, यूनानी नाटक, रवीन्द्रनाथ तथा धर्मवीर भारती के काव्य–नाटकों का अनुवाद करने में अनुवादक को कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। पहला सवाल तो यह उठता है कि ऐसे काव्य नाटकों का अनुवाद पद्य–बद्ध होना चाहिए या गद्य–बद्ध ।

शेक्सपियर के नाटकों का पद्य तथा गद्य, दोनों में अनुवाद हुआ है। मगर अधिक सफलता गद्यानुवाद को मिली है। मगर आज के सन्दर्भ में, क्या भारती जी के 'अंधायुग' नाटक का गद्यानुवाद करना प्रासंगिक होगा ? यह प्रश्न विचारणीय है। दूसरा प्रश्न है संस्कृति का अन्तरण, जिसमें अनुवादक की दूरदर्शिता और लक्ष्य–भाषा की ऐतिहासिक/सांस्कृतिक परम्परा का गहरा ज्ञान, दोनों की जरूरत होती है। उदाहरण के लिए शेक्सपियर के 'मेकबेथ' की दो पंक्तियों का अनुवाद देखिए :

मूल :

(डंकन की हत्या करने के पश्चात अपने रक्त रंजित हाथों को देख कर मैकबेथ कहता है)

Macbeth :

Will all great Neptune's ocean wash this blood
clean from my hand ?
no : this my hand will rather
the multitudinous seas incarnedine
macking the green one red.

अनुवाद (बच्चन) :

मैकबेथ : जो मेरे हाथों खून लगा उसके तो
महावरुण का सारा पारावार नहीं धो सकता।
यही नहीं मेरे हाथ करेंगे

उच्छल फेनाच्छ्वसित जलधि को भी रक्तारुण
जो कि हरा है लाल बनेगा।

यहाँ बच्चन जी ने 'great Neptune's ocean' का अनुवाद भारतीय संस्कृति को ध्यान में रख कर ''महावरुण का सारा पारावार' किया है। इस प्रकार नाटकों के शीर्षकों/पात्रों के नामों के अनुवाद में भी सांस्कृतिक बदलाव करने का रिवाज़ है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने 'Merchant of Venice' का अनुवाद 'दुर्लभ बन्धु' के नाम से किया। मुंशी इमदाद अली ने 'The comedy of errors' का अनुवाद 'भ्रमजाल' नाम से किया जबकि लाला सीताराम ने इसे पुनः 'भूल भुलैया' नाम से अनुवाद किया, जिसमें शेक्सपियर की नाट्य–शैली का अनुकरण करने की काफी कोशिश की गयी।

अतः साहित्यानुवाद एक प्रकार का पुनर्सृजन ही है, जिसे अनुवाद की भाषा में अनुसृजन कह सकते हैं। फिर चाहे वह कविता हो या उपन्यास, नाटक हो या कहानी। किसी भी साहित्यिक विधा का अनुवाद करना अपने आप में एक चुनौती है, एक सृजन–व्यापार है, जो सदैव सृजनात्मक प्रतिभा की माँग करता है।

5. बोध प्रश्न

1. 'सृजनात्मक साहित्य' शब्द को स्पष्ट कीजिए ?

.....

.....

.....

2. काव्यानुवाद में सृजनशील लेखक+अनुवादक की भूमिका को स्पष्ट कीजिए ?

.....

.....

.....

3. 'काव्यानुवाद' को कुछ विद्वानों ने असम्भव क्यों माना है ?

.....

.....

.....

4. निबन्ध के स्वरूप को स्पष्ट कीजिए ?

.....

.....

.....

5. नाटक के अनुवाद किन–किन बातों का ध्यान रखना चाहिए ?

.....

.....

.....

6. सारांश

सृजनात्मकता के मुख्य आधार तत्त्व हैं– अनुभूति, भाव, कल्पना आदि। साहित्य में (विशेषकर कविता में) प्रयुक्त भाषा बिम्बों, प्रतीकों के कारण लक्षणा और व्यंजना प्रधान होती है साथ ही उसमें मूल लेखक के देश–काल, संस्कृति, भाषिक सन्दर्भ आदि के तत्त्व भी जुड़े रहते हैं। इस कारण 'साहित्यिक अनुवाद' दूसरे विषय क्षेत्र के अनुवाद की तुलना में अपेक्षाकृत कठिन होता है। हम सब जानते हैं कि साहित्यिक कृतियों का उत्कृष्ट अनुवाद हर युग में होता रहा है, भले ही वह पूर्णतः भिन्न प्रकृति की भाषा में क्यों न हो।

कविता या अन्य किसी साहित्यिक सामग्री का परिपूर्ण अनुवाद सम्भव न हो तो भी अधिक से अधिक प्रामाणिक भावानुवाद या सारानुवाद तो किया ही जा सकता है। कथा साहित्य अपने स्थूल सामाजिक यथार्थ को साहित्य का रंग देकर उसे उपन्यास में विस्तार से या कहानी में संक्षेप में उसका वास्तविक चित्रण करता है। उपन्यास के अनुवाद में अनुवादक को भाषा प्रयोग के प्रति सजग होना चाहिए। यथार्थ की अभिव्यक्ति में न तो आडम्बरपूर्ण भाषा की ज़रूरत होती है और न ही अप्रचलित शब्दों के बरबस प्रयोग का औचित्य। कथा साहित्य का अनुवाद करते समय हमें सदा सरल, सुबोध और सरस बोलचाल के शब्दों का चयन करना चाहिए ताकि पाठक उसे पढ़ते समय उसमें अपने प्रादेशिक रंग पा सके।

निबन्धानुवाद, काव्यानुवाद और कथानुवाद के मध्य में आता है। निबन्धानुवाद को काव्यानुवाद से इस दृष्टि से थोड़ा सहज कहा जा सकता है कि कविता के विपरीत निबन्ध में लेखक का मूलभाव स्पष्ट झलकता है। अतः निबन्ध का अनुवाद करते समय अनुवादक को मूल लेखक की उस मानसिक

स्थिति, ज्ञान की गरिमा व व्यापक अनुभव को पहचानना होता है, जिसके माध्यम से वह संसार को देख उससे अपने लिए भाव ग्रहण करता है ताकि अनुवाद में भी यह मौलिक तथा निजी मान्यताएँ बरकरार रह सकें। नाटक में संवाद का बड़ा महत्त्व होता है। उपन्यास की भाँति इसमें समानान्तर कथन नहीं होता। इसमें हर पात्र की अलग–अलग भाषा शैली होती है। यह बात हमेशा ध्यान में रखनी चाहिए कि नाटक की रचना की सफलता उसके सफल मंचन में होती है। अतः नाटक के अनुवादक को रंगमंच की सम्यक् जानकारी होनी चाहिए। बहरहाल, किसी भी साहित्यिक विधा का अनुवाद करना अपने आप में एक चुनौती है।

7. बोध प्रश्नों के उत्तर

1. देखें भाग 3.1
2. देखें भाग 3.1
3. देखें भाग 4.1
4. देखें भाग 4.3
5. देखें भाग 4.4

इकाई–4 : विधिक सामग्री का अनुवाद

रूपरेखा

1. उद्देश्य
2. प्रस्तावना
3. राजभाषा(विधायी) आयोग और विधिक अनुवाद
    - 3.1 राजभाषा(विधायी) आयोग की स्थापना और विधिक अनुवाद की शुरुआत
    - 3.2 आयोग की विधि शब्दावली
    - 3.3 विधि की भाषा
4. विधिक अनुवाद : समस्याएँ एवं समाधान
    - 4.1 विधिक अनुवाद
    - 4.2 विधिक अनुवाद की चुनौतियाँ
5. बोध प्रश्न
6. सारांश
7. बोध प्रश्नों के उत्तर

1. उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- राजभाषा(विधायी) आयोग की स्थापना का सामान्य परिचय पा सकेंगे;
- विधिक अनुवाद की शुरुआत से परिचित हो सकेंगे;
- विधि शब्दावली एवं विधिक भाषा के स्वरूप को रेखांकित कर सकेंगे;
- विधिक अनुवाद की कठिनाई को समझ और सुलझा सकेंगे;

2. प्रस्तावना

विधिक सामग्री के अनुवाद से परिचय कराने की दृष्टि से प्रस्तुत अध्याय 'विधिक सामग्री का अनुवाद' में विधिक अनुवाद की शुरुआत, विधि शब्दावली एवं विधिक भाषा के स्वरूप की चर्चा की गई है। साथ ही विधिक अनुवाद की समस्याएँ एवं उसके समाधान की चर्चा भी सोदाहरण–सविस्तार की गई है।

3. राजभाषा(विधायी) आयोग और विधिक अनुवाद

3.1 राजभाषा(विधायी) आयोग की स्थापना और विधिक अनुवाद की शुरुआत :

विधि और प्रशासनिक सामग्री का अनुवाद मूलतः भारतीय संविधान के राजभाषा विषयक प्रावधानों के क्रियान्वयन का एक हिस्सा है। इस हेतु महामहिम राष्ट्रपति महोदय के हस्ताक्षर से सन् 1952, 1955 और 1960 में विशेष आदेश जारी किए गए। सन् 1952 के आदेश में राज्यपालों, उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीशों तथा उच्च न्यायालयों के न्यायाधीशों के नियुक्ति पत्रों को अंग्रेजी के साथ–साथ हिन्दी में जारी करना तथा हिन्दी अंकों के अन्तर्राष्ट्रीय रूपों के साथ–साथ देवनागरी अंकों के प्रयोग को भी सुनिश्चित किया गया। सन् 1955 के आदेश में प्रशासनिक रिपोर्ट, सरकारी पत्रिकाएँ, संसद में प्रस्तुत की जाने वाली रिपोर्टें, सरकारी संकल्प और विधायी अधिनियम, संधियाँ और करार, अन्य देशों की सरकारों और उनके दूतों, तथा अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों के साथ पत्र–व्यवहार आदि में सरकारी प्रयोजनों हेतु अंग्रेजी भाषा के अतिरिक्त हिन्दी का प्रयोग भी प्राधिकृत किया गया। सन् 1960 के आदेश में अन्य बातों के साथ–साथ निम्नलिखित बातों का भी प्रावधान किया गयाः–

1. वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली के निर्माण के लिए शिक्षा–मंत्रालय को एक स्थायी आयोग स्थापित करना चाहिए।
2. शिक्षा मंत्रालय सांविधिक नियमों, विनियमों और आदेशों के अतिरिक्त सभी मैनुअलों तथा कार्यविधि साहित्य का अनुवाद हाथ में ले और भाषा में एकरूपता सुनिश्चित करने की दृष्टि से यह काम एक ही अभिकरण को सौंपा जाए।
3. एक मानक विधि शब्दकोश बनाने, हिन्दी में विधि के पुनः अधिनियमों और विधि शब्दावली के निर्माण के लिए विभिन्न राष्ट्रीय भाषाओं का प्रतिनिधित्व करने वाले विधि–विशेषज्ञों का एक स्थायी आयोग स्थापित किया जाए।

इसके परिणाम स्वरूप शिक्षा मंत्रालय के अन्तर्गत 'वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग' गठित किया गया और विधि मंत्रालय के अन्तर्गत राजभाषा (विधायी) आयोग की स्थापना सन् 1961 के जून मास में हुई। तदुपरान्त विधायी आयोग ने अंग्रेजी–हिन्दी विधिष्शब्दावली तैयार की और विधिक प्रारूपण के माने हुए सिद्धान्तों को ध्यान में रखकर उन प्रमुख केन्द्रीय अधिनियमों के प्राधिकृत हिन्दी पाठ तैयार करने में जुट गया। ''इस अनुवाद

प्रक्रिया में आयोग ने इस बात पर बराबर ध्यान रखा कि अनुवाद में और मूल अधिनियम के अर्थ में भेद न पड़ने पाए। हिन्दी तथा विभिन्न राज्यों की राजभाषाओं के प्रतिनिधियों के सहयोग और सहायता से ऐसे पर्याय चुने गये जिनकी उस विधि के सन्दर्भ में वही अर्थव्याप्ति हो जो उस अंग्रेजी पारिभाषिक शब्द की थी जिसके लिए चुने गए शब्द का प्रयोग किया जाना था। और यह बात पूरी विधिक सामग्री पर समान रूप से लागू होती है।''

3.2 आयोग की विधि शब्दावली

आयोग की 'विधि शब्दावली' का छठवाँ संस्करण प्रकाशित हो चुका है जिसमें लगभग एक लाख शब्दों को स्थान मिल चुका है। ''इसमें जिन अँग्रेजी शब्दों और पदावलियों को शामिल किया गया है उनका अंग्रेजी में वह अर्थ दिया गया है जिसमें वे सम्बद्ध अधिनियमों में प्रयुक्त हुए या हुई हैं। अंग्रेजी अर्थ के पश्चात् वह प्रमुख पर्याय दिया गया है जिनका प्रयोग सम्बद्ध अधिनियम में किया गया है। किन्तु साथ ही कहीं–कहीं कोष्ठक में दूसरे पर्याय भी दिए गए हैं जो आयोग ने हिन्दी से इतर भाषाओं के प्रतिनिधियों के इस मत के आधार पर अपनाए कि जो प्रमुख पर्याय तय किए गए हैं उनके स्थान में, उन अन्य भाषाओं में उन दूसरे पर्यायों का प्रयोग भी किया जा सकता है। इसी आधार पर कहीं–कहीं वे पर्याय भी दिए गए हैं जो हिन्दी भाषा क्षेत्रों में चलते रहे हैं। आयोग का प्रयास बराबर यह रहा है कि वे ही पर्याय अपनाए जाएँ जो भारत की प्रमुख भाषाओं में से अधिकांश में आत्मसात किए जा सकें। आयोग ने किसी भी उपलब्ध पर्याय की केवल इस कारण उपेक्षा नहीं की कि वह हिन्दी भाषा से भिन्न भाषा का शब्द है। किसी भाषा स्रोत से भी आए जो शब्द हिन्दी में आत्मसात हो चुके हैं यदि वे शब्द अन्य भाषाओं को भी मान्य हुए तो उन्हें आयोग ने अपना लिया। इस प्रकार अपील, समन, वारण्ट आदि प्रचलित शब्द ज्यों के त्यों रख लिए गए हैं। विधिक विचारों में जो सूक्ष्म अन्तर होते हैं यदि उनको अभिव्यक्त करने के लिए हिन्दी में शब्द नहीं मिले तो उनमें से कई के लिए भारत की अन्य भाषाओं से भी शब्द लिए गए हैं। हो सकता है कि आरम्भ में ये शब्द हिन्दी भाषियों को इस कारण सहजबोध न हों कि वे उनसे परिचित नहीं हैं। किन्तु जो भी शब्द उन भाषाओं से लिए गए हैं वे ऐसे हैं कि वे सहज ही हिन्दी में पचाए जा सकते हैं और कुछ समय के प्रयोग से ही हिन्दी भाषा में प्रचलित हो जाएंगे।''(*–विधि शब्दावली के प्रथम संस्करण की भूमिका से*)। क्योंकि भाषा प्रयोगशाला में नहीं, प्रयोग से ही चमकती है। उदाहरण के रूप में 'Hypothecation' व 'Encumbrance' के लिए तमिल भाषा से गृहित क्रमानुसार 'आड़मान' व

'विल्लंगम' दोनों शब्द हिन्दी अनुवाद में प्रचलित और स्वीकृत हो गए हैं। परन्तु 'distress' के लिए तय किया गया मलयालम् का 'करस्थम्' शब्द अनुवाद में अपना स्थान नहीं बना पाया है।

3.3 विधि की भाषा

'विधि' की भाषा का अपना वैशिष्ट्य होता है। न्याय–भाषा में द्विअर्थकता अथवा संदिग्धार्थकता नहीं होनी चाहिए, ताकि अर्थ निर्णय में कहीं, किसी प्रकार की भ्रांति न हो। उदाहरण के लिए अंग्रेजी का एक छोटा सा वाक्य 'He should be hanged' को लेते हैं। इस वाक्य से यह तो स्पष्ट हो जाता है कि 'उसे लटकाया जाए' परन्तु इसमें यह नहीं कहा गया है कि 'कब तक लटकाया जाए'। कहने की ज़रूरत नहीं इस छूट की बदौलत ही एक बार मौत की सजा पाए एक मुज़रिम को मुक्ति मिल गयी थी । सूली पर टाँगते ही मुज़रिम कह उठा 'बस हो गया क्योंकि न्यायाधीश ने केवल लटकाने की सजा सुनायी है'। इसके बाद ही उक्त अंग्रेजी वाक्य को लिखा गया 'He should be hanged till death'। सरलता, स्पष्टता, संक्षिप्तता, अभिधार्थपरकता तथा पारदर्शिता न्याय की भाषा की उल्लेखनीय विशेषताएँ बतलायी गयी हैं। विधि की भाषा की विशेषता पर विचार करते हुए राजभाषा आयोग ने यह कहा था : ''कानून की भाषा सुनिश्चित, संक्षिप्त और सुस्पष्ट होनी चाहिए। देश भर के अनेक न्यायालयों में इस भाषा की व्याख्या की जाएगी जो मुख्यतः कानूनों में प्रयोग में लाई हुई भाषा के व्याकरण–सम्मत सामान्य अर्थ के आधार पर ही विचार करेंगे, उन शब्दों में छिपे हुए उद्देश्यों या अभिप्राय के आधार पर नहीं। जहाँ तक विचार–विमर्श की भाषा का सम्बन्ध है, अपने विचार प्रकट करने में सम्बद्ध वक्ताओं की सुविधा और सुगमता को ध्यान में रखना अधिक महत्त्वपूर्ण है। इस प्रकार कानूनों या न्याय की भाषा में निश्चितता, संक्षिप्तता, पारदर्शिता, अभिधार्थपरकता और स्पष्टता होती है।'' (*–विधि शब्दावली के चतुर्थ संस्करण की भूमिका से*)

4. विधिक अनुवाद : समस्याएँ एवं समाधान

4.1 विधिक अनुवाद

'विधि' शब्द अंग्रेजी के 'लॉ' का पर्यायवाची है। विधिक अनुवाद में सबसे बड़ी समस्या है मूल के आशय को हूबहू अभिव्यक्ति प्रदान करना। 'विधि' में प्रयुक्त शब्द के बदले अनुवाद में ऐसे शब्दों को रखना जो विधि के आशय को सुरक्षित रख सकें। इसलिए एक संकल्पना के लिए एक ही पर्याय रखा गया

है। जैसे : 'Act' के लिए 'अधिनियम', 'Rule' के लिए 'नियम', 'Sub-rule' के लिए 'उपनियम', 'Regulation' के लिए 'विनियम', 'Statute' के लिए 'परिनियिम' तय किया गया है। ऐसे ही 'Survey' के लिए 'सर्वेक्षण', 'Prospect' के लिए 'पूर्वेक्षण', 'Inspect' के लिए 'निरीक्षण', 'Superintend' के लिए 'अधीक्षण' निश्चित किया गया है। अतः अनुवाद करते समय केवल यही सुनिश्चित पर्याय चुनना होगा। परन्तु अनुवाद एक ऐसा कर्म है, जिसमें कभी–कभी अकेले शब्द का विचार करके अनुवाद की गति को आगे बढ़ाया नहीं जा सकता। हो सकता है प्रसंगानुसार हमें एक ही शब्द के अलग–अलग पर्याय चुनने पड़ें जैसा कि हमें अक्सर अनुवाद कर्म में चुनना पड़ता है। उदाहरण के लिए अंग्रेजी के 'Charge' शब्द को लेते हैं–

Charge–
1 → On obligation के अर्थ में– **भार**
2 → Accusation of a crime के अर्थ में– **आरोप**
3 → Price for services के अर्थ में– **प्रभार**
4 → Control, custody of superintendence के अर्थ में– **भारसाधन**
5 → The address of a judge to jury instructing them upon the concerned law के अर्थ में– **भारबोधन**
6 → Quantity of explosive used in a single discharge for a gun के अर्थ में– **भरण**
7 → To restore the active materials in a storage battery के अर्थ में– **चार्ज करना**

इस प्रकार शब्दों की अर्थ छवियों का उपयोग प्रशासनिक अनुवाद में भी करना पड़ता है। अनेक ऐसे शब्द हैं जिनका एक प्रशासनिक और दूसरा विधिक अर्थ ग्रहण किया गया है। परन्तु विधिक अनुवाद की तुलना में प्रशासनिक अनुवाद में अपेक्षाकृत सरल शब्दों का प्रयोग होता है जो निम्नलिखित शब्दों से स्पष्ट हो जाएगा–

मूल अंग्रेजी शब्द	प्रशासनिक अर्थ	विधिक अर्थ
Acknowledgement	पावती	अभिस्वीकृति
Appearance	हाज़िरी	उपसंजाति
Affirmation	अभिपुष्टि	प्रतिज्ञान

Process	प्रक्रिया	आदेशिका
Acquittance	भरपाई	निस्तारण
Cencure	निंदा	परिनिंदा
Disability	अपंगत	निःशक्तता
Dissent	असहमति	विसम्मति
Earnest money	बयाना	अग्रिम धन
Enjoin	आदेश देना	व्यादेश देना

विधिक अनुवाद के अन्तर्गत संसदीय प्रश्नोत्तरी, विधेयक, अधिनियम आदि आते हैं। इनका अनुवाद सटीक, और प्राविधिक होना चाहिए तथा भाषा में सुनिश्चितता, एकार्थता, और स्पष्टता होनी चाहिए। विधिक अनुवाद में हमें शब्दों का चयन विधायी आयोग की विधि शब्दावली से ही करना चाहिए। शब्दावली में आए शब्द कहीं–कहीं अतिसंस्कृतनिष्ठ होने से जटिल हो गए हैं। परन्तु विधि में 'जटिलता' को गुण के रूप में स्वीकार किया जाता है अतः इसका अनुवाद भी अक्सर जटिल रूप लेकर हमारे सामने आता है। फिर भी अनुवाद में हमें अपेक्षाकृत सरल भाषा को प्रयोग में लाना चाहिए। उदाहरण के लिए निम्नलिखित अंग्रेजी वाक्य का हिन्दी अनुवाद द्रष्टव्य है –

मूल वाक्य :

'The regulation shall come into force in the 1st day of January 2008'

मूलाधारित अनुवाद :

1–'ये विनियम वर्ष 2008 के जनवरी माह की पहली तारीख को प्रभावी होंगे।'

सही अनुवाद :

2– 'ये विनियम 1 जनवरी, 2008 से लागू होंगे।'

इसके अलावा शब्दों के रूपों के परिवर्तन पर भी ध्यान देना चाहिए। अगर हम bonafide के लिए 'सद्भाव' का प्रयोग करते हैं तो bonafides के लिए 'सद्भावी' करना चाहिए। विधिक अंग्रेजी में लैटिन, फ्रेंच आदि की शब्दावली का प्रयोग अक्सर देखने को मिलता है। इस हेतु विधि शब्दावली में लैटिन, फ्रेंच आदि की शब्दावलियों की एक अंग्रेजी–हिन्दी सूची भी दी गई है। इस प्रकार की गैर अंग्रेजी शब्दावलियों का मूल अर्थ समझकर उसे सहज

किन्तु सटीक अर्थ का पर्याय अनुवाद में प्रयोग करना चाहिए। उदाहरण के लिए कुछेक शब्द यहाँ दिये जा रहे हैं–

Absente reo- मुलज़िम की गैर हाज़िरी में
Divorce a mensa et thoro - सहवास विच्छेद
En bole - एक साथ
En ventre sa mere - गर्भवती
Falsus in uno falsus in omnibus - एक बात में झूठ तो सब में झूठ
In loco parentis - माता–पिता के बदले में
Inter alia - अन्य बातों के साथ–साथ
Ipso facto - स्वयमेव, स्वतः
Ipso jure - विधितः
Mutatis mutandis - आवश्यक परिवर्तन सहित
Persona grata - ग्राह्य व्यक्ति
Persona non grata - अग्राह्य व्यक्ति
Sans recourse - दायित्व रहित, आश्रय रहित
Sine qua non - अनिवार्य शर्त

कानून या विधि की भाषा में किसी भी कथ्य को सीधे–सादे ढ़ंग से अभिव्यक्त नहीं किया जाता, बल्कि उसे कानूनी अंदाज में घुमा–फिराकर कहा जाता है। फिर विधिक भाषा के मूल अंग्रेजी का वाक्य लम्बा ही होता है। एक उदाहरण यहाँ द्रष्टव्य है :

Ministry of I&B has issued Notification dated 2nd August, 2006 amending Cable Television Networks Rules. 1994 and substituting the following in sub rule 9 of Rule 7 (Advertising Code):-

'No advertisement which violates the code for Self-regulation in advertising, as adopted by the Advertising Standards Council of India (ASCI), Mumbai for public exhibition in India, from time to time, shall be carried in the cable service.'

अधिकतर अनुवादक अपने–अपने अनुवादों में मूलाधारित लम्बे वाक्यों का प्रयोग करते हैं, जिससे अनुवाद में भी मूल की जटिलता और अटपटापन मौजूद रहता है। ऐसी जटिलता को दूर करने का एक तरीका यह हो सकता है कि हम मूल के वाक्यों को तोड़कर हिन्दी अनुवाद में अपेक्षाकृत छोटे

वाक्यों का प्रयोग करें, क्योंकि हिन्दी भाषा में लम्बे वाक्यों के प्रयोग का चलन प्रायः नहीं है। परन्तु वाक्यों को तोड़ने से आशय बदल जाने की सम्भावना भी बनी रहती है। अतः विधिक अनुवाद में प्रवृत्त अनुवादकों को पहले दो–तीन बार मूल नियम, विनियम या अधिनियम को पढ़कर उसमें निहित सांविधिक अर्थ व अभिव्यक्तियों का हिन्दी समतुल्य/पर्याय का पता लगाना चाहिए। जहाँ वाक्य को तोड़कर अर्थ सही निकल सकता है, वहाँ वाक्य तोड़ देना चाहिए। उपर्युक्त अंग्रेजी पैराग्राफ का हिन्दी अनुवाद देखिए –

''सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय द्वारा दिनांक 02/08/2006 को जारी अधिसूचना में केबिल टेलीविजन नेटवर्क नियमावली, 1994 में संशोधन किया गया है और इसके नियम 7 के उप–नियम 9 (विज्ञापन संहिता) में निम्नलिखित प्रतिस्थापन किया गया है–

ऐसे विज्ञापन जो 'भारतीय विज्ञापन मानक परिषद, मुम्बई' (ए.एस.सी. आई.) द्वारा सामूहिक प्रदर्शन के लिए समय–समय पर अंगीकृत विज्ञापन स्व–विनिमय संहिता का उल्लंघन करते हैं, को भारत में केबिल सेवा के अन्तर्गत प्रसारित न किया जाए।''

विधिक अनुवाद करना उतना आसान नहीं होता जितना अन्य विषयक अनुवाद में होता है, क्योंकि इसमें शब्द, अर्थ व अभिव्यक्ति तीनों के संयोग से जो व्यक्त होना चाहिए वह मूल के समकक्ष ही होना चाहिए। इसमें थोड़ा सा भी अर्थ भेद होने से अर्थ का अनर्थ हो सकता है। अतः विधिक अनुवाद ख़ासकर नियम, विनियम, अधिनियम का अनुवाद करते समय जहाँ कहीं शंका उत्पन्न हो उसे उच्चस्तरीय अनुवादकों के साथ चर्चा कर उसका समाधान ढूँढना चाहिए तथा ज़रूरत पड़ने पर उसका वकीलों से पुनरीक्षण (vetting) करवाना चाहिए। एक दूसरा उदाहरण यहाँ द्रष्टव्य है –

मूल अंग्रेजी –

Appeals – any person aggrieved by-

(a) an order of the registering authority rejecting his application for registration or requisting him to any to furnish any security or to comply with any term or condition (not being a prescribed term or condition) specified in the certificate issued to him or suspending or cancelling or refusing to renew the certificate issued to him; or

(b) an order of the competent authority rejecting his application for a permit or requiring him to comply with any terms or

conditions (not being a prescribed term or condition) specified in the permit issued to him, or suspending to cancelling or refusing to extend the period of refusing to renew the certificate issued to him; may prefer an appeal against such order to the central government within such period as may be prescribed.

हिन्दी अनुवाद –

अपीलें – (1) कोई ऐसा व्यक्ति जो –

(क) रजिस्ट्रीकरण के लिए उसके आवेदन को अस्वीकृत करने वाले या कोई प्रतिभूति देने के लिए उससे अपेक्षा करने वाले या उसको जारी किए गए प्रमाण–पत्र में विनिर्दिष्ट किसी निबंधन या शर्त का (जो विहित निबंधन या शर्त नहीं है) अनुपालन करने की अपेक्षा करने वाले अथवा उसको जारी किए गए प्रमाण–पत्र को निलंबित या रद्द करने वाले या उसका नवीकरण करने से इन्कार करने वाले रजिस्ट्रीकर्ता प्राधिकारी के किसी आदेश से; या

(ख) किसी अनुज्ञा–पत्र के लिए उसके आवेदन को अस्वीकृत करने वाले या उसको जारी किए गए अनुज्ञा–पत्र में विनिर्दिष्ट किन्हीं निबन्धनों या शर्तों का (जो विहित निबंधन या शर्त नहीं है) अनुपालन करने की अपेक्षा करने वाले अथवा उसको जारी किए गए अनुज्ञा–पत्र को निलंबित या रद्द करने वाले या उसकी विधिमान्यता की अवधि का विस्तार करने से इन्कार करने वाले सक्षम अधिकारी के किसी आदेश से; व्यथित है, वह ऐसे आदेश के विरुद्ध अपील ऐसी अवधि के भीतर, जो विहित की जाए, केन्द्रीय सरकार को करेगा।

4.1 विधिक अनुवाद की चुनौतियाँ

विधिक अनुवाद की वास्तविक चुनौतियों का सामना करने के लिए हमें व्यावहारिक या प्रायोगिक स्तर पर उतरना होगा। विधिक अनुवाद में सिर्फ़ शब्दावली (यानी मूल के अंग्रेजी शब्दों का हिन्दी पर्याय), उसकी भाषा व प्रकृति, सामान्य कठिनाइयाँ व सावधानियाँ जान लेने के उपरान्त क्या हम

निम्नलिखित पैरा का सटीक अर्थात् मूल के आशय को व्यक्त करने वाला अनुवाद कर सकते हैं या नहीं, देखते हैं :

मूल अंग्रेजी–

'The SCHEDULED TRIBE (RECOGNITION OF FOREST RIGHT) BILL, 2005 inter alia provides for the recognition and vesting of forest rights and occupation in forest dwelling Schedule Tribes who have been residing in such forest for generations but whose rights could not be recorded and for establishing a framework for recording the forest rights so vested and determine the nature of evidence required for such recognition and vesting in respect of forest land.'

उपर्युक्त मूल–पाठ न केवल एक लम्बा वाक्य है वरन् वह एक साथ कई अर्थों को प्रतिबिम्बित कर रहा है। अनेक शब्दों का प्रयोग दो–दो, तीन–तीन बार हुआ है। बहरहाल, पहले कुछ शब्दों का हिन्दी पर्याय चुनते हैं :

bill - बिल, विधेयक
inter alia - अन्य बातों के साथ–साथ
recognition - मान्यता, पहचान
vesting - न्यस्तता, निहितता
vested - न्यस्त, निहित
occupation - व्यवसाय, अधिकार, आधिपत्य
dwelling - निवासरत
residing - स्थायी रूप से किसी जगह रहना, बसना
forest land- वन भूमि, जंगल की जमीन, वन की ज़मीन, जंगल भूमि
provides - व्यवस्था है, प्रदान करता है, देता है
determine the nature of evidence- साक्ष्य की प्रकृति(या स्वरूप) का निर्धारण
generations- वंशज या पूर्वज

उपर्युक्त शब्दावलियों में से हमें केवल सही हिन्दी पर्याय को चुनना है। चयन करते समय उन शब्दों को छोड़ देना होगा जो सम्बन्धित विषय के सन्दर्भ में सही पर्याय या अर्थ को अभिव्यक्त नहीं करते। मूल को दो बार

पढ़ते ही यह समझ में आ जाता है कि पैरा को सहज ही दो भागों में बाँटा जा सकता है : *'The SCHEDULED TRIBE ... ...could not be recorded'* - पहला भाग है तथा *'and for establishing ... ...respect of forest land.'* - दूसरा भाग। पहले हिस्से का अनुवाद करने में कोई कठिनाई नज़र नहीं आ रही है। सिर्फ़ *generations* - वंशज या पूर्वज अर्थ को ध्यान में रखते हुए *for generations* - का अर्थ 'पीढ़ी दर पीढ़ी' लगा देने से इसका अनुवाद लगभग तैयार हो जाता है : अनुसूचित जनजाति (वन अधिकारों को मान्यता) विधेयक, 2005 में अन्य बातों के साथ–साथ, वन में निवासरत ऐसी अनुसूचित जनजातियाँ, जो पीढ़ी दर पीढ़ी वन में रहती आ रही हैं परन्तु उनका इस भूमि पर अधिकार एवं आधिपत्य अभिलिखित नहीं हो पाया है।

अब वाक्य के दूसरे हिस्से का अनुवाद करने से पहले इसे पुनः एक बार पढ़ने से यह स्पष्ट हो जाता है कि इसे भी सहज ही दो भागों में बाँटा जा सकता हैः

1. and for establishing a framework for recording the forest rights so vested
2. and determine the nature of evidence required for such recognition and vesting in respect of forest land.

दोनों हिस्सों का अनुवाद करते हैं :

1– और ऐसे न्यस्त वन अधिकारों की मान्यता को अभिलिखित करने हेतु एक ढाँचे की स्थापना करना

2– वह इस प्रकार के वन भूमि से सम्बन्धित मान्यता व न्यस्तता देने के लिए आवश्यक साक्ष्य के स्वरूप निर्धारण करने को मान्यता देना ।

अब हम इन तीनों हिस्सों को जोड़ते देते हैं तो अनुवाद तैयार हो जाता है–

हिन्दी अनुवाद –

''अनुसूचित जनजाति (वन अधिकारों को मान्यता) विधेयक, 2005 में अन्य बातों के साथ–साथ, वन में निवासरत ऐसी अनुसूचित जनजातियाँ, जो पीढ़ी दर पीढ़ी वन में रहती आ रही हैं, किन्तु उनका इस वन भूमि पर अधिकार एवं आधिपत्य अभिलिखित नहीं हो पाया है और ऐसे न्यस्त वन अधिकारों की मान्यता को अभिलिखित करने हेतु एक ढाँचे की स्थापना करने व इस प्रकार के वन भूमि से सम्बन्धित मान्यता व न्यस्तता देने

के लिए आवश्यक साक्ष्य के स्वरूप निर्धारण करने को भी मान्यता प्रदान की गई है।''

इस प्रकार हम लम्बे वाक्य को तोड़कर उसका हिन्दी अनुवाद तैयार कर सकते हैं। हमें इसके लिए थोड़ी सावधानी बरतने की ज़रूरत है। मूल को ठीक से समझना और सन्दर्भानुसार सटीक हिन्दी पर्याय चुनना। साथ में यह भी ध्यान रखा जाए कि केवल विधिक शब्द का हिन्दी पर्याय ही विधि शब्दावली से ग्रहण किया जाए और मूल–पाठ में प्रयुक्त गैर पारिभाषिक/सामान्य शब्दों का हिन्दी पर्याय अन्य मानक शब्दावली से लिया जाए।

5. बोध प्रश्न

1. 'विधि' शब्द का अर्थ बताते हुए विधि के पाँच अंग्रेजी शब्द एवं उनका हिन्दी पर्याय लिखिए ?

.....

.....

.....

.....

2. निम्नलिखित विदेशी शब्दों का हिन्दी पर्याय लिखिए ?

1- Mutatis mutandis - .....
2- En bole - .....
3- Inter alia - .....
4- Ipso facto - .....
5- Falsus in uno falsus in omnibus-.....
6- Sine qua non - .....
7- In loco parentis - .....
8- Ipso jure - .....

3. विधिक अनुवाद की प्रक्रिया में किन–किन बातों का ध्यान रखना चाहिए ?

.....

.....

.....

.....

.....

4. राजभाषा (विधायी) आयोग के सन् 1955 के आदेश में किस बात बल दिया गया है ?

.....

.....

.....

.....

5. विधिक भाषा की विशिष्टताओं का उल्लेख कीजिए ?

.....

.....

.....

.....

6. सारांश

विधि और प्रशासनिक सामग्री का अनुवाद मूलतः भारतीय संविधान के राजभाषा विषयक प्रावधानों के क्रियान्वयन का एक हिस्सा है। इस हेतु महामहिम राष्ट्रपति महोदय के हस्ताक्षर से सन् 1952, 1955 और 1960 में विशेष आदेश जारी किए गए। 1955 के आदेश में प्रशासनिक रिपोर्ट, सरकारी पत्रिकाएँ, संसद में प्रस्तुत की जाने वाली रिपोर्टें, सरकारी संकल्प और विधायी अधिनियम, संधियाँ और करार, अन्य देशों की सरकारों और उनके दूतों, तथा अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों के साथ पत्र–व्यवहार आदि में सरकारी प्रयोजनों हेतु अंग्रेजी भाषा के अतिरिक्त हिन्दी का प्रयोग भी प्राधिकृत किया गया।

'विधि' की भाषा का अपना वैशिष्ट्य होता है। न्याय–भाषा में द्विअर्थकता अथवा संदिग्धार्थकता नहीं होनी चाहिए, ताकि अर्थ निर्णय में कहीं, किसी प्रकार की भ्रांति न हो। सरलता, स्पष्टता, संक्षिप्तता, अभिधार्थपरकता तथा पारदर्शिता न्याय की भाषा की उल्लेखनीय विशेषताएँ हैं।

विधिक अनुवाद करना उतना आसान नहीं होता जितना अन्य विषयक अनुवाद में होता है, क्योंकि इसमे शब्द, अर्थ व अभिव्यक्ति तीनों के संयोग से जो व्यक्त होना चाहिए वह मूल के समकक्ष ही होना चाहिए। इसमें थोड़ा सा भी अर्थ भेद होने से अर्थ का अनर्थ हो सकता है। अतः विधिक अनुवाद ख़ासकर नियम, विनियम, अधिनियम का अनुवाद करते समय जहाँ कहीं शंका

उत्पन्न हो उसे उच्चस्तरीय अनुवादकों के साथ चर्चा कर उसका समाधान ढूँढना चाहिए तथा ज़रूरत पड़ने पर उसका वकीलों से पुनरीक्षण (vetting) करवाना चाहिए।

7. बोध प्रश्नों के उत्तर

1. देखें भाग 4.1
2. 1- आवश्यक परिवर्तन सहित
   2- एक साथ
   3 - अन्य बातों के साथ–साथ
   4 - स्वयमेव, स्वतः
   5- एक बात में झूठ तो सब में झूठ
   6 - अनिवार्य शर्त
   7 - माता–पिता के बदले में
   8 - विधितः
3. देखें भाग 4.1
4. देखें भाग 3.1
5. देखें भाग 3.3

इकाई–5 : बैंकिंग सामग्री का अनुवाद

रूपरेखा

1. उद्देश्य
2. प्रस्तावना
3. बैंकिंग : सामान्य परिचय
4. बैंकिंग क्षेत्र में हिन्दी
5. बैंकिंग शब्दावली
   - 5.1 बैंकिंग शब्दावली
   - 5.2 बैंकों में प्रयुक्त संक्षेपों का विस्तार
   - 5.3 बैंकों में प्रयुक्त कुछ पदनाम
6. बैंकिंग क्षेत्र में अनुवाद
   - 6.1. आन्तरिक बैंकिंग सामग्री का अनुवाद
   - 6.2. ग्राहकों से पत्राचार
7. बोध प्रश्न
8. सारांश
9. बोध प्रश्नों के उत्तर

1. उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- बैंकिंग क्षेत्र का सामान्य परिचय पा सकेंगे;
- बैंकिंग शब्दावली से परिचित होंगे;
- बैंकिंग हिन्दी के स्वरूप को समझ सकेंगे;
- बैंकिंग क्षेत्र में व्यवहृत द्विभाषी पत्राचार से परिचित होंगे;
- बैंकिंग अनुवाद की प्रक्रिया एवं स्वरूप को समझ सकेंगे;

2. प्रस्तावना

प्रस्तुत अध्याय 'बैंकिंग सामग्री का अनुवाद' में बैंकिंग के स्वरूप, बैंकिंग शब्दावली, बैंकिंग हिन्दी के अलावा बैंकिंग क्षेत्र में हो रहे विविध अनुवाद की

चर्चा की गई है। इसके साथ ही द्विभाषी बैंकिंग पत्राचार, विविध प्रपत्रों एवं सामग्रियों के अनुवाद की चर्चा भी सविस्तार–सोदाहरण की गई है।

3. बैंकिंग : सामान्य परिचय

मानव–सभ्यता के भौतिक कलेवर को परिष्कृत एवं समृद्ध बनाने में मुद्रा एवं बैंकिंग का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। आधुनिक युग में मुद्रा तथा बैंकिंग को विकसित अर्थतंत्र का मेरुदंड माना जाता है।

आज के उपभोक्तावादी और बाजार–संस्कृति के युग में बैंकिंग–प्रणाली एक महत्त्वपूर्ण वित्तव्यवस्था बन गई है। दूसरे शब्दों में, बैंकिंग उद्योग हमारे देश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। वर्तमान में देश की अर्थव्यवस्था बैंकिंग उद्योग पर पूरी तरह निर्भर है। दूसरे शब्दों में कहें तो बैंकिंग उद्योग अर्थव्यवस्था की वह धुरी है जिस पर सभी व्यवसाय टिके हुए हैं। यही कारण है कि बैंकिंग व्यवस्था के प्रभावित होने से देश की अर्थव्यवस्था प्रभावित होती है।

बैंकों के राष्ट्रीयकरण के पश्चात् बैंकों की जिम्मेदारी और बढ़ गई। राष्ट्रीयकरण के बाद बैंकों की शाखाओं का तेजी से विस्तार हुआ। बैंकों के सामने लाभ कमाने के अलावा सामाजिक उत्थान एवं राष्ट्रीय नवनिर्माण का उत्तरदायित्व बढ़ा।

आज प्रचलित 'बैंक' शब्द मूलतः इटली से आया है। सन् 1171 में इटली में आए एक बहुत बड़े आर्थिक संकट से लड़ने के लिए वहाँ के नागरिकों से उनकी सम्पत्ति का एक प्रतिशत अंश अनिवार्य ऋण के रूप में लेकर बैंक की स्थापना की गई थी। नागरिकों से प्राप्त एक प्रतिशत ऋण से जब अपार पूँजी एकत्रित हो गई तो उस विशाल पूँजी को वहाँ की भाषा में 'मोन्टे' कहा गया जो आगे चलकर जर्मन भाषा के पर्याय शब्द 'Bank' के रूप में प्रयुक्त होने लगा। प्रयोग में आते–आते यह शब्द इटली में 'बैंकों', फ्रांस में 'बैंके' तथा अंग्रेजी में 'बैंक' के रूप में प्रयुक्त होने लगा। भारत में बैंकों की शुरुआत अंग्रेजों के आने के बाद, 18वीं सदी के प्रारम्भ में हुई। स्वतंत्रता के बाद भारत के चौदह बैंकों का राष्ट्रीयकरण हुआ तथा सन् 1980 में छः अन्य बैंकों राष्ट्रीयकरण भी किया गया। केवल भारत में ही नहीं अपितु संसार के सभी विकासशील देशों में बैंक आज अधुनातन पद्धति को अपनाते हुए ग्राहक एवं समाज सेवा में ही नहीं राष्ट्र सेवा में भी तेजी से अग्रसर हो रहे हैं।

आज संपूर्ण विश्व में छोटे–बड़े बैंकों की अनेक शााखाएँ धन की सुरक्षा के साथ–साथ उसका लाभप्रद विनियोग करते हुए राष्ट्रीय एवं अन्तरराष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को संवर्द्धित तथा नियंत्रित कर रही हैं। परन्तु बैंकिंग प्रणाली का जा विकसित स्वरूप आज दिखाई दे रहा है, वह आकस्मिक न होकर मानव–जाति के दीर्घकालीन प्रयत्न एवं अनुभव का परिणाम है। इसका स्वरूप क्रमशः सामाजिक–आर्थिक विकास की नाना अवस्थाओं से होकर स्पष्ट हुआ है।

4. बैंकिंग क्षेत्र में हिन्दी

राष्ट्रीयकरण के पूर्व तक बैंकों में सामान्यतः अंग्रेजी में सभी कार्य किए जाते रहे। बैंकिंग व्यवथा का समस्त कामकाज अंग्रेजी भाषा में होने के कारण प्रारम्भ में अधिकांश भारतीय समाज बैंकिंग सुविधाओं से कोसों दूर था। राष्ट्रीयकरण के बाद जब बैंक गाँव, कस्बों एवं अन्य क्षेत्रीय जगहों पर पहुँचने लगे तो यह अनुभव किया जाने लगा कि अब बैंकों में केवल अंग्रेजी से काम नहीं चल सकता। यह भी कि बैंकिंग व्यवस्था का सीधा सम्बन्ध भारतीय जनता से है, अतः यहाँ की जनभाषा के द्वारा ही ठीक प्रकार से काम किया जा सकता है। इसके बाद बैंकों का स्वरूप ही बदल गया।

राष्ट्रीयकरण के उपरान्त भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन तथा राजभाषा अधिनियम, 1963 और उसके अन्तर्गत बनाये गये राजभाषा नियमों के कार्यान्वयन का उत्तरदायित्व बैंकों पर भी आ गया। पिछले पाँच दशकों के दौरान समस्त सरकारी क्षेत्रों के बैंकों में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ाने की ओर कई ठोस कदम उठाये गये।

भारत जैसे विकासशील देश में जहाँ जनता प्रायः गरीब और कम शिक्षित है, वहाँ बैंकिंग प्रक्रियाएँ अत्यंत सरल होनी चाहिए, ताकि गाँव और कस्बों की जनता उन्हें आसानी से समझ सके। दूसरी बात यह है कि आज बैंकिंग कामकाज उसके कार्यालयों की चारदीवारी तक ही सीमित नहीं रह गया है। खेती से सम्बन्धित बैंक के कामकाज के सिलसिले में बैंक के अधिकारियों/कर्मचारियों को खुद ग्रामीण लोगों के पास जाना पड़ता है। ग्रामीण लोग इस इरादे से बैंक के पास आते हैं कि उनके लिए बनायी गयी बैंक की योजनाओं का फायदा उन्हें मिले। यहाँ स्थानीय भाषा का ज्ञान और अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाता है। यदि हम चाहते हैं कि हमारे और एक भाषा

जाननेवाली ग्रामीण जनता के बीच सीधा संवाद हो, तो हमें उन्हीं की भाषा में काम करना होगा। इस सम्बन्ध में हिन्दी का महत्त्व निर्विवाद है।

आज बैंकिंग का स्वरूप बदल चुका है; और तद्अनुरूप उसकी भाषा की शैली भी। उदाहरण के लिए निम्नलिखित वाक्यों को देखें :

1)– भारतीय रिज़र्व बैंक के अधिदेश के अनुसार आपके बैंक में अशोध्य ऋण के लिए प्रावधान 53.97% से बढ़ाकर 70.45% कर दिया गया है।

2)– शाखाएँ कृपया इन नम्बरों को अपनी बहियों में नोट करें ताकि उक्त चेक अदायगी हेतु प्रस्तुत किये जाने पर सावधानी बरती जा सके।

प्रतिस्पर्धा, प्रतियोगिता की दौड़ में एक सच आज भी कायम है कि बैंकिग की हर गतिविधि के केन्द्र में है 'ग्राहक', चाहे छोटा हो या बड़ा, शहरी हो या ग्रामीण। बैंकिंग की दिशा फिर एक बार ग्रामीण क्षेत्र और निचले स्तर पर जीवन बसर कर रही देश की जनता की ओर मुड़ी है और उसके साथ उसी की भाषा में आज हम बात करने को विवश हैं । इस सन्दर्भ में 'ग्राहक सेवा केन्द्र' की ओर से जारी हिन्दी में विज्ञापन द्रष्टव्य है :

सरकारी क्षेत्र के बैंक

बेहतर सेवा के लिए

सरकारी क्षेत्र के बैंकों ने पंजाब नैशनल बैंक के नेतृत्व में संघ शासित क्षेत्र दिल्ली के लिए ग्राहक सेवा केन्द्र का गठन किया है। यदि आपको दिल्ली स्थित सरकारी क्षेत्र के बैंक की किसी भी शाखा के विरुद्ध कोई शिकायत हो तो हमें सम्बन्धित बैंक की शाखा का नाम और अपना पता लिखते हुए अपनी शिकायत भेजें। आपकों सम्बन्धित बैंक से एक माह के अन्दर अन्तिम उत्तर अथवा यदि शिकायत के निवारण के लिए अधिक समय चाहिए हो तो, अन्तरिम उत्तर मिल जायेगा।

–आपके सुझावों का भी स्वागत है। कृपया अपने सुझाव ***'पोस्ट बॉक्स–458, नई दिल्ली–110001'*** *पर भेजें।*
दिल्ली में सरकारी क्षेत्र के बैंकों का–

'ग्राहक सेवा केन्द्र

बैंकिंग सेवाओं को ठीक तरह से चलाने के लिए, कर्मचारियों और अधिकारियों को कम्पनी कानून, बिक्री कर कानून, बैंकिंग अधिनियम आदि की जानकारी देना आवश्यक होता है। बैंकिंग सेवाओं में ऋण देने तथा हुंडियों

आदि के आधार पर अग्रिम देने से सम्बन्धित कार्यों की विशेष जानकारी देने की जरूरत होती है। इस दृष्टि से बैंकिंग सेवा करने वाले व्यक्तियों के लिए बैंकिंग सेवाओं से सम्बन्धित नवीनतम ज्ञान की जरूरत होती है। यह ज्ञान विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम के माध्यम से दिलवाया जाता है। बैंकों में यह प्रशिक्षण कार्य हिन्दी माध्यम से भी किया जा रहा है।

5. बैंकिंग शब्दावली

बैंकों में हिन्दी के प्रयोग की शुरुआत के समय से ही इस बात की आवश्यकता महसूस की गई थी कि बैंकिंग क्षेत्र में प्रयुक्त हिन्दी शब्दावली का मानकीकरण किया जाए ताकि उसमें एकरूपता सुनिश्चित की जा सके। देश के शीर्ष बैंक होने के नाते भारतीय रिज़र्व बैंक ने इस दिशा में अपने उत्तरदायित्व का निर्वाह करते हुए वर्ष 1980 में पहली बार 'अंग्रेजी–हिन्दी बैंकिंग शब्दावली' का प्रकाशन किया जिसने बैंकिंग क्षेत्र में हिन्दी शब्दावली के मानकीकरण में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

भूमंडलीकरण और वित्तीय सुधारों के इस दौर में बैंकिंग क्षेत्र के कार्यकलापों में जहाँ नए आयाम जुड़े हैं, वहीं उसमें आमूलचूल परिवर्तन भी हुए हैं। इस बदलती परिस्थितियों में वित्तीय और बैंकिंग क्षेत्र में नई–नई अवधारणाओं ने जन्म लिया है और नई–नई शब्दावलियाँ सामने आई हैं :

क. Encumbrance (भार / ऋण–भार) :

1.– जब किसी अचल सम्पत्ति अथवा आस्ति को बंधक रखकर ऋण लिया जाता है तो वह भारग्रस्त हो जाती है।,

2.– भूमि अथवा अन्य सम्पत्ति में कानूनी दावा, ऋणभार अथवा हित।

ख.Hypothecation (दृष्टिबंधक / अडमान) :

ऋण के लिए चल सम्पत्ति पर जमानत के रूप में सृजित ऋणभार दृष्टिबंधक कहलाता है। यह माल की संपार्श्विक जमानत (कोलेटरल सिक्योरिटी) प्रदान करने का तरीका है जिसमें सम्पत्ति का स्वामित्व और कब्जा दोनों ऋणकर्त्ता के पास ही रहते हैं। यही नहीं ऋणकर्त्ता उस सम्पत्ति का उपयोग कर सकता है और उससे लाभार्जन भी कर सकता है। ऋणदाता को केवल यह अधिकार मिलता है कि ऋणकर्त्ता द्वारा ऋण का भुगतान न किए जाने पर वह उस सम्पत्ति को बिकवा सकता है।

ग.Lien (पुनर्ग्रहणाधिकार) :

किसी लेनदार द्वारा देनदार के वास्तविक या व्यक्तिगत सम्पत्ति में सभी ऋणभारों की चुकौती के लिए धारित कोई ब्याज या अन्य ऋणभार। देनदार और लेनदार के बीच आपसी समझौते जैसे जमानत समझौता अथवा किसी बंधक के परिणामस्वरूप ग्रहणाधिकार की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। वैकल्पिक रूप में, न्यायालय अथवा कानून द्वारा ग्रहणाधिकार स्थापित किया जा सकता है।

5.1 बैंकिंग शब्दावली :

Accommodation bill : निभाव बिल
Accord and satisfaction : समझौता और तुष्टि
Account : लेखा, खाता
Acid test ratio: साख निर्धारण अनुपात
Advance : अग्रीम, पेशगी
Attachment : कुर्की
Balance of payment : भुगतान संतुलन
Bankruptcy : दिवालियापन
Bank charges : बैंक प्रभार
Bearer : धारक
Book : बही
Chest : तिजोरी
Clearing : समाशोधन
Credit : जमा, उधार
Credit squeeze : ऋण–संकुचन
Debit account : नामे लेखा
Dishonoured cheque : नकारा गया चैक
Encumbrance : भार/ऋण–भार
Endowment : धर्मस्व, धर्मादा
Face value : अंकित मूल्य
Financial closure : वित्तीय समापन
Hypothecation : दृष्टिबंधक, अडमान
Interest : ब्याज
Interest rate : ब्याज दर
Invoice : बीजक

Letter of credit : साखपत्र
Lien : पुनर्ग्रहणाधिकार
Liquid assets : चलनिधि आस्तियाँ
Mobile banking : मोबाइल बैंकिंग
Moratorium : ऋणस्थगन / अधिस्थगन
Mortgage bonds : बंधक बांड
Net : निवल
Net settlement : निवल / शुद्ध निपटान
Settlement : निपटान
Suspense : उचंत
Term loan : सावधि / मियादी ऋण
Term deposit : सावधि / मियादी जमा
Transaction : लेन–देन
Outstanding balance : बकाया जमा
Over head expenditure : उपरिव्यय
Write off : बट्टे खाते डालना / लिखना

5.2 बैंकों में प्रयुक्त संक्षेपों का विस्तार :

बैंकों में बहुत सारे संक्षेपों का प्रयोग किया जाता है, जैसे आर.बी.आई, डीडी., सी.आर.आर. आदि। कुछ संक्षेपों का विस्तार विद्यार्थियों के संदर्भार्थ दिया जा रहा है :

P/N : Promissory Note (वचन पत्र)
DIR : Differential Interest Rate (विभेदक ब्याज दर)
B/L : Bill of Lading (लदान प्रपत्र)
CDR : Credit Deposit Ratio (ऋण–जमा अनुपात)
NABARD : National Bank for Agriculture & Rural Development (राष्ट्रीय कृषि व ग्रामीण विकास बैंक)
SDR : Special Drawing Rights (विशेष आहरण अधिकार)
R/C : Recovery Certificate (वसूल प्रमाण–पत्र)
RBI : Reserve Bank of India (भारतीय रिज़र्व बैंक)
DD : Demand Draft (माँगड्राफ्ट)

DRDA : District Rural Development Agency (जिला ग्रामीण विकास एजेन्सी)

CRR : Credit Reserve Ratio (नकद आरक्षित अनुपात)

VP : Value Payble (मूल्य देय)

5.3 बैंकों में प्रयुक्त कुछ पदनाम :

Area Manager : क्षेत्र प्रबन्धक

Chief Manager : मुख्य प्रबन्धक

Chief Development Officer : मुख्य विकास अधिकारी

Divisional Manager : मंडल प्रबन्धक

General Manager : महाप्रबन्धक

Gold Appraiser : स्वर्ण मूल्यांकक

Executive Director : कार्यपालक निदेशक

Field Officer : क्षेत्र अधिकारी

Manager : प्रबन्धक

Management Exucutive : प्रबन्ध अधिकारी

Management Exucutive Officer : प्रबन्ध अधिशासी अधिकारी

Managing Director : प्रबन्ध निदेशक

Probationary Officer : परिवीक्षा अधिकारी

Regional Manager : क्षेत्रीय प्रबन्धक

Senior Manager : वरिष्ठ प्रबन्धक

Security Officer : सुरक्षा अधिकारी

Vigilance Officer : सतर्कता अधिकारी

6. बैंकिंग क्षेत्र में अनुवाद

राष्ट्रीयकरण के उपरान्त बैंकों के सभी कागजातों, प्रपत्रों, विज्ञापनों, प्रविष्टियों आदि को अंग्रेजी के साथ–साथ हिन्दी में भी उपलब्ध कराए जाने की तैयारी की गई। इस क्रम में बैंकों में अनुवाद की उपयोगिता एवं महत्ता को समझा गया। समय बीतने के साथ–साथ अनुवाद कार्य में भी तेजी आई और यह मुख्य धारा का कार्य बन गया। ऊपर बैंकिंग शब्दावली, पदनाम, संक्षिप्ति आदि की चर्चा की जा चुकी है। अब बैंकिंग समाग्रियों के अनुवाद पर विचार करते हैं। बैंक सामग्री को मुख्यतः दो भागों में बाँटा जा सकता है :

1. बैंकिंग प्रक्रिया से सम्बद्ध सामग्री
2. ग्राहकों से सम्बद्ध सामग्री

बैंकिंग प्रक्रिया से सम्बद्ध सामग्री के अन्तर्गत स्थायी स्वरूप के सभी फॉर्म या पत्रादि सामग्री आते हैं जिसमें बैंकिंग कार्य–विधि, अनुदेश पुस्तिकाएँ, समस्त प्रशिक्षण सामग्री, सेवा निमय के अलावा परिपत्र, भारतीय रिज़र्व बैंक के साथ पत्राचार, क्षेत्रीय एवं केन्द्रीय कार्यालयों को भेजे गए पत्र आते हैं।

ग्राहकों से सम्बद्ध सामग्री के अन्तर्गत ग्राहको द्वारा भरे जाने वाल समस्त प्रपत्र, दस्तावेज, आवेदन पत्र, चैक, जमा पर्चियाँ, वचन पत्र आदि के अलावा बैंक द्वारा ग्राहकों को भेजे जाने वाले पत्र, विज्ञापन सामग्री, ड्राफ्ट, जमा रसीद, देयादेश आदि आते हैं।

6.1 आन्तरिक बैंकिंग सामग्री का अनुवाद

पहले बैंक की आन्तरिक प्रक्रिया से सम्बन्धित छोटे–छोट वाक्यों/वाक्यांशों का अनुवाद करते हैं :

1. Account opened by –खाता खालने वाले का नाम
2. Serve legal notice to the borrower.
   –ऋण लेने वाले के नाम कानूनी नोटिस जारी करवाएं।
3. Name of the deposit scheme – जमा योजना का नाम
4. Application for opening term deposit account
   –सावधि जमा खाता खोलने के लिए प्रार्थना–पत्र
5. Letter of thanks sent to customer on.....and acknowledgement received on.....
   –ग्राहक को धन्यवाद पत्र दिनांक.....को भेजा गया तथा उसकी पावती दिनांक..... को मिली।
6. Clearing house is not working.
   –समाशोधन गृह काम नहीं कर रहा
7. For the purpose of clearing the liabilities in above Loan Account No.....
   –उपर्युक्त ऋण खाता संख्या.....की बकाया राशि के समाशोधन के उद्देश्य से।
8. Thumb Impression(s) shall be attested by two witness.
   –अँगूठे की छाप दो साक्षियों द्वारा अनुप्रमाणित होगी।

ऊपर्युक्त सामान्य बैंकिंग वाक्यों के अनुवाद से स्पष्ट हो जाता है कि बैंकिंग सामग्री का अनुवाद करते समय सन्दर्भानुसार बैंकिग प्रयुक्तियों का विशेष ध्यान रखना जरूरी है। इसीलिए निम्नलिखित सरणी में कुछ विशिष्ट शब्दों का बैंकिंग प्रयुक्ति परक अर्थ एवं अन्य प्रयुक्ति परक अर्थ की तुलना दर्शाई गई है :

अंग्रेजी शब्द	**बैंकिंग प्रयुक्ति अर्थ**	**अन्य प्रयुक्ति अर्थ**
Net	निवल	जाल
Interest	ब्याज	रुचि
Advance	अग्रिम	पेशगी, आगे बढ़ना
Attachment	कुर्की	लगाव
Balance	बाकी, शेष	तौल, संतुलन
Chest	तिजोरी	छाती या सीना
Credit	उधार	साख
Settlement	भुगतान	समझौता
Suspense	उचंत	अनिश्चय
Term	मियाद / शर्त	पद
Will	वसीयत	इच्छा

अब बैंकिंग गतिविधि सम्बन्धी निम्नलिखित वाक्यों का अनुवाद करते हैं :

1. We are advised by our.....branch that cheque leaves bearing numbers..... to..... are missing from their branch.....
   –हमें अपनी ..... शाखा से सूचना मिली है कि उनकी शाखा से..... से .....तक नम्बर वाली चेक पर्चियाँ गुम हो गई हैं।

2. Branches are please make a note of the numbers in their books in order to exercise caution, should the cheques be presented to them for payment.
   –शाखाएँ कृपया इन नम्बरों को अपनी बहियों में नोट करें ताकि उक्त चेक अदायगी हेतु प्रस्तुत किये जाने पर सावधानी बरती जा सके।

3. We enclose a copy of letter received by Indian Bank Association from a member bank, for the information and guidance of all branches.

–हम, सभी शाखाओं की सूचना एवं मार्गदर्शन हेतु भारतीय बैंक संघ को एक सदस्य बैंक से प्राप्त पत्र की प्रति संलग्न कर रहे हैं।

4. Branches are requested to honour the Interest Warrants issued by the captioned company on presentation, if otherwise in order.
–शाखाओं से अनुरोध है कि वे उल्लेखित कंपनी द्वारा जारी किये गये ब्याज वारंटों को प्रस्तुत किये जाने पर तथा ठीक पाये जाने पर सकारें।

5. Your Bank has increased its provisioning for bad debts to 70.45% from 53.97% as mandated by Reserve Bank of India.
–भारतीय रिज़र्व बैंक के अधिदेश के अनुसार आपके बैंक में अशोध्य ऋण के लिए प्रावधान 53.97% से बढ़ाकर 70.45% कर दिया गया है।

6. A dividend of 50% has been recommended by the Board of Directors for the year 2014-15, highest in the history of SBI.

–वर्ष 2014–15 के लिए निदेशक मंडल ने 50% लाभांश की सिफारिश की है जो भारतीय स्टेट बैंक के इतिहास में अत्यधिक है।

अगर अनुवादक बैंकिंग संकल्पना से परिचित है तो उन्हें ऐसे वाक्यों का अनुवाद करने में कोई कठिनाई नहीं होनी चाहिए। परन्तु कभी–कभी लम्बे वाक्यों वाली अंग्रेजी सामग्री का भी हिन्दी अनुवाद करना पड़ता है। लम्बे वाक्य का अनुवाद करने समय हमें चैकन्ना रहना पड़ेगा वरना अर्थ का अनर्थ होने की आशंका बनी रहेगी। ऐसी स्थिति में अंग्रेजी के लम्बे वाक्य को दो–तीन छोटे वाक्यों में विभाजित कर उनकी क्लिष्टता को दूर करने का प्रयास करना चाहिए। निम्नलिखित अनुच्छेदों का हिन्दी अनुवाद देखिए :

1. मूल :

When cheques for amount are placed to credit of new accounts, they must be watched with particular care not only by the ledger-keeper but also by the checking officials. Ledger clerks should be specially instructed to watch the operation on new accounts and supervising officials should keep a more vigilant eye on the operations when they check credit vouchers and pass the cheques. Any transaction which may seem abnormal having regard to the known resources of the customers should evoke an enquiry.

हिन्दी अनुवाद :

जब बड़ी रकमों के चेक नये खातों में जमा हेतु प्रस्तुत किये जाते हैं, तब लेजर–बाबू को ही नहीं बल्कि जाँच करने वाले अधिकारी को भी चाहिए कि वह उस पर निगरानी रखे। बही क्लर्कों को विशेष रूप से अनुदेश दिया जाए कि वे नये खातों के परिचालनों पर नज़र रखें। पर्यवेक्षी अधिकारियों को भी जमा वाउचर तथा चेक पास करते समय इन बातों पर कड़ी निगरानी रखनी चाहिए। यदि ग्राहक अपने सामान्य संसाधन से परे कोई असाधारण लेन–देन करे तो उसकी जाँच–पड़ताल करना आवश्यक है।

2. मूल :

I/We request you to open a Term Deposit..... in my/our name(s) in accordance with the rules of the Bank on the following terms and conditions and issue me/us deposit receipt/pass books. I/We agree to be bound by the Bank's rules and regulations governing such as accounts from time to time.

I/We am/are aware that should the bank agree for the premature closure of the deposit at my/our request in writing, the interest rate on such foreclosed deposit willl be lower than the contracted rate depending on the period the deposite remained with the bank and subject to the bank's Policy/RBI/IBA guidelines in force at the time of the premature closure.

हिन्दी अनुवाद :

मैं/हम आपसे अनुरोध करता हूँ/करती हूँ/करते हैं कि निम्नलिखित निबन्धनों एवं शर्तों पर बैंक के नियमों के अनुसार मेरे/हमारे नाम से सावधि जमा..... खोलें और मुझे/हमें जमा रसीद/पास बुक जारी करें। मैं/हम ऐसे खाते पर समय–समय पर लागू बैंक के नियमों व विनियमों से बाध्यकर रहना स्वीकार करता हूँ/करती हूँ/करते हैं।

मुझे/हमें मालूम है कि जमा को परिपाक–अवधि पूरी होने से पहले ही बंद करने के लिए मेरे/हमारे द्वारा लिखित रूप से किये गये अनुरोध को बैंक द्वारा स्वीकार कर लिये जाने की हालत में परिपाक–अवधि पूरी होने से पहले बंद की जाने वाली ऐसी जमाओं पर दी जाने वाली ब्याज–दर, संविदागत–दर से कम होगी और उक्त दर, जमा राशि के बैंक में जमा रहने की अवधि व बैंक की नीति/भारतीय रिज़र्व बैंक/ आई.बी.ए. के दिशानिर्देश

पर आधारित होगी जो जमा को परिपाक–अवधि से पहले बंद किये जाते समय व्यवहार में होंगे।

3 मूल :

The Indian economy is estimated to have recorded a growth in the range of 8.2%-8.2% during the year 2011-12 as against 7.9% recorded during 2010-11. As on 01.04.2011, Foreign Exchange Reserves stood at USD 305 billion showing an increase of USD 26 billion as against increase of USD 11 billion during the corresponding period a year ago. India's exports grew 37.6% in the fiscal year 2010-11 at USD 245.9 billion surpassed the Government's original target of USD 200 billion. Imports also grew and stood at USD 351 billion and trade deficit was within manageable limit of USD 104.8 billion. It reflects higher external demand and on the whole, economic recovery which began in the second quarter of 2009-10 has gained momentum. During 2010-11, equity markets generally remained firm with intermittent corrections in line with the global movement. The BSE Sensex improved from 17522.77 on 01.04.2010 to 19445.22 on 31.03.2011.

हिन्दी अनुवाद :

वर्ष 2010–11 के दौरान भारतीय अर्थव्यवस्था में हुई 7.9% वृद्धि की तुलना में वर्ष 2011–12 के दौरान 8.2%–8.5% की वृद्धि हुई है। 01.04.2011 तक विदेशी विनियम आरक्षितियाँ यू.एस.डी. 305 बिलियन रहीं, जो कि गत वर्ष उसी अवधि के लिए यू.एस.डी. 11 बिलियन ही वृद्धि के मुकाबले यू.एस.डी. 26 बिलियन की बढ़ोत्तरी है। वित्तिय वर्ष 2010–11 में भारत के निर्यात में यू.एस.डी. 245.9 बिलियन की यानि 37.6% की वृद्धि हुई जो कि सरकार के यू.एस.डी. 200 बिलियन के मूल लक्ष्य का अधिगमन है। आयात में भी वृद्धि हुई और यह वृद्धि यू.एस.डी. 351 बिलियन की रही तथा कारोबार में गिरावट भी यू.एस.डी 104.8 बिलियन की मैनेजबल सीमा में रही। इससे उच्चतर बाहरी माँग परिलक्षित होती है और समवेत रूप से आर्थिक परिष्कृति, जो कि 2009–10 के द्वितीय तिमाही से शुरू हुई थी, ने गति प्राप्त की। वर्ष 2010–11 के दौरान वैश्विक गतिविधियों के अनुसार अनियमित सुधारों के साथ ईक्विटी का बाजार सामान्यतः अडिग रहा। वर्ष 2010–11 के दौरान ईक्विटी बाजार वैश्विक अभियान के चलते आन्तरायिक सुधारों के साथ स्थिर

रहा। बी.एस.ई. सेंसेक्स 01.04.2010 के 17527.77 की तुलना में 31.03.2011 को 19445.22 रहा है।

ऐसी सामग्री के अनुवाद में अगर कहीं समझने या भाषान्तरित करने में दिक्कत आती है तो अनुवादक को चाहिए कि वे अपने उच्चतर अधिकारी के सहयोग से मूलपाठ के सन्दर्भ को भलीभाँति समझने के उपरान्त ही उसका अनुवाद करना चाहिए। उदाहरण के लिए पहले पैरा में रेखांकित वाक्य इस सन्दर्भ में महत्त्वपूर्ण है। अनुवादक सन्दर्भ को समझकर ही उसका सटीक अनुवाद किया है।

6.2. ग्राहकों से पत्राचार

हिन्दी पत्राचार उसी का एक अंग है। सामान्यतः बैंकों में चार स्तरों पर पत्राचार होता है :

1. अंतर बैंक पत्राचार
2. अंतःबैंक पत्र–व्यवहार
3. बैंकों से भिन्न संस्थाओं के साथ पत्राचार
4. ग्राहकों के साथ पत्राचार।

कुछ विशिष्ट द्विभाषी–पत्रों का नमूना आगे दिया गया है। सबसे पहले बैंकों में ग्राहकों के लिए प्रयुक्त निम्नलिखित अंग्रेजी–हिन्दी की सामग्रियों को देखें :

क. *ग्राहकों से सम्बन्धित सामग्रियों का अनुवाद*

1. Please open a Saving Fund/Current Account in my/our name/ in the name of _____ I/We agree to comply with and be bound by Bank's rules now and from time to time in force for conduct of such accounts. Please furnish me/us with a Pass Book and Cheque Book.

हिन्दी अनुवाद :

1. कृपया मेरे/हमारे ..... के नाम में अपने यहाँ बचत/चालू खाता खोलें। मैं/हम सहमति देता/देती हूँ/देते हैं कि मैं/हम इस समय और समय–समय पर लागू बैंक नियमों का अनुपालन करूँगा/करूँगी/करेंगे और उनसे आबद्ध रहूँगा/रहेंगे। कृपया मुझे/हमें पास–बुक और चैक बुक जारी करें।

2. I wish to take loan from Public Provident Fund Account No._____ of a sum of Rs. _____ (Rs. _____) which I undertake to repay with interest within the period of twenty four months as prescribed in paragraph 11 of the Public Provident Fund Scheme, 1968.

हिन्दी अनुवाद :

2. मैं लोक भविष्य निधि खाता संख्या .....में से रु. ....(रुपये .....) की राशि का ऋण लेना चाहता हूँ जिसे मैं लोक भविष्य निधि योजना, 1968 के पैरा 11 के अनुसार 24 महीनों की अवधि में ब्याज सहित अदा करने का वचन देता हूँ।

3. I..... here by nominate the person(s) mentioned below to whom to the exclusion of all other persons in the event of my death, the amount standing to my credit in the Public Provident Fund Account No. _____ at the time of my death would be payable.

हिन्दी अनुवाद :

3. मैं.....एतद्द्वारा निम्नलिखित व्यक्ति(यों) को नामित करता हूँ जिसे/जिन्हें मेरी मृत्यु हो जाने की स्थिति में, अन्य सभी व्यक्तियों को छोड़कर मेरे लोक भविष्य निधि खाता संख्या ..... में मेरी मृत्यु के समय जमा शेष राशि देय होगी।

4. As the nominee is minor on this date, We appoint Shri/Smt/Km.....(name, address, age) to receive the amount of the deposit on behalf of the nominee in the event of my/our minor's death during the minority of the nominee.

Signature of the depositor

हिन्दी अनुवाद :

–जैसा कि इस तारीख को नाम निर्देशिती अवयस्क है, मैं/हम श्री/श्रीमती/कुमारी.....(नाम, पता, आयु) को मेरी/हमारी अवयस्क की मृत्यु की दशा में नाम निर्देशिती की अवयस्कता

के दौरान नाम निर्देशिती की ओर से जमा राशि, प्राप्त करने के लिए नियुक्त करता हैं/करते हैं हूँ।

जमाकर्ता के हस्ताक्षर

ख. *ग्राहकों से किये गये पत्राचारों का अनुवाद*

Agricultural Finance

Branch.....

Ref. No. .....

Date.....

To,

.....

.....

.....

Dear Sir

Sub. : Agricultural Finance

We invite your attention to the loan granted to you from this branch on ..... We regret to note that through one year has elapsed since, no payment has been effected to the loan account. So also you have not replied to our letters. We once again request you to remit the loan amount together with acrued interest without any delay.

2. If we do not receive any reply/remittance within 20 days of the receipt of this letter we will be constrained to initiate steps for the recovery of the loan.

3. Hope you will do what is needed in the above matter immediately.

Yours faithfully,

(.....)

Branch Manager

हिन्दी अनुवाद :

कृषि वित्त

शाखा.....

संदर्भ सं. .....

दिनांक.....

सेवा में,

.....

.....

.....

प्रिय महोदय,

विषय : कृषि वित्त

इस शाखा द्वारा आपको दिनांक ..... को दिये गये ऋण की ओर हम आपका ध्यान आकर्षित करते हैं। हमें जानकर दुःख है कि तब से एक वर्ष बीत जाने पर भी उक्त ऋण खाते में कोई अदायगी नहीं की गई है। आपने हमारे पत्रों का उत्तर भी नहीं दिया है। हम आपसे पुनः अनुरोध करते हैं कि आप ब्याज सहित ऋण की राशि अविलम्ब भेजने की व्यवस्था करें।

यदि इस पत्र के मिलने के 20 दिन के अंदर हमें आपका कोई उत्तर/राशि प्राप्त नहीं होगी तो हमें बाध्य होकर ऋण की वसूली के लिए कार्रवाई करनी पड़ेगी।

हमें आशा है कि आप मामले में अपेक्षित कार्रवाई करेंगे।

भवदीय,

(.....)

शाखा प्रबन्धक

Loan for the purchase of animals

Branch.....

Ref. No. .....

Date.....

To,

.....

.....

.....

Dear Sir

Sub. : Loan for the purchase of Buffalo

Please refer to your letter dated ..... on the captioned subject. In this connection, we are pleased to inform you that you have been sanctioned a loan of Rs. ..... for the purchase of ..... buffalo/s.

You are requested to call on the undersigned on any working day during office hours for the execution of loan documents.

Yours' faithfully,
(.....)
Manager

हिन्दी अनुवाद :

पशुओं की खरीद के लिए ऋण

शाखा.....

संदर्भ सं. .....

दिनांक.....

सेवा में,

.....

.....

.....

प्रिय महोदय,

विषय : भैंस खरीदने के लिए ऋण

कृपया आप उपर्युक्त विषय पर दिनांक ..... का अपना पत्र देखें। इस सम्बन्ध में हम यह सहर्ष सूचित करते हैं कि ..... भैंस/भैंसे खरीदने के लिए आपको ..... रुपये का ऋण मंजूर किया गया है।

आप कृपया ऋण सम्बन्धी कागजात भरने, हस्ताक्षर करने आदि के लिए किसी भी कार्य–दिवस को कार्यालय–समय में आकर हमसे मिलें।

भवदीय,

(.....)

प्रबन्धक

इस प्रकार हमने विविध प्रकार की बैंकिंग सामग्री देखी। हमने जाना कि बैंकिंग सामग्री के अनुवाद का मूलाधार है : बैंकिंग शब्दावली एवं बैंकिंग प्रक्रिया का ज्ञान । बैंकिंग शब्दावली का सामान्य ज्ञान एवं बैंकिंग प्रक्रिया से परिचय के आधार पर हम बैंकिंग सामग्रियों का सहज–सुबोध अनुवाद कर सकते हैं।

7. बोध प्रश्न

1. 'बैंकिंग' के समकालीन स्वरूप को स्पष्ट कीजिए ?

.....

.....

.....

.....

2. बैंकिंग' सामग्री के विभाजन को स्पष्ट कीजिए ?

.....

.....

.....

.....

3. 'बैंकिंग' शब्द को परिभाषित कीजिए ?

.....

.....

.....

.....

4. निम्नलिखित अंग्रेजी शब्दों का हिन्दी पर्याय लिखिए ?

1- Acid test ratio: .....
2- Hypothecation : .....
3- Invoice : .....
4- Bankruptcy : .....
5- Chest : .....
6- Clearing : .....
7- Credit : .....
8- Dishonoured cheque : .....
9- Attachment : .....
10- Balance of payment : .....
11- Encumbrance : .....
12- Endowment : .....

5. निम्नलिखित वाक्यों का हिन्दी अनुवाद कीजिए ?

क)- I promise to pay the bearer the sum of.....rupees.

.....

.....

ख)- Due on..... and interest ceases from.....

.....

.....

ग)- The interest became due and payble on the date, but it was not paid.

.....

.....

8. सारांश

आज के उपभोक्तावादी और बाजार–संस्कृति के युग में बैंकिंग– प्रणाली एक महत्त्वपूर्ण वित्तव्यवस्था बन गई है। दूसरे शब्दों में, बैंकिंग उद्योग हमारे देश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। वर्तमान में देश की अर्थव्यवस्था बैंकिंग उद्योग पर पूरी तरह निर्भर है।

राष्ट्रीयकरण के उपरान्त भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन तथा राजभाषा अधिनियम, 1963 और उसके अन्तर्गत बनाये गये राजभाषा नियमों के कार्यान्वयन का उत्तरदायित्व बैंकों पर भी आ गया। पिछले पाँच दशकों के दौरान समस्त सरकारी क्षेत्रों के बैंकों में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ाने की ओर कई ठोस कदम उठाये गये। बैंकों में हिन्दी के प्रयोग की शुरुआत के समय से ही इस बात की आवश्यकता महसूस की गई थी कि बैंकिंग क्षेत्र में प्रयुक्त हिन्दी शब्दावली का मानकीकरण किया जाए ताकि उसमें एकरूपता सुनिश्चित की जा सके।

बैंक सामग्री को मुख्यतः दो भागों में बाँटा जा सकता है : 1. बैंकिंग प्रक्रिया से सम्बद्ध सामग्री और 2. ग्राहकों से सम्बद्ध सामग्री। बैंकिंग सामग्री का अनुवाद करते समय सन्दर्भानुसार बैंकिग प्रयुक्तियों का विशेष ध्यान रखना जरूरी है। बैंकिंग सामग्री के अनुवाद का मूलाधार है : बैंकिंग शब्दावली एवं बैंकिंग प्रक्रिया का ज्ञान । बैंकिंग शब्दावली का सामान्य ज्ञान एवं बैंकिंग प्रक्रिया से परिचय के आधार पर हम बैंकिंग सामग्रियों का सहज अनुवाद कर सकते हैं।

9. बोध प्रश्नों के उत्तर

1. देखें भाग 3
2. देखें भाग 6
3. देखें भाग 3
4. 1- साख निर्धारण अनुपात
   2- दृष्टिबंधक, अडमान
   3- बीजक
   4- दिवालियापन
   5- तिजोरी

6- समाशोधन
7- जमा, उधार
8- नकारा गया चैक
9- कुर्की
10- भुगतान संतुलन
11- भार/ऋण–भार
12- धर्मस्व, धर्मादा

5. क) मैं धारक को.....रुपये अदा करने का वचन देता हूँ।

ख) दिनांक.....को देय तथा.....से ब्याज समाप्त ।

ग) ब्याज नियत तिथि पर देय एवं संदेय हो गया, पर उसका संदाय नहीं किया गया।

इकाई–6 : वैज्ञानिक एवं तकनीकी सामग्री का अनुवाद

रूपरेखा

1. उद्देश्य
2. प्रस्तावना
3. विज्ञान : अर्थ एवं प्रभेद
4. वैज्ञानिक एवं तकनीकी क्षेत्र में हिन्दी
5. वैज्ञानिक भाषा एवं तकनीकी शब्दावली
   - 5.1 वैज्ञानिक भाषा
   - 5.2 वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली
6. वैज्ञानिक एवं तकनीकी सामग्री का अनुवाद
7. बोध प्रश्न
8. सारांश
9. बोध प्रश्नों के उत्तर
10. स्व–विकास के लिए कुछ कार्य

1. उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- विज्ञान के अर्थ एवं स्वरूप का सामान्य परिचय पा सकेंगे;
- विज्ञान एवं तकनीकी क्षेत्र में प्रयुक्त हिन्दी के स्वरूप से परिचित होंगे;
- वैज्ञानिक भाषा एवं तकनीकी शब्दावली को समझ सकेंगे;
- वैज्ञानिक एवं तकनीकी सामग्री की अनुवाद–प्रक्रिया एवं उसकी कठिनाइयों से परिचित होंगे;

2. प्रस्तावना

वैज्ञानिक एवं तकनीकी सामग्री की अनुवाद–प्रक्रिया एवं स्वरूप से परिचय कराने की दृष्टि से प्रस्तुत अध्याय 'वैज्ञानिक एवं तकनीकी सामग्री का अनुवाद' में 'विज्ञान' के अर्थ एवं स्वरूप, वैज्ञानिक भाषा का स्वरूप एवं वैज्ञानिक शब्दावली की चर्चा की गई है। इसके साथ ही वैज्ञानिक एवं तकनीकी सामग्री के अनुवाद की कठिनाइयों की चर्चा भी सविस्तार–सोदाहरण की गई है।

3. विज्ञान : अर्थ एवं प्रभेद

'विज्ञान' का सामान्य अर्थ है 'विशिष्ट ज्ञान'; अर्थात् किसी भी विषय का विशेष और व्यवस्थित ज्ञान। इस प्रकार 'विज्ञान' किसी विषय का वह ज्ञान भंडार है जो सुव्यवस्थित अध्ययन, निरीक्षण और अनुभव के द्वारा प्राप्त किया गया हो और जिसके तथ्यों को समायोजित, क्रमबद्ध और वर्गीकृत किया गया हो।

विज्ञान जागरूक एवं प्रशिक्षित मस्तिष्क द्वारा प्रेक्षण एवं प्रयोग की सहायता से भौतिक जगत की प्रकृति को समझने का सतत एवं मुक्त प्रयास है– एक ऐसा प्रयास जिसके फलस्वरूप क्रमबद्ध ज्ञान के भण्डार में निरन्तर वृद्धि हो रही है। इस दिशा में वैज्ञानिक विधि का विशिष्ट योगदान है जो एक चिन्तनशैली, एक दृष्टिकोण, कार्यपद्धतियों का समेकन तथा मान्यताओं का एक ऐसा समुच्चय है जो वैज्ञानिक अनुसंधान में उपयोगी सिद्ध हुआ है और विज्ञान की प्रत्येक शाखा के लिए विशिष्ट है।

यहाँ पर जोर देना जरूरी है कि उस विशिष्ट विषय के व्यवस्थित और वैज्ञानिक विवेचन में विकल्प की गुँजाइश कम ही होती है। विज्ञान किसी क्षेत्र विशेष, संस्कृति एवं सामाजिक परिस्थितियों के कारण टस से मस नहीं होता। इसमें किसी विषय के 'क्या', 'क्यों' और 'कैसे' प्रश्न वैज्ञानिक को गहरे में आन्दोलित करते हैं। गैलेलियो को गिरजाघर में लटकी हुई लैम्प, जेम्सवाट को केतली में से निकलती भाप और न्यूटन को पेड़ से गिरते सेब ने बुरी तरह उद्वेलित किया था। इसके बाद इन वैज्ञानिकों पर हुई प्रक्रिया के परिणाम विश्व के सामने हैं।

बहरहाल, 'विज्ञान' शब्द बहुत ही व्यापक है और इसके कई तरह से वर्गीकरण किया जाता रहा है। सामान्यतः इसके दो भेद किए जाते हैं। एक है 'प्राकृतिक विज्ञान'(Natural Science) और दूसरा 'सामाजिक विज्ञान'(Social Science)। पहले में भौतिकी, रसायनविज्ञान, जीवविज्ञान आदि आते हैं जो प्रकृति पर आधृत हैं। ये सामान्यतः काफी पहले 'विज्ञान' कहे जाते रहे हैं। सामाजिक विज्ञान में इतिहास, अर्थशास्त्र, राजनीति, भाषाविज्ञान आदि वे विषय आते हैं जिन्हें प्रायः कला संकाय में स्थान मिलता रहा है।

4. वैज्ञानिक एवं तकनीकी क्षेत्र में हिन्दी

विश्व में आज सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में नित नये आविष्कार हो रहे हैं। विभिन्न कार्यों को द्रुत गति से करने के लिए तरह–तरह के सॉफ्टवेयर बनाए जा रहे हैं। विकसित देश इन सॉफ्टवेयरों को अपनी–अपनी भाषाओं में ही बना रहे हैं। इससे विश्व में सूचना क्रान्ति का प्रादुर्भाव हुआ है। भारत भी इस क्षेत्र मे पीछे नहीं है। भारतीय वैज्ञानिक भी अपनी प्रतिभा का परिचय समय–समय पर देते रहे हैं। इन वैज्ञानिकों के अथक परिश्रम के फलस्वरूप ही सुपर कंप्यूटर का निर्माण संभव हुआ है। अब अनेक केन्द्रीय कार्यालयों का कंप्यूटरीकरण हो चुका है। इससे आम जनता भी लाभान्वित हुई है। राजभाषा हिन्दी की श्रीवृद्धि के लिए यह आवश्यक है कि कंप्यूटरों पर हिन्दी में भी काम किया जाए, क्योंकि किसी भी देश का प्रौद्योगिकी विकास उसकी भाषा पर निर्भर करता है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि प्रौद्योगिकी, विकास और भाषा अन्योन्याश्रित हैं।

प्रौद्योगिकी का स्वरूप जैसे–जैसे उन्नत होता जाता है, उसके लिए नए–नए पारिभाषिक शब्द भी स्वतः ही निर्मित होते जाते हैं, लेकिन यह तभी संभव होता है जब प्रौद्योगिकी विशेष के लिए उसी देश की भाषा में पारिभाषिक शब्द निर्मित किया गया हो जिस देश में मूल रूप से प्रौद्योगिकी की उत्पत्ति हुई है। दूसरे देशों को अपनी भाषा की प्रकृति के अनुकूल इन पारिभाषिक शब्दों के लिए नए शब्द गढ़ने पड़ते हैं।

स्पष्ट है कि भारत में विज्ञान और प्रौद्योगिकी के प्रस्फुटन और फैलाव से निर्मित परिस्थितियों की अभिव्यक्ति के लिए हिन्दी को सर्वथा नवीनतम रूप में ढालने की सख्त जरूरत महसूस हुई। ऐसा नया रूप जो विज्ञान और प्रौद्योगिकी के गुण–सूत्रों, सिद्धान्तों, नवीनतम प्रयोगों, विधियों तथा भाषिक संरचना को अभिव्यक्त कर सके। आज हमारे पास विभिन्न ज्ञान–शाखाओं के पाँच लाख से अधिक तकनीकी शब्द विकसित किए जा चुके हैं जिनमें से अधिकांश पारिभाषिक शब्द के रूप में उपलब्ध हैं। प्रयोग की दृष्टि से अब ये सभी शब्द कंप्यूटर आधारित राष्ट्रीय शब्दावली बैंक के डाटाबेस में संचित व संसाधित किए जा चुके हैं। यदि हिन्दी के सन्दर्भ में आकलन करें तो एक स्पष्ट निष्कर्ष यह निकलता है कि पर्यायों के चयन या कोडीकरण का अधिकांश काम संपन्न हो चुका है लेकिन उसके व्यापक प्रयोग–प्रसार का सोपान अभी अधूरा है। हिन्दी में विज्ञान लेखन तभी सार्थक होगा जब शब्दावलियों का व्यापक प्रयोग–प्रसार होगा ताकि उन्हें सामाजिक ग्राह्यता एवं

पाठ स्वीकृति मिल सके। समाज द्वारा ग्राह्य तकनीकी शब्दों पर एक नजर डालें तो पता चलेगा कि जो शब्द किसी माध्यम से बार–बार जन सामान्य के समक्ष आते रहे वे शीघ्र ही ग्राह्य हो गये, जैसे : वायुप्रदूषण, पर्यावरण, प्रक्षेपास्त्र, प्रतिभूति, अंतरिक्ष आदि। कहने का तात्पर्य यह है कि शब्द न तो कठिन होते हैं न सरल; शब्द या तो परिचित होते हैं या अपरिचित। फिर भारत जैसे बहुभाषी देश में बहुपर्यायता या एक ही तकनीकी शब्द के लिए एकाधिक पर्यायों का प्रचलन एक सामान्य बात है, जैसे : चुनाव और निर्वाचन, विधि और कानून आदि। ऐसे में छात्रोपयोगी विज्ञान लेखन में तकनीकी पर्यायों के चयन के मानदंड अलग–अलग हो सकते हैं। इसीलिए कई बार यह आवाज उठती है कि भारतीय समाज की भाषिक क्षमता और भारत में विज्ञान लेखन की प्रारम्भिक अवस्था को ध्यान में रखते हुए हमें मानकता के प्रतिमान में कुछ लचीलापन लाना चाहिए और तकनीकीपन की थोड़ी–बहुत कीमत चुकाकर भी हमें किंचित शिथिल लेकिन सुग्राह्य शब्दावली का प्रयोग करना चाहिए।

5. वैज्ञानिक भाषा एवं तकनीकी शब्दावली

भारत में आधुनिक विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का आविर्भाव मूलतः अंग्रेजी भाषा के माध्यम से हुआ है। वैज्ञानिक एवं तकनीकी शिक्षण तथा अनुसंधान की भाषा अंग्रेजी ही रही है। आज भी उच्च अध्ययन तथा अनुसंधानशालाओं और प्रयोगशालाओं की भाषा अंग्रेजी है। संगोष्ठियों और सम्मेलनों में भारतीय वैज्ञानिक अंग्रेजी के माध्यम से ही अपने विचार व्यक्त करते हैं। लगभग सम्पूर्ण वैज्ञानिक अनुसंधान साहित्य अंग्रेजी में प्रकाशित होता है। देश की प्रगति के लिए एक तरफ अंग्रेजी भाषा का प्रयोग किया जा रहा है और दूसरी तरफ भारतीय चेतना व संस्कृति रक्षा के लिए हिन्दी भाषा पर जोर दिया जा रहा है। दोनों बातें परस्पर विरोधी होने के बावजूद दोनों भाषा की स्वीकार्यता या दोनों में से किसी एक को चुनने की बाध्यता हम सभी के लिए विचारणीय प्रश्न है। खैर, हम वैज्ञानिक भाषा और उसकी विशिष्टता की ओर लौटते हैं–

5.1 वैज्ञानिक भाषा

भाषा अभीष्ट विचार की अभिव्यक्ति का माध्यम है। प्रारम्भ में भाषा का प्रयोग सम्भवतः तात्कालिक आवश्यकताओं और इच्छाओं की पूर्ति एवं भावनाओं की अभिव्यक्ति के लिए होता था। कालान्तर में मानव ने अनुभूत विश्व को

शाब्दिक रूप प्रदान करना प्रारम्भ कर दिया और आज वैज्ञानिक एवं तकनीक लेखन में भाषा पूर्णरूपेण इसी आवश्यकता की पूर्ति करती है।

विज्ञान की विशिष्ट भाषा का एक काम यह है कि इसके द्वारा विज्ञान का क्रमबद्ध ज्ञान घनीभूत हो जाता है। विज्ञान की भाषा संकल्पनात्मक होने के कारण अक्सर जटिल होती है। यह भी सच है कि वैज्ञानिक भाषा तथा दैनिक व्यवहार की भाषा के पारस्परिक आदान–प्रदान के कारण वैज्ञानिक शब्दावली की समस्याएँ और भी जटिल हो गयी है। अनेक वैज्ञानिक शब्द यद्यपि सामान्य भाषा से लिए गए हैं किन्तु उनका विशिष्ट वैज्ञानिक महत्त्व है। उदाहरण के लिए 'कार्य' शब्द किसी प्रकार के श्रम का द्योतक है चाहे वह मानसिक हो या शारीरिक, किन्तु भौतिकी में यही शब्द किसी पिंड पर अनुप्रयुक्त बल तथा बल की दिशा में गतिमान पिंड की दूरी के गुणनफल का द्योतक है। स्पष्ट है कि वैज्ञानिक एवं तकनीकी भाषा की अपनी अलग प्रकृति होती है जो निम्नानुसार है :

1. वैज्ञानिक साहित्य की भाषा सुनिश्चित, स्पष्ट और सुबोध होती है।
2. एकार्थता वैज्ञानिक भाषा का अनिवार्य गुण है।
3. विज्ञान वस्तुनिष्ठ होता है न कि व्यक्तिनिष्ठ। इसीलिए विज्ञान की भाषा वस्तुनिष्ठ होती है। दूसरे शब्दों में वैज्ञानिक साहित्य अभिव्यक्ति प्रधान न होकर विषय प्रधान होता है।
4. पारिभाषिक शब्दावली का बहुतायत प्रयोग वैज्ञानिक साहित्य में किया जाता है।
5. अलंकार का प्रयोग, पुनरुक्ति, अनावश्यक विस्तार, वाग्जाल आदि वैज्ञानिक साहित्य की भाषा के लिए दोष स्वीकारे गए हैं।

5.2 वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली

वैज्ञानिक एवं तकनीकी क्षेत्रों में हिन्दी के प्रयोग के बारे में चर्चा के उपरान्त तकनीकी एवं वैज्ञानिक शब्दों की चर्चा जरूरी है। वैज्ञानिक एवं तकनीकी अनुवाद विषय–वस्तु केन्द्रित होने कारण इसका मूल आधार है पारिभाषिक शब्दावली। अतः प्रमुख वैज्ञानिक एवं तकनीकी क्षेत्रों के मूलभूत पारिभाषिक शब्दों और उनके हिन्दी पर्यायों से परिचय जरूरी है –

1. गणित की पारिभाषिक शब्दावली :

Dissolvent	–वियोजक
Density distribution	–घनत्व बंटन
Integer	–पूर्ण संख्या

Angle –कोण
Anharmonic ratio –वज्रानुपात
Negator –निषेधक
Rectangular –आयताकार
Revised simplex technique–संशोधित एकल प्रविधि
Tridiagonal –त्रिविकर्णी
Antimode –प्रतिबहुलक
Varying Probability –परिवर्ती प्रायिकता

2. भौतिकी की पारिभाषिक शब्दावली :

Activator –सक्रिय कारक, सक्रियक
Active area –विकिरण खतरा क्षेत्र
Anti plugging relay –प्लगरोधी रिले
Back swing voltage Pulser–पश्चडोल वोल्टता स्पंदक
Diffuse –विसरित करना या होना
Amplifier –प्रवर्द्धक, एम्पलीफायर
Acoustic –ध्वनिक
Acorn valve –लघु वाल्व
Growler –घुर्घरित्र
Ground object –भू स्थित पिंड
Horn type radiator –शृंग विकिरक

3. वनस्पतिविज्ञान की पारिभाषिक शब्दावली :

Circummutation –शिखाचक्रण
Farinose –चूर्णावृत्त
Aesculus indica –एस्कुलस इंडिका
Aerography –वायु वर्णन
Acromorphoris –वायु रूपान्तरण
Cedar –देवदारू, सीडर
Fimbriate –झालरदार
Galactans –गैलेक्टन्स
Imvic –इमविक
Intrafoliar –अंतःपर्णी

Longiflorious	–दीर्घपुष्पी
Trifoliate	–त्रियर्णक
Undatus	–तरंगी
Unctuousness	–स्निग्धता
Phasmidial gland	–फैस्मिडीय ग्रंथि, पश्चक ग्रंथि
Rupestral	–शैलवासी
Televoltmeter	–टेलीवोल्टमापी

4. प्राणिविज्ञान की पारिभाषिक शब्दावली :

Caverncole	–कंदरावासी
Didelphic	–द्विअंडाशयी
Effete cell	–शीर्ण कोशिका
Epiderm	–वाह्य त्वचा, अधिचर्म
Antigen	–ऐंटीजन, प्रतिजन
Aseptate	–पटहीन
Achenia	–ऑकीनिया
Bambardier Beetle	–प्रेक्षेपी भृंग
Casque	–शिरस्त्राण
Fuchsinophil	–फुक्सिनरागी
Hypocentram	–अधःकशेरुकमूल
Newt	–न्यूट
Scapulars	–अंसपिच्छ

5. रसायनविज्ञान की पारिभाषिक शब्दावली :

Monotone	–एकदिष्ट
Papier mache	–पैपियर माशे, पत्रपेष
Vee joint	–वी संधि
Alkali	–क्षार
Caliper	–कैलिपर
Alginic acid	–ऐल्जिनिक अम्ल
Finite	–शून्येतर
Wallach reaction	–वालाक अभिक्रिया
Scarlet fever	–स्कारलेट ज्वर

6. कंप्यूटरविज्ञान की पारिभाषिक शब्दावली :

Asynchronous communication –अतुल्यकाली संचार
Attached processor: –संलग्न संसाधित्र
Authorised programme –प्राधिकृत क्रमादेश
Alphabetic character –अक्षरात्मक संप्रतीक
Analog data –अनुरूप आँकड़े
Backup file –पूर्तिकर संचिका
Bar code scanner –रेखिका कूट क्रमवीक्षक
Beam store –किरण पुँजी भंडार
Binary operation code –द्विआधारी संक्रिया कूट
Calculater –परिकलित्र
Command –समादेश
Cursor –संकेतक
Data base –आँकड़ा संचय
Disk file –चक्रक संचिका
File –संचिका
Floppy Disk –नाम्यिका, फ्लापी डिस्क
Hardware –यंत्र सामग्री
Keyboard –कुंजीपटल
Programme –क्रमादेश
Application programming–अनुप्रयोग क्रमादेशन
Array processor –सरणी संसाधित्र
Bar code –रेखिका कूट
RAM (Randam Access Memory) –रैम
Terminal –अंतक

7. भूगोल की पारिभाषिक शब्दावली :

Along shore –अनुतटीय
Berg wind –पर्वत पवन
Bergy bit –बर्फ शैलांश
Buccaneer –जल दस्यु
Consolidating lava –संपिडंन लावा

Adumbrated	–आच्छादित
Agean	–इजीयन
Allotment	–नियतन, नियत भू–भाग
Depressed area	–अवनत क्षेत्र
Gore	–त्रिकोणीय भूमि
Homoseismal line	–सहभूकंप रेखा
Plateau	–पठार
Sept	–वंश
Temporate climate	–शीतोष्ण जलवायु
Thermocline	–ताप प्रवणता
Uitlander	–विदेश व्यक्ति
Ravine	–खड्ड
Rugged	–नतोन्नत, असम

8. आयुर्विज्ञान की पारिभाषिक शब्दावली :

Brain sand	–मस्तिष्कीय रेणु
Cauda equina	–मेरुरज्जु पुच्छ
Cerebrospinal fluid	–प्रमस्तिष्क मेरुतरल
Endocrine gland	–अंतःस्रावी ग्रंथि
Pineal gland	–पिनियल ग्रंथि
Vestigeal gland	–अवशेषी ग्रंथि

9. इंजीनियरी की पारिभाषिक शब्दावली :

Aerodynamics	–वायुगतिकी
Biplane	–द्विपंखी विमान
Boundary condition	–परिसीमा प्रतिबंध
Capillary curve	–कोशिका–वक्र
Diffusion velocity	–विसरण वेग
Flow friction	–तरल घर्षण
Pneumatics	–गैस यांत्रिकी

6. वैज्ञानिक एवं तकनीकी सामग्री का अनुवाद

वैज्ञानिक नियम तर्क पर आधारित होते हैं। उसमें कार्य–कारण सम्बन्ध होता है। दूसरे, वैज्ञानिक नियम प्रमाण–साक्ष्य पर आधारित होते हैं। इसलिए विज्ञान के नियम सार्वभौम होते हैं। इसलिए अनूदित भाषा में भी नित्यतावाची क्रियाओं (होता है, है, ता है) का प्रयोग होता है। बहरहाल, वैज्ञानिक अनुवाद में निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना जरूरी है :

1. स्रोत–भाषा की सामग्री को विज्ञान के सन्दर्भ में भलीभाँति समझना।
2. विषय की आधारभूत जानकारी प्राप्त करना।
3. मूल–पाठ में सम्मिलित पारिभाषिक शब्दों का पर्याय चयन करना।
4. वस्तुओं, पदार्थों आदि के सामान्य हिन्दी नाम स्वीकार करना।
5. संक्षिप्तियाँ एवं प्रतीक चिह्नों आदि का प्रयोग मूल–पाठ के अनुसार करना।
6. सन्दर्भ सूची मूल–पाठ के अनुक्रम में देना तथा लक्ष्य–भाषा की प्रकृति के अनुसार ही उन्हें व्यवस्थित करना ।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी से सम्बद्ध विषयों का अनुवाद करते समय पहला सवाल उन विषयों की जानकारी के बारे में उठता है। स्पष्ट कर देना जरूरी है कि अनुवादक के लिए किसी विज्ञान या प्रौद्योगिकी का विशेषज्ञ होना जरूरी नहीं है, जरूरी है 'विषय की सामान्य समझ' अर्थात् वह उस पाठ को समझता है जिसका वह अनुवाद करने जा रहा है। साथ ही प्रयुक्त शब्दावली का जानकार हो। इसके बिना अनुवाद में सन्दर्भगत गलतियाँ रह जाएगीं। जरा निम्नलिखित वाक्यों/वाक्यांशों का 'किया गया हिन्दी अनुवाद' व 'प्रस्तावित अनुवाद' देखिए :

1. मूल : A finite point set has no limit points.
   किया गया अनुवाद : *परिमित समुच्चय में सीमाबिन्दु नहीं होते।*
   प्रस्तावित अनुवाद : *परिमित समुच्चय के सीमाबिन्दु नहीं होते।*

2. मूल : Mammals are hairy animals.
   किया गया अनुवाद : *स्तनधारी केशयुक्त प्राणी हैं।*
   प्रस्तावित अनुवाद : *स्तनधारी रोमयुक्त प्राणी हैं।*

3. मूल : Hence closed neighbourhoods are closed.
   किया गया अनुवाद : *अंतःसंवृत्त प्रतिवेश संवृत्त होते हैं।*
   प्रस्तावित अनुवाद : *अंतःसंवृत्त प्रतिवेश संवृत्त समुच्चय होते हैं।*

4. मूल : ...the Chirping of male crickets, which rub one wing against its neighbour.

किया गया अनुवाद : *नर झींगुरों की चूँ–चूँ जिसे वह अपने पंख को पडौसी झींगुर के साथ रगड़कर उत्पन्न करता है।*

प्रस्तावित अनुवाद : *नर झींगुरों की चूँ–चूँ जिसे वह अपने ही बगल वाले (दूसरी तरफ के) के साथ रगड़कर उत्पन्न करता है।*

5. मूल : It has been shown that if living organism be excluded, there is no fermatation.

किया गया अनुवाद : *यह प्रदर्शित किया जा चुका है कि यदि जीवधारियों को अलग कर दिया जाए तो किण्वन नहीं होता।*

प्रस्तावित अनुवाद : *यह प्रदर्शित किया जा चुका है कि यदि जीवधारियों को प्रविष्ट ही न होने दिया जाए तो किण्वन नहीं होता।*

6. मूल : Methane mixed with 4-12times of its own volume of air explodes when a light is applied to it.

किया गया अनुवाद : *जब मीथेन पर अपने आयतन से 4–12 गुनी वायु को मिश्रित करते प्रकाश पड़ने दिया जाता है तो मिश्रण विस्फोट करता है।*

प्रस्तावित अनुवाद : *जब मीथेन पर अपने आयतन से 4–12 गुनी वायु को मिश्रित करके ज्वाला के सम्पर्क में लाया जाए तो मिश्रण विस्फोट करता है।*

साहित्यानुवाद में दो भाषाओं की जानकारी जरूरी होती है लेकिन वैज्ञानिक एवं तकनीकी सामग्री के अनुवाद में एक और अतिरिक्त बात जरूरी होती है : 'विषय की सामान्य जानकारी या समझ'। विज्ञान–सन्दर्भ को बिना समझे सामान्य अनुवादक 'Rose wood' के लिए 'गुलाब की लकड़ी', 'Woody portions' के लिए 'काष्ठमय अंश', 'Shoe-flower' के लिए 'पादुका पुष्प', 'Rat snake' के लिए 'चूहा सांप' लिख देगा जबकि विषय के प्रति सचेत अनुवादक इनका अनुवाद क्रमशः 'शीशम', 'छिलके', 'गुड़हल' और 'धामन सांप' करेगा। इस क्रम में निम्नलिखित सामग्री का अनुवाद द्रष्टव्य है :

मूल :

The earliest mammals like the earliest birds were creatures driven by competition and pursuit into a life of hardship and adaptation to cold. With them also the scale became quill like, and was developed into a heat-retaining covering, and they too underwent modifications, similar in kind though different in detail to become warm blooded and independent of basking.

किया गया हिन्दी अनुवाद :

आदिम काल की चिड़ियों की भाँति पृथ्वी के सर्वप्रथम स्तनपायी प्राणियों को भी प्रतियोगिता और कठिनाइयों के कारण विवश होकर अपने शरीर को शीतकाल के उपयुक्त बनाना पड़ा। और चिड़ियों की भाँति इनके शल्क भी विकसित होकर ***सेही के काँटों*** *के सदृश शरीर की उष्णता बनाए रखने में वर्म का–सा काम करते थे। तदुपरान्त धूप से शरीर सेंकने की आवश्यकता को दूर करने तथा* ***शरीरस्थ रुधिर उष्ण बनाए रखने*** *के लिए इन स्तनपायी प्राणियों में भी पक्षियों की भाँति परिवर्तन और संशोधन होने आरम्भ हो गए।*

उपर्युक्त अनुवाद को देखकर कहा जा सकता है कि अनुवादक का अंग्रेजी एवं हिन्दी दोनों भाषा पर अधिकार है। परन्तु विषय का सम्यक् ज्ञान न होने के कारण 'quill' के लिए 'सेही के काँटे' एवं 'warm blooded' के लिए 'शरीरस्थ रुधिर उष्ण' शब्द रख दिया जबकि इनके लिए सटीक शब्द क्रमशः 'पिच्छ' और 'समतापी' हैं । उक्त पैरा का सही अनुवाद होगा :

प्रस्तावित अनुवाद :

आदिम काल की चिड़ियों की भाँति पृथ्वी के सर्वप्रथम स्तनपायी प्राणियों को भी प्रतियोगिता और कठिनाइयों के कारण विवश होकर अपने शरीर को शीतकाल के उपयुक्त बनाना पड़ा। और चिड़ियों की भाँति इनके शल्क भी विकसित होकर ***पिच्छ*** *के सदृश शरीर की उष्णता बनाए रखने में वर्म का–सा काम करते थे। तदुपरान्त धूप से शरीर सेंकने की आवश्यकता को दूर करने तथा* ***समतापी*** *बनने के लिए इन स्तनपायी प्राणियों में भी पक्षियों की भाँति परिवर्तन और संशोधन होने आरम्भ हो गए।*

विज्ञान में भाषा अवधारणा–केन्द्रित होती है और प्रैद्योगिकी में वस्तु–केन्द्रित। ऐसे में इंजीनियरी की सामग्री का अनुवाद करते समय मूल शब्दों की बनावट, उसकी कार्य–प्रणाली का स्पष्ट बोध होने के साथ–साथ उनके कार्य–बोधक शब्दों की जानकारी भी आवश्यक है; 'Ionization' के लिए 'आयनीकरण', 'Voltage' के लिए 'वोल्टता', 'Ringstand' के लिए 'वलय स्टैंड', 'Saponifier' के लिए 'साबुनाकारक' आदि के रूप सामान्य और प्राकृतिक भाषाशास्त्रीय क्रिया के अनुसार बनाए गए हैं और ऐसे शब्दरूपों को वैज्ञानिक शब्दावली की आवश्यकताओं तथा सुबोधता, उपयोगिता और संक्षिप्ता का ध्यान रखते हुए व्यवहार में लाना चाहिए। कठिन संधियों का यथा संभव कम से कम प्रयोग करना चाहिए और संयुक्त शब्दों के लिए दो शब्दों के बीच हाइफन लगा देना चाहिए। इससे नई शब्द रचनाओं को सरलता और शीघ्रता से समझने में सहायता मिलगी। अन्तर्राष्ट्रीय शब्दों को यथा संभव उनके प्रचलित अंग्रेजी रूपों में ही अपनाना चाहिए और हिन्दी व अन्य भारतीय भाषाओं की प्रकृति के अनुसार ही उनका लिप्यंतरण करना चाहिए; जैसे हाइड्रोजन, कार्बन, कैलॉरी, ऐम्पियर, वोल्टमीटर, पेट्रोल, इलेक्ट्रन, प्रोटॉन, साइन, कोसाइन, लॉग, टेन्जेन्ट आदि। कभी–कभी कुछ शब्दों के सहज अनुवाद लोक–व्यवहार के आधार पर प्रचलित हो जाते हैं। ऐसे शब्दों के लिए कोशगत पर्याय ढ़ूँढने के बजाय प्रचलित रूपों को स्वीकार कर लेना ही अनुवादक और अनुवाद, दोनों के हित में होता है। जैसे 'Fire Engine' के लिए 'दमकल', 'Positive-Negative Wire' के लिए 'ठंडा व गर्म तार', 'Atom' के लिए 'परमाणु', आदि। ऐसे ही चिकित्सा विज्ञान के अनुवाद के सन्दर्भ में सामान्य बीमारियों के हिन्दी अनुवाद में लोक प्रचलित नामों का उपयोग किया जाना चाहिए; जैसे Mumps– कनपेड़/गलसुआ, Chicken pox– छोटी माता, Small pox– बड़ी माता, Jaundice– पीलिया, Heat stroke– लू लगना आदि। इसी प्रकार हमारे दैनिक जीवन में प्रयुक्त कुछ यंत्रों के अंग्रेजी नाम आज हमारे लिए सामान्य हो गये हैं जैसे कि 'रेफ्रिजरेटर', 'माइक्रो वेव', 'इंडक्सन कुकर', 'टेलीफोन, 'मोबाईल' आदि; ऐसे प्रचलित नामों का अनुवाद करने की जरूरत ही नहीं है। फिर भी प्रौद्योगिकी की पारिभाषिक शब्दावली का अनुवाद करने समय चैकन्ना रहने की खास जरूरत है, क्योंकि ऐसे अनेक शब्द हैं जिनका विज्ञान के विविध क्षेत्रों में अलग–अलग अर्थों में प्रयोग होता है; जैसे कि speed, valocity, force, power, strength, thrust आदि। दूसरी बात यह कि वैज्ञानिक एवं तकनीकी सामग्री के अनुवाद में विषय–वस्तु ही सर्वोपरि है, भाषा और शैली गौण है।

इसका अर्थ यह नहीं कि हमें भाषा के सामान्य व्याकरणिक नियमों को अनदेखा करेंगे। वैज्ञानिक अनुवाद में शैली गौण होने के बावजूद हमें वैज्ञानिक तथ्यों को सहज, स्पष्ट और सम्प्रेषणीय ढंग से प्रस्तुत करना होगा; संकेतकों एवं प्रतीकों का सम्यक् ध्यान रखना होगा, वरना अनुवाद मात्र शब्द जाल बनकर रह जाएगा। इस क्रम में निम्नलिखित वैज्ञानिक सामग्री का हिन्दी अनुवाद द्रष्टव्य है :

मूल :

Life, as we know it on our own Planet, exists in an atmosphere that we call air : about 78% nitrogen, 21% oxygen, 1% other gases, with very small amount of carbon dioxide (Co_2). The atmosphere of Mars is about 96% Co_2 with only 2-3% nitrogen. If any of the ice in the Martian ice-caps is frozen water, the amount is very small indeed, Most of it is Co_2, ice.

हिन्दी अनुवाद :

जैसा कि हम जानते हैं कि हमारे अपने ग्रह पृथ्वी पर जीवन के लिए हवा अनिवार्य है। यह हवा क्या है ? वस्तुतः ऐसा वायुमंडल जिसमें 75 % नाइट्रोजन, 21% ऑक्सीजन, 1% अन्य गैस है, इसमें कार्बन डाई ऑक्साइड भी शामिल है। मंगल ग्रह के वायुमंडल में 96% कार्बन डाई ऑक्साइड है और केवल 2–3% नाइट्रोजन है। अतः मंगल के हिम–आच्छादों में जल के जमने से बनी बर्फ की मात्रा होती भी है तो बहुत ही कम। यहाँ अधिकांश बर्फ Co_2 यानी कार्बन डाई ऑक्साइड होती है।

इस प्रकार हमने देखा कि वैज्ञानिक–तकनीकी साहित्य के अनुवाद की प्रक्रिया सर्जनात्मक साहित्य के अनुवाद की प्रक्रिया से अलग है। वैज्ञानिक साहित्य ज्ञानात्मक होने से इसकी मूल प्रवृत्ति सूचनात्मक होती है। अतः वैज्ञानिक सामग्री के अनुवाद में दो बातें जरूरी है : 1. पारिभाषिक शब्दों का ज्ञान एवं 2. विषय की सामान्य समझ। इस प्रकार थोड़ी सी सावधानी और धैर्य के साथ हम वैज्ञानिक एवं तकनीकी सामग्री का सुन्दर एवं सुग्राह्य अनुवाद कर सकते हैं।

7. बोध प्रश्न

1. 'विज्ञान' शब्द का अर्थविस्तार कीजिए ?

.....

.....

2. विज्ञान एवं तकनीकी क्षेत्र में हिन्दी की स्थिति को स्पष्ट कीजिए ?

.....

.....

.....

3. वैज्ञानिक अनुवाद में किन–किन बातों का ध्यान रखा जाता है ?

.....

.....

.....

.....

4. निम्नलिखित शब्दों का हिन्दी पर्याय लिखिए ?

Integer– .....
Negator– .....
Capillary curve – .....
Diffusion velocity – .....
Cerebrospinal fluid – .....
Endocrine gland – .....
Sept– .....
Temporate climate – .....
Cursor– .....
Data base– .....

5. निम्नलिखित शब्दों का अंग्रेजी पर्याय लिखिए ?

शैलवासी– .....
टेलीवोल्टमापी– .....
त्रियर्णक– .....
अनुप्रयोग क्रमादेशन– .....
सरणी संसाधित्र– .....

मस्तिष्कीय रेणु– .....
मेरुरज्जु पुच्छ– .....
त्रिकोणीय भूमि– .....
सहभूकंप रेखा– .....
शिखाचक्रण– .....
चूर्णावृत्त– .....

8. सारांश

विज्ञान जागरूक एवं प्रशिक्षित मस्तिष्क द्वारा प्रेक्षण एवं प्रयोग की सहायता से भौतिक जगत की प्रकृति को समझने का सतत एवं मुक्त प्रयास है– एक ऐसा प्रयास जिसके फलस्वरूप क्रमबद्ध ज्ञान के भण्डार में निरन्तर वृद्धि हो रही है। विज्ञान किसी क्षेत्र विशेष, संस्कृति एवं सामाजिक परिस्थितियों के कारण टस से मस नहीं होता। विशिष्ट विषय के व्यवस्थित और वैज्ञानिक विवेचन में विकल्प की गुँजाइश कम ही होती है। विज्ञान की विशिष्ट भाषा का एक काम यह है कि इसके द्वारा विज्ञान का क्रमबद्ध ज्ञान घनीभूत हो जाता है। विज्ञान की भाषा संकल्पनात्मक होने के कारण अक्सर जटिल होती है। वैज्ञानिक एवं तकनीकी अनुवाद के मामले में अनुवादक के लिए किसी विज्ञान या प्रौद्योगिकी का विशेषज्ञ होना जरूरी नहीं है, जरूरी है 'विषय की सामान्य समझ' अर्थात् वह उस पाठ को समझता है जिसका वह अनुवाद करने जा रहा है। विज्ञान में भाषा अवधारणा–केन्द्रित होती है और प्रौद्योगिकी में वस्तु–केन्द्रित। ऐसे में इंजीनियरी की सामग्री का अनुवाद करते समय मूल शब्दों की बनावट, उसकी कार्य–प्रणाली का स्पष्ट बोध होने के साथ–साथ उनके कार्य–बोधक शब्दों की जानकारी भी आवश्यक है।

9. बोध प्रश्नों के उत्तर

1. देखें भाग 3
2. देखें भाग 3.3
3. देखें भाग 3.3
4. पूर्ण संख्या
   निषेधक

कोशिका–वक्र
विसरण वेग
प्रमस्तिष्क मेरुतरल
अंतःस्रावी ग्रंथि
वंश
शीतोष्ण जलवायु
संकेतक
आँकड़ा संचय

5. Rupestral
Televoltmeter
Trifoliate
Application programming
Array processor
Brain sand
Cauda equina
Gore
Homoseismal line
Circummutation
Farinose

10. स्व–विकास के लिए कुछ कार्य

1. अनुवाद एक अभ्यासिक कला है। इसके लिए कम–से–कम दो भाषाओं का ज्ञान बहुत जरूरी है। मौजूदा परिस्थिति में भारत जैसे बहुभाषी देश में अपनी मातृभाषा के अलावा हिन्दी और अंग्रेजी का ज्ञान बहुत ही जरूरी है। अतः आप सभी को हिन्दी और अंग्रेजी के अखबार, द्विभाषी पत्र–पत्रिकाएँ आदि पढ़ना चाहिए, इससे आप इन दोनों भाषाओं की प्रकृति, संरचना, शब्द रूप से सहज ही परिचित होंगे।
2. पुस्तकालयों में उपलब्ध महत्त्वपूर्ण पुस्तकों के मूल–पाठ व उनके अनुवाद पहले पढ़िए और फिर दोनों की तुलना कीजिए।
3. विभिन्न अनूदित पुस्तकों को पढ़िए और उनमें दिए गए महत्त्वपूर्ण निर्देशों, नियमों, उदाहरणों पर ध्यान दीजिए।

उपयोगी पुस्तकें :

1. अनुवाद विज्ञान, भोलानाथ तिवारी, किताबघर प्रकाशन, दिल्ली।
2. अनुवाद विज्ञान, सं. डॉ. नगेन्द्र, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।
3. अनुवाद कला, डॉ. एन. ई. विश्वनाथ अय्यर, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली।
4. अनुवाद विज्ञान की भूमिका, कृष्णकुमार गोस्वामी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
5. अनुवाद साधना, डॉ. पूरनचन्द्र टंडन, अभिव्यक्ति प्रकाशन, दिल्ली।
6. अनुवाद भाषाएँ–समस्याएँ, डॉ. एन. ई. विश्वनाथ अय्यर, ज्ञान गंगा, दिल्ली
7. अनुवाद और मशीनी अनुवाद, वृषभप्रसाद जैन, सारांश प्रकाशन, दिल्ली।
8. अनुवाद की समस्याएँ, जी. गोपीनाथन एवं एस. कंदस्वामी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
9. अनुवाद सिद्धान्त एवं प्रयोग, जी. गोपीनाथन, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
10. अनुवाद सिद्धान्त एवं व्यवहार, डॉ. रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव व डॉ. कृष्णकुमार गोस्वामी, आलेख प्रकाशन, दिल्ली।
12. अनुवाद सिद्धान्त की रूपरेखा, डॉ. सुरेश कुमार, वाणी प्रकाशन, दिल्ली।
13. अनुवाद विज्ञान, सं. बालेन्दु शेखर तिवारी, प्रकाशन संस्थान, दिल्ली।
14. अनुवाद : प्रक्रिया एवं प्रयोग, डॉ. छबिल मेहेर, अनन्य प्रकाशन, दिल्ली।
15. बैंकों में अनुवाद प्रविधि, डॉ. सीता कुचितपादम, भारतीय अनुवाद परिषद, दिल्ली।
16. बैंकों में अनुवाद की समस्याएँ, डॉ. भोलानाथ तिवारी एवं डॉ. श्रीनिवास द्विवेदी, शब्दकार, दिल्ली।
17. अनुवाद : प्रक्रिया एवं परिदृश्य, रीतारानी पालीवाल, वाणी प्रकाशन, दिल्ली।
18. अनुवाद की सामाजिक भूमिका, रीतारानी पालीवाल, सचिन प्रकाशन, दिल्ली।
19. वैज्ञानिक साहित्य के अनुवाद की समस्याएँ, डॉ. भोलानाथ तिवारी, शब्दकार, दिल्ली।
20. काव्यानुवाद की समस्याएँ, डॉ. भोलानाथ तिवारी एवं डॉ. महेन्द्र चतुर्वेदी, शब्दकार, दिल्ली।

– Notes –